एक बीनणी दो बीन

(अुपन्यास)

लेखक

श्रीलाल न० जोशी

प्रकाशक

राजस्थानी भाषा साहित्य संगम (अकादमी)

बीकानेर

प्रकाशक :
राजस्थानी भाषा साहित्य संगम (अकादमी)
बीकानेर

मोल 8 30

संस्करण पहला

1973

मुद्रक
अजन्ता प्रिन्टर्स,
जौहरी बाजार, जयपुर

प्रकाशकीय

राजस्थानी गद्य लिखारा मे श्री श्रीलाल न० जोशी री ओळखाण करावणी जरूरी लागै कोनी, कारण न्यारी न्यारी विधावां म उणा री अनेक पोथ्यां छप चूकी है जिणा रो साहित्य ससार मे मोकळो आदर हुयो है ।

प्रस्तुत पोथी एक बीनणी दो बीन–म जोशीजी आंग्ल महाकवि टनीसन री अमर कृति 'ईनक आरडन' री कथा न फलाव देयर राजस्थानी पाठका सारू प्रस्तुत करी है जिणसू मालम पड क मिनख री प्रकृति मे देस काळ री सीवा बाधक बण सकै कोनी । जिको चित्रण आज सू दो सौ बरसा पली रो टनीसन ईनक आरडन मे विदेसी धरती रै मिनखा रो कर्यो है, बो दो सईका बीत्या पछ भी भारत री भोम र मानविया रो सो लाग ।

भरोसो है राजस्थानी पाठक इण न चाव सू पढसी अर आ पोथी राजस्थानी पाठका सू सनेव अर आदर पासी ।

मुरलीधर व्यास
सभापति
राजस्थानी भाषा साहित्य सगम (अकादमी)
बीकानेर

घर विध री

विद्यार्थी जीवण मे अंग्रेज महाकवि लॉड टेनीसन री अमर कृति-ईनक आरडन पढण रो मौको मिल्यो। 'ईनक आरडन' 911 ओळ्यां री एक लाबी कविता है, जिकी टनीसन री सरवस्रेस्ठ रचनावा मे आकीज। इण कविता री सरळता अर इण री रोचक कथा रो म्हारै मायं इसो जादूई असर हुयो कै म्हैं पद्यानुवाद करणो सरू कर दियो अर दो तिहाई भाग रो अनुवाद कर भी लियो। बाकी एक तिहाई सातर अठीन-वठीनै आसगो भी ताक्यो, पण काम पार पड यो कोनी।

फेर विचार आयो क इनक आरडन री कथा नै जे गद्यबद्ध करनै राजस्थानी पढारा गामी लाईजै, तो घणो ठीक रसी। इण निजरियै सू अेक बीनणी दो बीन नाव सु ईनक आरडन रो फनाव राजस्थानी पढारा माग मेलण री चेस्टा करीजी है।

म्हारो भुकाव इण रचना पासी क्यू हुयो, आ लिखण सू पली कवि बाबत राजस्थानी पाठका न टूक में जाणकारी देवणी चाऊ हू जदपी अंग्रेजी पाठका सातर टेनीसन अणजाण्यो कोनी।

6 अगस्त सन 1809 न अॅल्फ्रेड टेनीसन रो जलम लिंकनशायर र एक गाव सॉमसबी में हुयो। 1828 मे महाकवि ट्रिनिटी कालेज कैम्ब्रिज मे भरती हुया जठ वा विश्वविद्यालय र कुलपति सू 'टिम्बकटू' कविता मायं सोन रो तुकमो पायो। 1830 म उणा री कविताबा रो पलो सग्रह छप्यो अर 1832 म दूजो सग्रह, अर दस बरसा पछै तीजो सग्रह। पण उणा री खास रचनावा हाल बाकी ही अर इण खास रचनावां माय सू एक ही "ईनक आरडन" जिकी सन् 1864 में छपी। सन् 1850 मे महाकवि वडसवथ रो सुरगवास हुया उणा री जगां लॉड टेनीसन राजकवि रै पद सू सुसोभित हुया। 6 अक्टूबर 1892 मे लॉड टेनीसन रो सुरगवास हुयो अर वेस्टमिन्स्टर ऐब में महाकवि ब्राउनिंग री समाधी रै सहार इणा न समाधिस्थ कर्‌या।

अंग्रेजी मे एक कबत है—No woman is Chaste—कोई लुगाई सतवती कोनी। जिण देस री इसी मानता है के बठे सगळी लुगायां ग्राचरण-बायरी है, बठ ईनक ग्रारडन कविता म ग्रनी जिसी लुगाई रो चरित्र मिल जिको ग्रापर सत न रखाळण खातर कृत सकल्प है। इण कविता रो सगळो वातावरण धार्मिक भावनावा सू इसो ग्रोतप्रोत है क पाठक न एकाएक विस्वास बधण में कठणाई पड क ग्रो चित्राम ग्रापूण देस रो है या भारत रो। 1864 म छप्योडी इण कविता र सरु मे कवि बताव क ग्रा कथा सौ बरसा पली री है। इण तर ग्राज सू लगभग दो सौ बरस पली रो चित्राम इण म ग्रायोडो है।

कथा री गत पाठका न धीरी लाग सक, पण जे ग्रा बात ध्यान में रव क दो सौ बरसा पली समन्दर र किनार बस्योड एक गावडिय रो चित्राम इण मे कोरयो है तो पाठका री सिकायत ग्रापेई मिट जावली, कारण गावा री जीवण खापी चाल सू नई चाल ग्रर दो सद्या पली जद विमान पगलिया ई करतो हो, सहरी जीवण किसी चाल पकडी ही ?

इण कथा रो नायक ईनक ग्रारडन गाव र एक माभी रो छावडको है ग्रर उण री धरमभीरता रो जिको चित्राम टेनीसन माडयो है, भगवान में उण रो जिको ग्रटूट भरोसो दरसायो है उणन देखता इया लाग क ग्रो ग्रादमी तो भारत र किणी गाव रा हुवणो चाईज। पण चूकि पक्कायत ई ईनक भारत रो वासी कोनी, तो इण सू ग्रा मालम पड क भगवान म भरोसो राखणिया लोग खाली भारत मे ई नई भारत सू बार, ग्रग्रेजा र मुलक म भी बस। इणी तर ग्रधविस्वासा न देखता फेर पढारा र मन म सका उपज सक क इसा ग्रधविस्वास ग्रग्रजा म सभव कोनी, पण पाठक जे म्हारो नई तो टेनीसन रो जरूर भरोसो करै क बठ भी लोग ग्रध विस्वासा रा सिकार रया है। (ग्रर ग्राज भी है।)

इण कथा मे जिको एक दूज खातर उत्सग री भावना है, प्रतिद्वन्द्वी खातर भी जिकी जान लडावण री भावना है बा ता पाठका रो हिरदो जीत्या बिना रैवै कोनी।

ईनक ग्रारडन री ग्रा विसेसतावा ग्रर राजस्थानी मे विदेसी साहित्य कथा न लावण र रयाल सू 'एक बीनणी दो बीन' रो राजस्थानी म जलम हुयो ग्रर ग्रा पोथी ग्रापर हाथ मे ग्राई।

जठ कठ ई ग्रापन पोथी रो कोई थळ दाय ग्राव ग्राप इण मे टेनीसन री पिडताई रो प्रभाव समभोला, पण जे ग्रापन पोथी पढता कठ ई नाक मे सळ

घालण री नौबत आयगी, तो इण मे राजस्थानी लिखार रा ई दोस है, कारण टेनीसन री आ कृति तो आख जगत मे घणो नाव पायोडी है अर टेनीसन, जिण रा अग्रेजी कविया मे सगळा सू घणा पढार है, उण री सागोपाग रचनावा मे आ रचना है।

अत मे हू राजस्थानी भाषा साहित्य सगम (अकादमी), बीकानेर सारू आभार दरसावणो म्हारो फरज समझू जिण री तरफ सू आ पोथी छपर आपरै हाथ म आई है।

समाप्ति सू पली श्रद्धेय गुरूजी स्व० शिव काळी सरकार रो स्मरण जरूर करणो चाऊ जिणा र श्रीचरणा मे बठबठ मनै इण ग्र थ रै अध्ययन रो मौको मिल्यो अर आज हू इण न विस्तृत रूप मे राजस्थानी पाठका आगै राख सक्यो।

श्रीलाल न० जोशी



अनुक्रम

आदरणीय गुरूजी

स्व० शिवकाळी सरकार

सू पायोडी

महाकवि टेनीसन री चीज

उणा नै ई भेट

श्रीलाल न० जोशी

एक बीनणी दो बीन



टावरा री रमत

"ईनक, तन सरम आवणी चाईज ।"

"काई बात री ?"

"काई बात री ? याद कर, अवार ई भूलग्यो ?"

"मन याद करण री जरूरत कोनी । तू अठो-अठो यात करवा कर ।'

"जद आपा अनी साथ पैनपोत इण गुफा म आया ता आ त रो मैं अेक दिन तू बीन वणमी, अर अेक दिन हू ।" कयर फिलिप आपर डाव हाथ सू ईनक रो जीवणो खांधो हिलायो ।

"हाथ लगावण रो काम कोनी, मू ड सू बात कर ।" कयर ईनक अनी न आपर और भी नैड़ी सिरकाय ली ।

"अरे ईनक, अकडाई आछी कोनी । जे ,घणो अकडगो, ता हाथ काई, थार जूता पडसी ।" कैयर फिलिप ईनक र सामो भाक्यो क वा जूता री घमकी सू डरियोक नई ।

ईनक अनी रै गळबासडी घाल्या ऊठो रया अर बी फिलिप न उथळो नई दियो । ईनक री लापरवाई सू फिलिप र काळजै म लाय लागती ही । बी आप रो जूतो उतार्‌यो अर हाथ मे लेयर ऊचो कर्‌यो ।

अनी रो मू डो उतरग्यो । ईनक बोल्यो "अनी, तू डर ना । बकण दे फिलिप नैं ।"

"ईनक, तू समाळर को बोल नी ? जे अेक चिपगो, तो तीन दिन पाणी को मागसी नी ।" कयर फिलिप आपरी छाती न फूलायर तकडो दीसण री कोसीस करी ।

"जूत री चेप थार बाप रै, बो थारा जूता खासी । हू तो अेक री इक्कीस पाछी देपू । म्हार चेपणियो म्हैं धरती माथ राम्यो ई कोनी । कयर ईनक थारी निजर सू फिलिप सामा भाक्यो, फेर पाछो चर री मुद्रा पलटर अनी सामन मुळकण लागग्यो ।

'अरे कमाल रा पूत, म्हार बाप रा नाव लेव तू । म्हारो बाप वळचक्की रो मालक, हजारू रुपिया खरच सावै तू अेक बापड माभी रो जायो । थारी म्हारी हैसियत म अकास पताळ रो आतरो । थार माथै दया साव गू थार साग रमू हू । जे तू नालायकी कर, तो काल सू तू अठै मत आए । अनी म्हारी बीनणी है । म्हे दोनू रमसा । नीच कठ ई रो ।"

बाप री निन्दा सुण्या ईनक लिलाड मे सळ घाल्या, फुरण्यां फूलाई, अर अांी सू थोडो अळगो सिरकयो । ईनक रा बरण फुरता देयर फिलिप री गरमी उतरण लागगी । बी जूत आळ हाथ न हेटो कर लियो, पण आप रो डर लुकावण खातर कयो—'कमीण रो जायो ।

इनक बाल्यो —' कमीण थारो बाप ! वो कळचक्की सू दिन रात भायो फाड जिवा । तालण म खोटा तोल, अर आट सू धोळा हुयोडो रात दिन भूत हुव ज्यू रव । अबक ज म्हारै मरयाड बाप रो नाव लियो, तो म्हारो मुक्को थार पुटपडा सू बाता करलो ।"

'अरे नालायक' म्हैं जूतो हेटो कर लियो, जद तू मुक्का दगाळण लागग्यो ? ढकणी म नाक डुबोयर मर तू ईनकडा ।' कयर फिलिप आगो पावडा लार सिरकग्या पण ईनक न ठा नई धाली । कारण फिलिप जाणतो कै ईनक सबळो हो ।

फिलिप री बात रो उथळो देवतो ईनक बाल्यो, "स्याळ री मौत आव जद वो गाव म जाया कर । तन कुमत सूभी है, तू म्हार सू बाथडो कर । तू मन 'ईनकडो' कव । तन ठा कोनी म्हारा नाव 'ईनक आरडन है । तू है फिलिपियो ।'

"अरे माभी रा छोरा, थारी मौत आयगी । म्हारो नाव फिलिप रे', अर तू मन 'फिलिपियो' कव । आज तई इसे हठार नाव मन कण ई को बतळायो नी । जे अबक 'फिलिपियो' कयो, ता पछ देख मजा ।" कयर फिलिप आपरो जूतो फर हाथ मे ऊचो उठायो ।

ईनक भी आपरो पग सभाळयो, पण अनाथ र पग म पगरखी कठ ? बो आपरी गरीबी माय लजखाणो पडर रयग्यो ।

'' ईनक री गरीबी रो फिलिप फायदो उठायो— पग माय सू जती काढण लाग्यो है । थार बाप ही कदई जूती परी हो ? '

ईनक र रीस आयगी । वो अरी र पसवाड सू उठयो, अर फिलिप र कमीज री कालर भाली ।

फिलिप बोल्यो—"हा, हा, फाडे कमीज । पर थारी ठा पडसी । म्हार बापूजी तन सू थारी लुगदी नई बणवाऊ, तो म्हारो नाव फिलिप र कोनी ।"

फिलिप ग्रा थारी धमकी दखाठी ही, मन मे तो वो जाणता हो क ग्र बाता वापूजी ग्राग कवण री कोनी। ईनक न भी ठा ही क सिकायत बापूजी तई पुग कोनी। पण फर भी वी कमीज फाडनो ठीक नई समझ्यो, कारण इण म सिकायत नइ करण पर भी जाच पडताल हुया भेद खुलण री सभावना लुकयोडी ही। इण कारण फिलिप री कालर छोडर ईनक वीरा दानू खाधा मचकाया— "नालायक, फर तू म्हार बाप रा नाव नेव।"

फिलिप सामो हाथ नइ उठाया—"ग्रोर मचका म्हारा खाधा। करल, थार जच ज्यू करल। पली ग्रनी न पूछ, क बा थारी बीनणी है क म्हारी। माडाणी धणी वण।" कवत कवते फिलिप र सुर मे कातरता ग्रायगी ग्रर नणा म नमी। पण वी ग्राग्या काठी फाडी ग्रर चर न बिकराळ वणायर कातरता ग्रर नमी नै लुकावण री कोसीस करी।

फिलिप री इण दसा माथै ग्रनी रा हिया पसीजग्यो। दाना न ग्रामा सामा ग्रमा दखर ग्रनी उठी। वा बोली—'ग्रर, थ म्हार खातर लडा? ईनक, म्हार खातर ना लड, फिलिप, म्हार खातर ना लड। थ दोनू स्याणा हो। हू थारी दाना री बीनणी हू।" इया कयर ग्रनी दाना र खाधा माथ ग्रापरा बाजू मेल दिया, ग्रर दोना र चरा माथै सू रीस रवाना हुयगी ग्रर वा ग्रापस म ग्रेक बीज रो वुक्को लिया।

ईनक बोल्यो— फिलिप, ग्राज तो ग्रनी म्हारा बीनणी है, काल थारी वणसी।"

फिलिप इत्त म राजी हुयर बोल्यो—'मजूर है।" पण फर वार चर रा भाव पलटग्या—"देख ईनक, काल फर तू काल माथै नई सिरकाय देव। जद ग्रनी ग्रापा री दाना री है ज्यू क ग्रा ग्रापर मूड सू स्वीकार, फर ग्रकला धणियाप लगावणो खुदगरजी है।"

"थारी वान साळ ग्राना ठीक है। हू चाऊ क ग्रापा न थारी ग्रारी बीन वणानो चाईज, पण जद ग्रनी री मोवणी मूरत देखू तो म्हारो मन लोभ म पड जाव।" कयर ईनक ग्रनी रो हाथ भालतो बोल्यो— ग्रनी, रसोई झटपट वणा, मन काम जावणो है। ग्रनी बोली, 'ग्राज तो थे दोनू ग्रापस म राड मचावण लागग्या, साग सब्जी तो काईलाया कानी, माड म बिस्कुट पड या है ग्रर काल री डबलरोटी है जिकी जिना मागण खावणी पडसी। घर मे चीज-वस्त निसावण रो ता नांव ई लेव कोनी ग्रर ग्रापस म माथा फोड।" ग्रनी कूडेई कूडेई पुरसर दोना र ग्रागे प्लेटा मल दी। ईनक जीमण लागग्यो, पण फिलिप हाल गुममुम हो। ग्रनी बोली— फिलिप तू जीमै कोनी? जीम फिलिप, म्हार हाथ री पुरस्योडी रसोई तन भावै कोनी?"

फिलिप चुप ।

"ठीक है, ना जीम । लडाई तो थारै सू ईनक करी ही, म्हार सू रीसाणो क्यू हुयो ?" क्यर अनी फिलिप री ठोडी झाली, अर बीर दरद भरया नरा र सामी भाकी ।

ईनक बोल्यो—"भाई फिलिप, तन थारी भाभी जीमाव, अर तू जीमै कोनी !"

जद फिलिप बोल्यो कानी तो अनी कयो—"ल आपा दोनू साग जीमा । बाल जोमसीक नई ? जे तू नई जीमसी, तो हू भी जीमू कोनी । मन भूलो राखणी चाव तो ना जीम ।"

अनी र सत्याग्रह आग फिलिप ढळग्यो, अर वो अनी सागै जीमण लागग्यो । मन मे राजी भी हुयो कै अनी आज बीनणी ईनक री हुई तो काई हुयो बीर साग तो जीमी कोनी । ईनक माभी रो छोरो है बीर साग जीमण म अनी न पञ्चायत सूग आवती हुवली । हू मालदार म्हारो बाप कळचक्की रो मालक ।

पण फिलिप पाछो विचार करयो क अ बाता तो म्है खाली मन न धावस दवण खातर करी है । असली बात तो आ है क म्हारो रूप, म्हारो कुळ, म्हारा गाभा, म्हारा पीसा कोइ अठ आडा आव कोनी । ईनक र पगा म पगरखी कोनी, पूरिया बोदा-पुराणा, रवण खातर घर रो टापरियो कोनी, न मा न कोई बाप, पण फेर भी म्हारो बारी कदेई-सीक आव अर ओ अेकलो सात सात दिना तई बीन वण, अर हू ई र मू ड सामो भाकू । ई रो कारण ओ है क ईनक सबळो है, अर हू निमळो हू । हू भी जे ईनक दई डील मे लू ठो हुवतो, तो किसो ईनक न टैडा अडण दवतो । इण लारल विचार रै सागै ई फिलिप री रीस उतरगी ।

समन्दर र कनार अेक छोटा सोक बन्दरगाह, जिण रै पसवाडै अेक छोटो सोक गाव । उणी गाव रा अ तीनू टाबर आज सू सकडू बरसा पलै समदर र कनार रमण न आवता । छोळा न उठती आवती अर बिलायीजती देखन किलकारया मारता । आली माटी रा घर घालिया बणावता जिका छोळ साग लोप हुजावता । ब घरे जावती बगत भी नित रा घर घालिया बणायर जावता पण दूज दिन पाछा आवता जित नाव निसाण ई लाधतो कोनी ।

समदर र पसवाड अेक साकडी गुफा म अ तीनू टाबर बीन बीनणी बण्या करता अर पूरो घरबार माडर बात कर ज्यू करता ।

इण तर बीन बीनणी बणता केई बरस बीतग्या । बीनणी अेक, अर बीन दो । कदई बारा बारी सू बिना गडबड काम चालतो, ता कदेई हाथा पाई री नौबत आय जावतो अर कई बरस बातग्या ।

आगर टाबरपण रो जाभरा बीतग्यो, अर जवानी र सूरज आपरी लाली फाटी ।

जवानी रो सूरज

वाळपण रो जाभरको खतम हुवण लाग्यो, अर जवानी र सूरज आपरी पली किरण काढी। छोटा टावरिया समभरणा हुवण लागग्या, अर वाळपण रा खेल भा छाट दिया। जिण अनी सू फिलिप अर ईनक नित हमेस मिलता, उण सू अब कदम काळ मिलणो हुवै। टाबरा री दुनिया न्यारी है। वानै सगळी वाता री छूट है, पण वडा हुया सू वा छूट लारै छूट जाव, अर वारै अेक अेरू पावड माथ निगराणी अर पौरा लागण लाग जाव। इणी कारण जद वाळपण सू नीसर नै टावर वय सधि मे हुव, ना तो टावर रवै अर ना पूरा जवान हुव तो व दिनडा दोरा कट। अब ना तो टावरपण आळो लाड माईत राखै, ना खेल कूद री इत्ती छूट देव ना मिलण भिटण री पैली जित्ती आजादी रव। दूज कानी, हरेक वात म टाकणा, सक करणो, अर काम भोळावणो, ओ जाण माईत काई नवो घघो सीखग्या हुव ज्यू लखाव।

ईनक आरडन अर फिलिप रे गुफा री रमत रा दिन भूल्या कोनी, अर वा दोना आपर मन म अेक वात ठाणी–अनी स ब्याव करणो है। पण अब आ वात किया पार पड ? उण गुलाबी भोर रै साग अनी सू ब्याव दोना न असभव लागण लागग्या अर गुफा रा दिन जाण अेक सपनो हो, सपनो।

जद कदेई अनी साग-सब्जी री दुकान माथ जावती, तो वा साग लिया पछै भी थोडी ताळ फालतू ई ऊभी रैवती जे कदास ईनक अथवा फिलिप मिल जाव ता। अर वा माय सू कोई कदेई सीक मिल भी जावतो। जद फिलिप मिलता, तो अनी मुज माय सू काढती उण सू पलो ई बो साग रा दाम चूक्त कर देवतो। आछी रसाळ आपरी तरफ सू लेयर अनी री थेली अथवा छवडी या भाळी में घाल दवतो। कदई कदेई अनी र डील रो स्पश भी हुजावतो, वानै इण स्पश रो सुख अलौकिक लागतो। टावरपणै मे इसो स्पश घणो ई मिल्या पण उण वगत इण री पूरी कीमत नई आकी।

साग री दुकानदारण अेक बूढी माजी ही। वा आपरी तरफ सू फिलिप अर अनी रै बिना कया, कीमती रसाळ ताल देवती, अर अनी र पाळना थका फिलिप

उण माजी नैं पीसा पकडाय देवतो। माजी दोना र सामी भाक्ती—फिलिप अनी न कित्ती चाव, कित्ती कदर कर! अर इण रैं साग माजी न आपरा व दिन याद आय जावता जद उण री भी इण तर, नईं, इण सूं ईं बत्ती कदर हुया करती, अर बा आख उठायर केई न सावळ देखण री किरपा ईं नईं करती। पण आज? मोस्या गया आज कुण पूछ, अर बा साग सब्जी बेचर आप रो पट पाळ।

फिलिप रा बाप अब बूढो हुयग्यो, अर बी कळचक्की रा धधा फिलिप न सूंप दियो। फिलिप जिस मौजी जीव न कळचक्की म मून बण्योडो रवणो ना तो कबूल हो अर ना आछो लागतो, पण रुजगार चालू ता राखणो ईं पड, भलेई काम दाय आवो चाव ना आवो।

सरू सरू म फिलिप नैं आ धधा माकळा अखर्‍या, पण अेकाअेक इण म भी रस रो सचार हुयग्या। अनी री मा मादी पडगी, अर कळचक्की म पीसणो दवण रो काम अब अनी र पाती आयो। फिलिप री चक्की म पीपा लेयर जावते अेक बार तो अनी न लाज आई, पण काई करती, उण र सिवाय नड नडास म कोई दूजो चक्की भी तो ही कानी।

सिझ्या री टम। अनी पीपो लेयर आईं। अनी सरमाईं, माथ ऊपर पीप र कारण, फिलिप सरमायो, आट सूं भूत हुयोडा हुवण र कारण। पण खर, फिलिप भट भागर अनी रो पीपो उतरायो अर बो अनी री हाफ्नी छाती सामो रस लीन हुयर देखतो रयो।

"पींपो तोल" अनी बोली।

'तोलणो काई है? आटो पीस्याडो त्यार पड यो है। गऊ ऊ भाय दे, अर आट सूं थारो पीपो भरल।' कयर फिलिप बी न इस्टूल माथ बठण रो इसारो कर्‍यो—"इत्ती काइ उतावळ है, हाल तो सास इ फूल्याडो है।

"आ बात तो ठीक है।' इया कयर अनी इस्टूल माथ बठण लागी, अर फिलिप भट इस्टूल न आपर हाथ सूं पूछर आट री त साफ करी।

गुलाबी बाळपण री बाता न चीतार न दाना रा चरा इण तर उतरग्या जाण कोईं जिनस गमगी हुव। बीच बीच म जद दूजा ग्रायक आवता ता फिलिप बान भट निपटायर पाछा भेजण री चेस्टा करतो, पण ग्रायक भी तो इसान हा अर इसाना री वारता प्रम वारता, मे वान रिलचस्पी ही। फिलिप-अनी म, जवान हुया पछ जनता म, प्रम प्रकासण रो कोईं विसेस अवसर नइ आयो, पण लकाफो देखर मजमून मापणिया लोगा सूं इत्ती बात भी छानी किया रवती! इण कारण आटो लवण नैं अथवा गऊ देवण न आवण आळा लोग फिलिप र काढण पर भी,

आपरी ढीठाई रैं पाण, श्रेत दो तिट वेसी ठर जावता, अर दोना नैं तिरछी निजरा देखता, जिका बान खारा जर लागता ।

थोडी ताळ मे अनी ऊभी हुयगी, अर बी गवा र बराबर आपर पीप मे आटो भर लियो । फिलिप क्यो—"अनी, तू हाल ई विती भोळी है, जित्ती टाबर थकी ही गवा र बराबर आट री ऊचाई राग्या सू तोल मे कम पड । पीपो वाठो भर ।"

अनी भर लियो । फिलिप सेर सवा सेर आटो ऊपर सू घालत पीपो ठसाठस, खू द खू दर भर दिया ।

अनी बोली—"फिलिप आटो वेसी है । इया थारी चक्की कित्ताक दिन चालसी ? घर म घाटो साया किया पार पडसी ?"

फिलिप काई क्वण लाग्या, का कोई पीपो लेयर आयग्यो । झट पीपो तोलर फिलिप बीन रवान करया । फर कयो—'अनी ! थार पीप म जे पीव भर आटो वेमी भी आय जाव, तो इत्त मे म्हारी हथाळ्या टिक कोनी ! जे साची पूछ तो मन आज इत्ती खुसी हुई है क म्हारो काळजो नव-नव ताळ कूद है । अर देख अनी, म्हारी बात सुण, आग सारू भी आटो पीसावणो हुवैं तो तू ई आया कर ।"

अनी बोली कोनी ।

'क्यू सुणीज, अनी ?"

'अरे सुणीजैं बाबा, सुणीज । ल बोल, पीसा कित्ता हुया ?"

'पीसा ? काय रा ?"

"पीसाइ रा ।"

"काई पीसाई रा ?"

"म्हारा गऊ ।"

"थारा गऊ तो हाल अणपीसिया ई पड्या है । मुफ्त रा पीसा किया लेऊ, बोल अनी ।" क्यर फिलिप प्रेम री निजर स अनी सामो भाक्यो ।

अनी पीपो ऊचण लागी । फिलिप क्यो—"अनी, रात पडगी है, अेकली क्ठ जासी ? ल, चाल, हू पीपा पू चाय दू ।'

'नई फिलिप, तन फोडा को घालू नी ।" क्यर अनी पीपो आपेई ऊच लियो, कारण रात री वेळा हुवता थका भी बीन फिलिप र साथ आपरी गळी म जावण विच्च अेकलो जावणो वेहतर लाग्यो । गळी रा लोग इसा निमाणा है क व सचळा रव ई कोनी । बिना बात ई ब बाता बणावता रव, जिको बात हुयां पछ ता पूछणो ई काई ? आगळी टेकण जित्ती जगा लाध्या पछ तो व पग पसारता माळ को लगाव नी ।

फिलिप देख्यो—सायद अनी ऊपरन मन सू नकारा करती हुवली पण जद अनी साफ नकारो कर दियो, तो फिलिप र जीव रो सगळो हुलास कपूर बणग्यो, अर वो फेर, आपरी चक्की री डवयोडी वारी खोलर बारै विचाळ बठग्या, अर जित्तै तई अनी दीसती रई, बीन देखतो रयो।

जद गुफा मे घर बसावता तो ईनक हिय री अकडाई सू धीगाण बीन बणार बठ जावतो, पण अब अनी र घर पन कर निकळती वेळा भी विचार आव क लोग काई समझसी। पण ईनक र मन म अनी खातर प्रेम रो प्रवाह इत्तो तकडो हो, क वो अपण आपन काबू म नई राख सक्यो, अर अक दिन जद अनी जीम-जूठर घर आग तावडो खावती ही, ईनक बठ जाय पूग्यो। अनी माय सू पीढो खेंच्यो अर ईनक न बठण खातर कयो। घणा दिना सू मिल्यो हो इण कारण ईनक न सस हो क अनी रख मिला-सीक नई, पण अनी कयो— अर ईनक तू तो दीस ई कोनी! कठई परदेस रवण लागग्योक अठ ई है। जबरो निरमोई हुयो।"

अनी री अपणायत-भरी बात सू ईनक घणो राजी हुयो। बोल्यो—'अनी परदेस तो को गयो नी, पण मन मे सको आयग्या।"

अनी री मा रसोई रा बासण साफ करती ही। वीं पूछ्यो—"अनी, कुण है?"

अनी कयो—"मा, तू जाण कोनी। ई रो नाव ईनक है, म्हे टाबरपण म समदर र कनार घणा ई भेळ रम्योडा हा। अब बडो हुयग्या इण सू अठ आवतो अ' सक, अर समदर-कनार हू जाऊ कोनी।'

मा बोली—"ईनक सक री काई बात है बटा, आया कर अठ।'

फेर मा माय जायर गाभा धोवण लागगी। आवाज आई — 'अरे मोगरी कठ गई बेटी? बाळटी म थोडो पाणी तो घाल।"

अनी बाळटी भरन पाछी आयगी अर ईनक सू बोली—"आ ईनक, आपा तावड मे बारै बैठर दो मिट बाता करा। कित्ता मइना सू देख्या है आज जाण बरसा रा बरस बतीत हुयग्या हुव ज्यू लखाव।"

ईनक कैयो—"तू बार चाल, हू आऊ" अर वा अनी री मा रै हाथ माय सू लेयर आप कपडा धोवण लागग्यो। माजी घणा पाल्यो पण ईनक ध्यान नई दियो। दस-पन्द्र मिट मे सगळा गाभा धो धावायार तणी माथ सुकाय दिया।

मा बोली—'ईनक थार हाथ मे तो फुरती घणी। म्हें पचास बरस, लेय लिया, पण थार जिसो चणक मणक टाबर आज तई देख्यो कोनी। तू मन घणो आछो लाग। अठ आवण म सकण रो काम कोनी। थार जच जद ई मायजाया कर।'

ईनक वार गयो जित्त तो अनी दस हेला मार दिया। मा र मूडै सू ईनक री खुलर बडाई सुएर अनी र हिरद री कळी कळी विगसगी। वी ईनक वास्तै चाय वणाई अर सामन राखती अनी वोली—'ले चाय पी। (फर धीर सीक) टाबरपण मे तो तन कूडेई-कूडेई चाय पावती, पण आज साचेइ पाऊ।'

मा आपर प्याल मे मस्त ही, अर अनी री गुपताऊ बात री बीन ठा नई पड़ी।

जदपी अनी ईनक रै हिरद मे रात दिन बसती पण वो माझी रो बेटा सगळी वाता सू दीन हीन हो। जे कदास भाग जोर देव, अर अनी जिसी रुपाळी छोरी ईनक सू ब्याव रो हकारो भर लेव, तो कम सू कम घर रो घर तो चाईज छोटो मोटो, कोमो भू डो, आळसो तो हुवणो चाइज। घर विना घरआळी न राख ई कठ? भाड रो घर जिको भाडे रो। पारको सो पारको। पारक मौल सू आपरी भूपडी ई चोखी।

अनी रै प्यार सू प्रेरणा लेयन ईनक अेक वौपारी रै जाज माथ काम करण लागग्यो। अेक गवार छोरो, पण आपरी दिपटो मे इत्तो सावधान क साल भर नाकरी करी जिक मे कदेई अेक मिट भी मौडो पूगण रो काम कोनी। ना कदेई हाथ माथ हाथ धर्‌या बठो रया। पण फेर भी जित्ता पीमा बीरा दूजा सगळिया कमावता, जिका क दिन भर म घटा रो घटा काम करता, वित्ता ई पीसा ईनक न मिलता। साल भर मे फालतू री अेक काडी भी खरची कोनी, अर ईनक आपरी अेक धरू नाव खरीद ली।

ईनक मजरी पूरी सूरी लेवतो, पण दूसर खेवटिया ज्यू बो कम पीसा क्यर लारै सू भगडो नइ करतो, इण कारण ईनक री पठ चोखी जमगी अर बेधडक हुयन लोग उणरी नाव माथ टूकता। इणर सिवाय ईनक री काम कुसळता भी सगळै विख्यात हुयगी। समदर चाव आभो घूवगी छोळा भरतो हुव, पण ईनक रो काळजो तिल भर भी नई हिल। वो आपरो काम निडर हुयन करतो रव। तीन मौका तो इसा हुया क सागर न आपर इण हिमताळू वट माथ रीस आयगी, अर ईनक सायद ठेट समदर र पींद पूगग्यो हुवला। पण इनक घबरायो कोनी, अर फर छाळा साग रमत करण लागग्यो। इण जळ परीक्षा सू ईनक री काम कुसळता मे जाण सवा सवा लाख रा तीन मोती जडीजग्या, अर लोगा न पक्को भरोसो हुयग्यो क ईनक री नाव मे जान माल रो खतरो कोनी।

आपरी नाव मे ईनक मछल्या पकडण सारू जाळ, जेवडो, काटो अर छबडो तथा थोडो ओसण्योडो आटो भी राखतो। मौको देख-देखर आट री गोळी समदर मे फैंकतो जावतो अर इण तर दिन भर मे केई छबड्या भर लेवतो।

अेक साधारण छोरो, जिको बाळपण मे ई, बाप मरण कारण अनाथ हुयग्यो हो, आपरी मनत अर ईमानदारी र परताप सगळ ओळखीजण लागग्यो। अळग अळग तई बो चक्कर काढतो माल पूचावतो अर मछल्या बेचतो। अेक वार जिको सकस ईनक रो ग्रायक हुयग्यो, बो दूज आदमी कन ढूकण रो नाव नई लेवतो, इसी ईनक री सादगी ही।

पण समदर मे पग घर्या पली, जळ देवता न धोक देयर ईनक आपरी नाव खोलतो। समदर माय पूगण आळो सगळा सू पलो सेवटियो ईनक ई हुया करतो। सूरज ऊग्या पली घर सू नीसरयोडो ईनक सूरज विसूज्या पाछो बावडतो, अर आपरी दिन भर री सफळ जात्रा अर कमाई कारण वरुण देवता न फेर धोक देवतो।

इण तर इक्कीस बरस पूरा करया पली ई ईनक र जीवण री अेक साध पूरीजगी—अनी खातर घर!

साकडी गळी, जिकी कळचक्की कानी चढती ही, बीर आघीट ईनक आपरो छोटोसोक, साफ सुथरो घर चिणायो। जद चिणाई सम्पूरण हुयगी, जोड्या, खूटया लागगी, तो सोवण र कमर म अेक पिलग लायर विछायो अर सजायो। रसोई खातर नवा बासण बिसाया अर फेर अनी र घरे गयो।

'अरे ईनक रीसाणो हुयग्यो काई? कदेई आवण रो ई काम कोनी?" ईनक न देखते ई बारण सू बार आयर अनी बोली।

रसोई माय सू अनी री मा भी बार आई। कयो—"अनी देव जिको ओळभो हू भी देऊ।'

अनी री मा ओळभो दियो जित अनी पसवाडल कमर रो बारणो खोल दियो अर माचो ढाळ दियो।

ईनक र मूड माथ चमक, होट खुल नई, अणदीठ रूप मे हिल, पण फेर भी मालम पड क ईनक काई कवणो चाव, पण बीसू कईज कोनी।

अनी ईनक रो हाथ झालर कया 'अठ तो सरी, इत्ता दिना सू तो आयो है अर हाल ऊभो रो ऊभो ई है। क्यू ऊभा पगा पाछो जावणो है काई?"

ईनक बठग्यो।

अनी माय गई अर दो कप चाय न तीन प्याला म घालर तीना खातर लिआई।

'अठ आऊ जग म्हारो जीव इसो सोरो हुव क काई बताऊ।' कयर ईनक अनी र ढुळत रूप हेट बूक माडदी।

हाथ म उठायोडो कप पसवाडली तिपाई मार्थ मेलतो ग्रनी बोलो—"झूठ, सरासर झूठ। मठ ग्राव जद तू इया समभ्रै क थारा हीरा पन्ना कोई तोड लेसी। कबूतर जाळ सू डर ज्यू तू मठै ग्रावतो डर।"

ग्रनी री मा बोली, "ग्ररे ईनक, बता तो सरी बटा, इत्ता दिन ग्रायो क्यू कोनी लाडी?"

"ग्रावण री तो सदई सोचू। ग्रनी सू मिलण री ग्रर थार दरसण री लालसा तो हरदम रव"

"फेर कूड बोल, फेर कूड! ग्ररे ईनक, थारी कूड बोलण री ग्रादत हाल गई कोनी।"

'हाल' सबद र मरम न ईनक ग्रर ग्रनी समभर च्यार ग्राख्या करन मुळक्या। ग्रनी री मा न ठा नई क इण सबद रो गुफा ग्राळ दिना सू तालको हो। पण मा इण रो मरम जाणन री चेस्टा भी नई करी।

फेर मास्टर इस्कूल रै छोर न धमकाव ज्यू ग्रनी धमकावणी ग्रवाज मे बोली —"तो बता इत्ता दिन ग्रायो क्यू कोनी। ठीक बता।"

"इत्ता दिन कमठाणो चालतो हो। काल सम्पूरण हुयो है।" कँयर ईनक सोरप सू छाती ऊची करी।

"तो तू ग्रजकाल कमठाण लागण लागग्यो! पली ता म्हैं सुणी तै घरू नाव लेयली ग्रर थारो काम ग्राछो चालण लागग्यो। खर, कोई बात कोनी। काम करणो चाईज भलेई किसो ई हुवो।" कयर ईनक रै खातर बीर चर मार्थ हमदरदी व्यापगी।

"तू समभी कोनी।" ईनक कयो। "नाव सू पीसा कमायर तो म्हैं घर चिणायो ई है।"

"हैं ईनक," कयर ग्रनी माच सू उछळी, ग्रर बी उठर ईनक रा दोनू खाधा भाल लिया। हरख इत्तो हुयो जाण ग्रनी रो ग्रापरो घर चिणीजग्यो हुव।

मा बोली—"ग्र तो घणा मागळिक समाचार सुणाया। जीव सोरो हुयग्यो।" फेर चाय रो प्यालो उठावती बोली—"ग्ररे, ग्रा ठडी हुव है नी चाय।"

ग्रनी बोली—"मा, फर तो ई खुसी म ग्रेक चाय ग्रौर बणा। ग्रच्छ्या देख, चाय नई, काफी बणा, कडक।"

मा गई।

दोनू ग्रेक बीज रै सामा भाकता रँया ग्रर बराबरी रो ग्राणद लूटता रया। छेवट ग्रनी र गाला माथ लाज री लाली छायगी, ग्रर बी नण नीचा कर लिया।

दोनू अणवोल बठा रया। पण ओ अणवोल वातावरण भी हिरदा नै गुदगुदावण आळो हो। अनी फेर थाडी तिरछी आख उठाइ, पण ईनक हाल सामा भाकतो हो, इण कारण अनी पाछी आख हटी करली।

ईनक काई कवण खातर मूडो खोलण ई लाग्यो का अनी री मा आयर बोली— काफी म खाड कम तो को पलाव नी ?"

बात खाड री ही, पण अबार ईनक न खारी लागी। तो ई वो बिना दरसाया बोल्यो— 'कम नई पूरी हुवणी चाईज।'

'तो ठीक है बेटा, अजकाल लोग कमती री फसन त्यारी लगाव।' कयर बा पाछी माय गई परी।

ईनक कयो—"अनी, म्हारो घर देखण न तो चाल।"

ईत्ती ताळ अणवाल रैवण रो बोझो अनी माथ इत्तो पडया जाण हाल ई बा सरम री तळाई मे डुब्याडी हुव। धीर मूड सू इत्तो ई नीसरयो— 'चालसू।'

'कद चालसी ?'

"जद अेकदम त्यार हुजासी।

'त्यार है अनी, अेकदम त्यार है।'

तू अबकाळ आसी जद चालसू। म्हारी मा भी चालसी।'

'हू तो काल ई आ जाऊ थारो हुक्म चाईज।'

"काल तो नई, आगल हफ्त।

'आगल हफ्त क्यू ?

'काल घर मे मजूर लागसी। मरामत अर पोताई करसी।' कयर अणमावत हरख न लुकावण खातर अनी आपरा दोनू हाथ छाती आडा देयर क्रॉस बणाय लियो।

मा काफी लाई, अर ईनक वार साग प्यालो पियो। काई तो काफी कडक ही काई अनी री बाता र कार म मोठास इधको हुवण कारण काफी और भी कडवी लागी।

ईनक ऊभो हुयो।

"फेर आए ईनक। अनी बोली।

'फर आए ईनक। अनी री मा बोली। ईनक गयो।

गळी र खूण कन मुडया जित्त अनी बी री पोठ सामा जावती रई।

००

ऊनी सूटर

ग्रनी ग्रापर कमर म बठी सूटर बुणती ही, का फिलिप ग्रायर लार ऊभग्यो। बीरी छया जद ग्रनी र हाथा माथै पडी ता वा लारै भाकी। ग्रनी बोली—"ग्ररे फिलिप ! तू तो चोरा रो ई उस्ताद है। ठा ई घाली कोनी क कण ग्रायर ऊभग्यो। बठ, ग्रा खुरसी का वास्त है ?"

फिलप बठग्यो। बोल्यो—'ग्रनी, थारी कारीगरी तो म्हैं ग्राज देखी। इसा सूटर बुणना ग्राव तन ! ग्रेक तो म्हार खातर ई बुण सक।'

"ग्रर थार खातर ग्रेक नइ दो। कठई ऊन ई लाव तू।" कवती गई, ग्रर सळाया चलावती गई।

"देख ग्रनी, मन तो ऊन री पारख कोनी। ग्र ल दाम, ग्रर तू वढिया देखर ऊन लिग्राए।" कयर फिलिप दाम काढ्या।

ग्रनी बोली—"फिलिप दाम रवण द।"

"बस ग्रनी नटगी ! 'दाम रवण द' रो मतलब है—इनकार।' फिलिप रो मू डा उतरग्यो।

'इनकार ?' ग्रनी इचरज सू बोली। मन ठा कोनी क तन इनकार ई इनकार क्यू सूझै है। हू तो ग्रा चाऊ हू क ।"

"काई चाव, बोल ग्रनी। थारो मैनताना ? बो भी दवणन त्यार हू।"

ग्रनी रा बरण फुरग्या।—"वा रे फिलिप, हू मोल सूटर बुणती फिरू हू। मजूरी लेऊ, ग्रर फर थार कन ?" कयर ग्रनी थोडो मू डो फार लियो।

'ग्रनी तू रूठगी ? ग्रा ग्रादत थार म पली को ही नी। पली तो तू रूठयोडा न ग्रापस म राजी करावती।' कयर फिलिप ग्रनी र चर सामो भाक्यो ग्रर वा मुळकगी।

फिलिप कयो— 'तो ग्रनी, तू काई कवती ही।

वा बात गई फिलिप। ग्रब जे हू कय भी दू, तो ई सगळो मठ मरग्यो। कयर ग्रनी निजर नीची करली।

'पण ग्रनी, तन कवणी पडसी। फिलिप बोल्या।

"ठर, थार खातर चाय बणवाऊ ।' कयर वी माय जायर मा न क्यो—"कळचक्की आळो है फिलिप । चोखी चाय बणा ।"

अनी बाली— 'फिलिप", फर चुप रयगी ।

हा अनी, बोल अनी बोल ।'

'जे थार पूरो आव ता तू म्हार हाथ मायला सूटर ई पर लिय ।'

हैं अनी ? ' कयर फिलिप रो मू डो रासणी सू चमकण लागग्या ।

अनी नस नीची करन बुणाई करती रई ।

पण म्हारा इसा भाग कठ क थार हाथ रो सूटर पर । पच्छया, तू मा तो बता क ओ सूटर कीर खातर बुण है ?"

अनी क्यो— 'ओ सवाल ना पूछ । हाल ता म्हैं पाळाया है । थारो नाप देय द, अर उण हिसाब सू त्यार हुजासी ।

अनी नाप लेवण खातर ऊभी हुई । फिलिप बीर हाथ माय सू फीतो लेयर आपेई आपरो माप कर लियो । अनी चावती क वा खुद मापर फिलिप न थोडो मौको देव पण फिलिप इण मौक न गमाय दियो ।

अनी री मा नवा कप प्लेटा म चाय घालर लाई । पण फिलिप आपर हाथ सू चाय त्यार कर्‌या करतो इण कारण घणी चोखी नई लागी, फेर भी अनी र घर री ही अर अनी र कन बठर पीवणी ही, इण कारण इसी सवाद लागी क आग जाण इसी कदेई पी ई नई हुव ।

फिलिप क्यो— 'हा तो अनी, सूटर कद तई त्यार हुजासी ?"

अनी— पली तू डिजाइन तो बता, हाल ता खाली पट्टी पौळायोडी है ।"

फिलिप— 'अनी, काल तो हू बार जा रयो हू । आठ दस दिना सू पाछो आसू, जद तन डिजाइन देखाळसू । अर नई तो तू थार जच जिसो ई कर दिये । थार हाथ रो सूटर ई म्हार खातर रोम री बात है । डिजाइन री तो कोई खास बात कोनी ।"

अनी ताना दवती बाली—'हा, खास कोनी । अबार तो खास बात कोनी, फेर बुणी बुणाई चीज म काण कसर काढीज, वा मन परसन कोनी ।"

फिलिप गयो परो ।

नवो घर

आपर बण माफक ईनक आयो अर अनी तथा वीरी मा नै आपरो घर देखाळण खातर लेयग्यो। नव घर मे पग धरती अनी इण तर हरखी-सरमी जाण नवी बीनणी आपर सासर मे परवेस करती हुवै।

छोटोसोक घर, डब्बी री जात। थोडी सीक चीजा, पण विडावोपिडावो बिल्कुल नई, सगळी ठोड ठिकाण जचायोडी।

हवादार रसोईघर, पछेनी माथ वासण, धुम्रो निकळण खातर चिमनी अर समान राखण खातर अलमारी।

फेर आगीन गया तो सोवणघर। आछोसाक पिलग, गीदो—सुजनी लगायाडा। नीच दरी विछायोडी। हवादार, वडो कमरो। अनी री मा बोली—'मकान वौत वढिया वणवायो है।'

अनी भीत माथ सजायोडी तस्वीरा देखण लागगी। मा रसोईघर मे गई परी—"मन तो रसोईघर घणो चोखो लाग्यो।" इत्ती तई आई जिको थाकेलो मायग्यो। वा सोवणघर री दरी रसोईघर मे विछायर सोयगी।

'फादुवा सू मालम पड जाण केई आज र कपतान रा कमरो है।" कयर अनी कमर री च्यारु भीता माथ, धूमर, अेक निजर फकी।

"पिलग माथ वठ अनी।' ईनक कयो।

'मकान तो म्हार घणो दाय आयो है।' अनी मुग्गी मणसुणी करती बोली।

'पण ऊमी कित्तीक ताळ रैसी ?" कयर चौनिजरी खातर ईनक सामो भांवयो, पण अनी नई नाकी।

'अनी मुग्ग वानी ?"

'वाई गुग्गू, वाई वर्ब वाल। अनी इतरायर वाना।

"माच ऊपर वठ जा, ऊभी कित्तीक ताळ रंगी ?'

अनी मूडो फोरती बोली—"मापा वठा-वठावा कोनी।"

"ग्रा बात ? ' ईनक सामन फुरता बोल्यो । ' ग्रापेई नई वठसी, तो लोग हाथ भालर बठाए देसी ।

"इत्ती हीमत है लागा री ? हाथ भालसी जद हू ग्रापेई निवट लेसू । तू क्यू फिकर कर ईनक ? कयर ग्रनी मुळकी ।

' मन ठा पडगी तू ग्रापेई को वठनी ।' कयर ईनक ऊपर—नीच नस हिलाई ।

'ग्ररे ईनक तू तो ग्र तरजामी बणग्यो दीस ।" कयर ग्रनी हसी ।

इनक कयो— मन डर लाग ग्रनी, क जे हू तन हाथ भालर वठाएसू तो तू कोई ग्रोर तर नई समभ ।

' ग्रोर तर तो समभ सू ई । हाथ भालर वठावण रा कायदो थोनो ई है ।"

' पण ग्रनी हू कायदो भण्योडो कोनी । जद नाव केई वार माटी म फस जाव तो खवर पाणी म कर निया कर । तन भी खेंचर वठाएनी पडसी ।'

"ठीक है तू मन लकडी री नाव समभ ?'

' नई ग्रनी ग्रा वात कोनी तन तो तू समभू ज्यू ई समभू हू ।' कयर ईनक ग्राप्या मीचर काळज री हूक देखाळी । फेर कयो—ग्रनी देख हू ग्राख्या मीचू जित्त जे तू स्याणी है ता, पिलग ऊपर वठ जासी, ग्रर ।"

' ग्रर गली हू तो ऊभी रसू । क्यू ? ग्रा ई बात है नी ? हू ता गली ई हू । कैयर ग्रनी ईनक र सामन भाकी क वाल ग्रब काई करसी ।'

"गली है जद तो हाथ भालर वठावणी पडसी । ' कयर ईनक ग्रनी रा दोनू खाधा भालर पिलग माथ वठाण दी । ग्रनी न ईनक रो स्पर्श सुवायो, पण था भाव लुकावती वोनी—' इया जवरदस्ती करणी ?"

"नई ग्रनी, तन ऊभा किया राखू ?"

' ग्रच्छया बठगी ग्रब बात काइ कवणो चाव है ?'

' बताऊ ?

"हा वता ।'

"तू रीस कर लसी ।

' रीस करण री बात कव क्यू ?

' रीस करण री तो कोनी ।

"तो फेर हू तन गली लागी जिका रीस कर लेसू ।

'हू भी ऊभा ऊभो थकग्यो ।'

"इ म रास री काई बात हे ।'

"तू कव तो वठ जाऊ ? '

"म्हैं किसी तनैं ऊभो रैवण री सजा दी ही ।"

"तू कव तो पिलग ऊपर बैठ जाऊ ।"

"वा रे ईनक ! घर थारो, पिलग थारो, श्रा कोई मन पूछण री बात है । तू बैठसी तो म्हारै पाल्योडो थोडो ई रैसी ।'

"ग्रनी, देख तै रीस करली ।" कैयर दूसरै पासी भाक्यो, तो रसोई रो किंवाड हिलतो दीस्यो । ईनक पिलग सू श्रेक पावडो ग्रळगो सिरक्यो ।

माजी खखारो करन उठगी । श्रैनी पिलग सू हेटी उतरनै मा कन ग्रायगी ।

ईनक कयो—"मन थारी खातरी करणी चाईजती ही, पण हाल बिसावण पूरी हुई कोनी, इण कारण मन माफ करोना । ग्रनी, ग्रबकाळै तू ग्रासी जद चूक नई पडलो ।"

"कोई बात कोनी, कोई बात कोनी, मकान वौत म्राछो बणावो है, घणो दाय ग्रायो है । परमात्मा करै थारो ब्याव बगो हुव, ग्रर तू इण घर म सुख सू बस ।" कयर मा बेटी बारै निकळगी, ग्रर ईनक थोडी दूर पूचावणन ग्रायर पाछो ग्रापर घरे गयो परो ।

हेजल-बन में

सरदी रो मोसम। छुट्टी रो दिन। हेजल री झाड या फळा सू लडालूब। इण तर रा मोका जवान जोडा हाथ सू कद जावण द? हेड री हेड हेजल र जगळ कानी दुरग्या हाथा म थेला अथवा छाबड्या लियोडा, फळ तोडर भेळा करण खातर।

इण मोर ईनक न भी जावण री रळी आई। पण अेकलो ईनक जाव तो जावणो अक्यारथ। सोच्यो—अनी न साथ लेयलू पण बा हालक मई हाल काई ठा। चालर पूछू तो सरी। पूछण मे तो कोई आग कानी।

अनी र घरे आयो। अनी कपडा बदळर माथ म कागसियो फेरती ही।

'म्हार आवण री पली सू ठा पडगी काई अनी?' ईनक पूछया।

'नई तो।' अनी उथळो दियो। 'क्यू कोई खास बात?"

'खास बात तो कोनी, पण इया खास ई है। हेजल र जगळ मे फळ पाकग्या। अ दख, जवान धणी लुगाया रा टोळा जाव। कयर ईनक रुकग्यो।

'आपा काई करा ईनक?' अनी पूछ्या।

"तू म्हार साथ हालसी? ईनक अनिस्च र भाव सू पूछयो।

पण तू ता कव नी धणी लुगाया रा टोळा जाव। फेर आपा रो हालणो वठ तई ठीक रसी?' कवती कवती आप रा केस गुळभायर कागसियो आळ म मेल दियो, अर फराक री कालर सीधी करी।

ईनक कयो—"अनी, तू ता बात भाल घणी। आ काई जरूरी थोडो ई है क अ सगळा धणी लुगाई ई है। केई आगा दई आगं जावर प्रम सूत न ब्याव सूत म फोरण आळा हुवला।

अनी र गाला माथ ललाई पसरगी— तो ईनक थारो विचार पक्को है?'

'पक्क म कोई कसर है? चालणो है जद ई तो हू आयो हू।

'अरे नई थारी अक्कल बीत मोगी है। चालण र विचार री बात को पूछू नी। हू पूछू बा बात। कयर अनी सामी भाकी भई बा' रा मतलब अपेई समझ जा।

"अर अनी, आ मन पूछण री बात है ? बिचार तो थारा काम देसी । म्हारो विचार हुया काई पार पडै ? हू तो आज ई त्यार हू । अबार, इण घडी ।"

अनी आपरा जूता भडकाया । खूटी माथ सू थलो उतार्‌यो टुरण लागी, इत्त म मा आयगी । "म्हे हेजल रै जगळ म जावा । थार खातर फळ लावण सारू थेलो लेलियो । तू हालसी काई मा ?" अनी नौरो काढर उयळा लिया पली ई बारण कानी बधगी ।

"हू हालू कोनी, तू जा बटी" अ बोल जद ईनक र काना पड्या तो जीव जम्यो ।

दोनू जणा अेकान्त म, भाडा र भूमका बिचाळ बठग्या ।

ईनक पूछ्यो—"अनी म्हार सागै आवण मे थारो जीव दुख तो को पायो नी ?"

अनी क्यो—"थार मन मे दुख री भावना उपजी है, इण सू मालम पडै क थार मन मे दुख उपज्या है । ठीक है नी ईनक ?"

"तू आ बता, क दुख न नू तो देयर कोई आपर साग लाव लेजाव ? थारै आया जे मन दुख हुवतो, तो हू तन लेवण न थार घरे क्यू आवतो ? थार बठ्या आज मन इसो सुख हुयो है क जिसो आज तई कदेई नई हुयो । इण सुख र अेक पलक माथ हू सगळी ऊमर वारण न त्यार हू ।"

इया कयर ईनक अनी री साथळ रो तकियो बणायन उण माथ आपरो माथो टेकर सोयग्यो । जद दोना रा नण आपस म टकराया तो अनी सरमायगी, अर ईनक उण री इण सरमायोडी छिब सू टपकण आळ रस न पीवनो रयो । फर ईनक बोल्यो—"अनी, तू नाराज तो को हुई नी ?"

ईनक री ठोडी भालती अनी बोली—"ईनक, तन म्हारी नाराजगी रो इतो डर लागै, हू कदेई थार माथ नाराज हुई काई ?"

माथ हेट अनी री साथळ, ठोडी माथ अनी रो हाथ, आख्या आग अनी री मनमोवनी मूरत अर काना म उण रा मीठा बोल—ईनक साचेई न्याल हुयग्यो । उण सू वसो सुखी जीव दुनिया मे कोई नई हुयो हुसी । वेसो काई, कोई उण सू आधो सुखी भी नई हुवलो—आ भावा म ईनक आतम बिभोर हो ।

बो बठो हुयो । अनी रा दोनू हाथ आपर हाथा मे भालर प्रेम सू दबाया अर उणी जोस सू अनी भी ईनक रा हाथ दबाया ।

ढील रो नकीटो

फिलिप रो बाप केई दिना सू मादो। मादो काई, खाट झाल्या पड्यो हो। फिलिप कळचक्री जावणो छोड दियो। आपरो घूमणो फिरणो बद कर दियो। बाप र हीड चाकरी म रात दिन श्रेक कर दिया पण आराम नई आयो।

आज फिलिप रो चित की उट्ठ उट्ठ लगायो। बाप माग पाणी तो भलाव दारू। माग सत तो भलाव पीसा।

जवान जोडा न हेजल म जावता देखर फिलिप न रळी आई—हू भी जाऊ, अनी न साथ लेयर।

बो अनी र घर गया पण मालम पडी क वा हेजल मे गई है। उणी पगा फिलिप हजल कानी टुरग्यो। बी सोच लिया क आज हू अनी न साफ साफ कय द्यू कै अनी हू तन प्यार करू हू।

अनी न जोवतो-जोवता बो ठीक ठिकाण पूगग्यो। पण अरे ईनक अर अनी श्रेक बीज री भुजावा म कसोजियोडा आपस म चूमो ले रया है।

फिलिप रा साळो जास ठडो पडग्यो। गोडा टूटग्या। माथ पाड पडग्या। डोल रो सत निकळग्यो। काळजो डूबण लागग्यो। बो श्रेक मिट खातर माथो टेकर जमी माथ ऊधो पसरग्यो। फेर उणी बगत घायल सिकार ज्यू बिना खडका मडको कर सूका पत्ता अथवा पगा री अवाज कर्या बिना वठ सू अधर अधर चोर हुव ज्यू सिरकियो। 'ज कदास अनी न ठा पड़ जाव, हू दीस जाऊ, ता ई रो सगळो सुख किरकिरो हुजासी।

घरे आयो। बापर माच कन बठग्यो पण बठो रवण री ई सरधा नई। बाप पाणी माग्यो पण फिलिप न ठा तक नई पडी। दूसर माग्यो। फिलिप सून दिमाग सू बाप र सामो झाक्यो, पण उण र हाल ध्यान म नइ आयो क बाप पाणी माग है। बट न गुमसुम दखर बाप समझग्यो क आज ई रो माथो सावळ कोनी। पसवाडली सुराई माय सू जद बाप आपेई पाणी पियो अर पाछो गिलास मज माय मेली तो गिलास र खडक सू फिलिप रो ध्यान टूटयो। बाप पूछ्यो—'आज गुमसुम क्यू है बेटा? तबियत तो ठीक है?'

'हा, ठीक है बापू !" कैयर फिलिप पाछो जागत सपन रो सिकार हुयग्यो । रात पडगी ही । बाप कयो—"जा, सो जा, ग्रर वो थोडा होट हिलावता वापर सामन लुळर सोवण र कमर मे गया परो । कमर री बारी खुली ही । वठीन सू हेजल रो जगळ दीगतो हो । ईनक ग्रर ग्रनी ता कण ई ग्राप ग्राप र घरे गया हुसी, पण फिलिप र नणा ग्राग ग्रोजू वो ई चितराम हा—रूपाळी ग्रनी ईनक र गळबाखडी घाल्योडी ग्रर ईनक रा होट ग्रनी र हाटा माथै । दखता दखतो थक जाव जद कमर म घूमै, ग्रर फेर पाछा बारी री थळी माथ पग, ग्रर गोड माथ ग्रकूणी देयर ऊभ जाव ग्रर दिमाग नै जोर दव—"ग्रनी म्हारै सू इत्ती हस हसर वाता करती, इत्ती ग्रपणायत राखती, पण माय सू वा ईनक नै चावती । मन साच मन सू प्यार नई करती । म्हार साग धोखो कर्यो है ? धोखो ! नइ नई धोख जिसी चीज सार ग्रनी रो ग्रबोध हिरदो समभ ई कोनी । वा निस्छळ छोरी । लुकाव छिपाव, छळ कपट बीर कन कोनी । म्हारा ई भाग फूट्योडा हा, क हू मोडा पूग्यो । ईनक री तगदीर सिकन्दर ही । वो पैली पूगग्यो, ग्रर ग्रापरा काम बणाय लियो । हू जे पली पूगतो, तो म्हारो काम बण जावतो । ग्रनी पछायत म्हार साग हेजल र बन मे चालती ग्रर म्हार साग रगरळी करती । ग्रनी रा कसूर कोनी । कसूर ग्रथवा ढील म्हारी तरफ सू हुई ।"

फिलिप सायग्यो, पण नीद उचाट हुवती रैई । हेजल बन रा द्रिस्य घडी घडी वार उण र नणा ग्राग ग्राव । फेर समदर री सावडी गुफा म टाबरपण ग्राळा दिन याद ग्राव—ग्ररे ईनक, छुटपण मे थार कन बठा हू तरस्या करतो ग्रर ग्राज भी त मन तरसतो राख दिया । तू स्वार्थी है ईनक । पण ईनक न स्वार्थी किया कऊ ? ज म्हार ग्रो सानलियो ग्रवसर हाथ लागतो, ता हू कद चूकता ? लार रव, जिका ग्रापरी ढील रा नकीटा भोग ई है ।

००

अमोलख वचन

सडक रा फटवाड आया तो ईनक अनी रा हाथ चूमर आपर घर कानी टुरग्यो अर अनी दोर मन सू थारी हुयर आपर घरे आई। फेर भी आज उण र चर माथ चमक ही। मूड माथ विसेस ललाई ही।

मा बोली— बेटी म्हार जच क अब हू थारा ब्याव करदू। म्हारो काई भरोसो! जे आख मीच लेऊ तो मन म रय जासी।"

अनी मा र सामी सक भरी निजर सू झाकी जाण मा बीन ईनक साग गळबाखडी भर्योडी न देखर ई आ बात कवती हुव। अनी बोली—"हू काई कऊ, थार जच तो कर दे।'

"म्हार ध्यान म फिलिप सू आछा दूसरो कोई टाबर कोनी अर थ आपस म अेक दूज न चावो भी हा।' कयर मा बेटी र सामन भाकी, भई आ कळी दई खिल जासी। पण बेटी रै चरै माथ हरख री हळकी लकीर भी झलकी कोनी।

मा बोली— 'बेटी, अब तू जवान है, सरमावण री कोई बात कोनी। बोल, तन फिलिप आछो लागक नई ?"

'हा आछो तो लाग।' कयर अनी साच म डूबगी।

'मन भी फिलिप आछो लाग। आछो काई इत्तो सुवाव क म्हारी लालसा है क म्हारो जवाई फिलिप ई बणनो चाईज। हाल बीरा ब्याव हुया कोनी, परमात्मा थार खातर ई बीन कवारो राख्यो है, नातर इसा घर घराण रा लायक अर फूटरा टाबर खाली रवण न पड या कठ है! अेक दिन फिलिप मन मिल्यो भी हो। म्हैं थोडी बात करी जद मुळकण लागग्यो। सभाव सकाळू है। पण घर रो घर है कळचक्की है, बाप रो माल है अर आछी ईजत है। इण सू बेसी और काई चाईज ?' कयर मा आपरी बेटी न छाती र चिपायर माथो चूम लियो।

"पण मा कयर अनी चुप हुयगी।

'क्यू, तन फिलिप मे कोई कसर लाग ? उणमू इक्कीस बीन कोई दूजो थारी निजर म है ?" कवती मा अनी रा गोरा रसमी गाल हथाळा म झालर बीरो मूडो आपर सामन ऊचो कर्यो।

'फिलिप तो फिलिप ई है, पण " कयर फेर ग्रनी ग्रडगी ।

"रूकण री बात कोनी म्हारी लाडेसर, मनै ठा है, थारो ग्राप गे सभाव ब्याव र मामल म सकाळ है । थारै सू हकारो भरीज कोनी । पण जे तू नकारो नई कर, तो हू फिलिप सू हकारो भरलू ?"

"पण मा, रात हू ईनक साथै हेजल-वन मे गई ।"

"काई हुव गई तो ? हेजल वन मे गया कोई फिलिप नाराज थाडो ई हुव । तन देखर बो इसो हरख क ग्रापर गाभा मे माव कोनी । इस धणी न पाया कोई भी छोरा धन धन हुसकै है ।"

"पण म्है ईनक न म्हारो ग्रापो सू प दियो ।"

मा थोडी ग्रळगी सिरकी, ग्रैनी रो मू डो सावळ देखण खातर, ग्रर बोली–'ग्रापो किया सू प दियो ? काई सू प दियो ?"

"म्हा ग्रापस म गठजोडडी घालर वचा लिया ।"

"ग्रा तो साधारण बात है बेटी । इण मू कोई ईनक मू थारो ब्याव थोडो ई हुयग्यो ।"

"ब्याव तो को हुयो नी, पण म्है मन सू ईनक नै म्हारो धणी मान लियो, ग्रर ग्रापस म ब्याव रा ग्रेक दूज न वचन भी देय दिया ।" कयर ग्रनी मा र नडी सिरकर छाती र चिपगी ।

मा बोली—"तो फेर म्हार बालण न ठौड कोनी । वचना सू बसी की कानी । बचन ग्रमोलख हुव । तू थारा वचन निभा, तन म्हारी ग्रासीस है ।"

ग्रनी मा न बाथा म भालर काठी लिपटती बोली—'मा, तू किसीक चोखी है, म्हारी ग्राछी मा ।"

००

ऐनी रो ब्याव

आज ग्रनी रो ब्याव । धाळी भक, बीनाली पोसाक । चमचमाट करता नग, लार मू वळ खायोडा । केसा जिसी ई चमकणी आख्या, पण आख्या म इत्तो भोळास जाण करण ई हिरणी री ग्राख्या चेप दी हुव । ग्रनी बीनणी बण्योडी है इण मू सकोच भाव सू चाल वठीन धरती न सको ग्राव क इसी कवळ पगी खातर म्हैं मारग म पुसव क्यू नी विछाया । सहनाई आळो आपरी धुन म मस्त लाग पण मिट मिट छन वो थमै ग्रर पाछो मुड ग्रर ग्रनी र ढळत रूप हेट ग्राख्या री चूक माड ।

गाव रा सगळा लोग बाता कर—इसी घणा रूपाळी डावडी आज पली इण गाव म ब्याव सारू गिरज जावती देखीजी कोनी । जाण सुरग लोक सू कोई देवी अथवा अपसरा इण धरती न धन धन करण हेट उतरी है ।

इण र साग लोग फिलिप खातर अफसोस भी करता—बापड न ठोक भाग राख दिया । माभी रो छोरो मीर मारग्यो ।

वठीन गिरजाघर र ग्रेड छड वातावरण निराळो ई हो । यठ इसो प्रचार हुयो क इनक डफोळ है जिका ग्रनी सू ब्याव करणन गिरज ग्रासी । फिलिप पूरी त्यारी कर राखी है ग्रर वो जरूर ग्रनी न परणसी । इसी रूपवती नार न कुण छोड ? इण प्रचार रो ग्रेक कारण हो—गिरज र पगोथिया र दोना कानी दो व दूकधारी तनात कर्योडा हा ।

ग्र समाचार सगळ फलग्या, ग्रर गाव रा लोग तमासा देखण सारू आपरो काम धधो छोड छोडर सगळा हेट री हेड गिरज कानी उलडग्या ।

ईनक र भी ग्रा बात काना पडी, पण वो डरण ग्राळो ग्रादमी नई हो । हालात रो मुकाबलो करण ग्राळा दिलेर जवान हो । उण रो पक्को इरादो हो क बन्दूक री गोळी ग्राग वो आपरो सीनो ताण देसी पण बन्दूक मू डरन पीठ पक्कायत देखाळ कोनी ।

ग्रनो र काना भी ग्र समाचार पूग्या । बी मन म विचार करयो—फिलिप ता म्हार ऊपर मोकळो न्यार हो, फेर ग्राज वो म्हार ब्याव म विघन घालसी ? पण

ईनक बीरो प्रतिद्वन्द्वी है। टावरपण म ईनक बीन घणो तरसायो अर सतायो, उण रा बदळो बो आज बळ सू काढै है। हे परमात्मा, तू सगळा न आछी बुद्धि दे।

जद अनी अर ईनक गिरज र नडा पूग्या तो बार इचरज रो ठिकाणो नई रयो। लारलै दस बरसा सू गिरजो अमरावत पड़्यो हो। बारली भीता रा जगा-जगा लेवडा उतरण लागग्या हा, रग तो बाकी रैवतो ई किया! प्रबन्धक लोग आ क्यर टाळ देवता क पीसा कोनी। पण गिरजो दमदमाट कर। इसी ठा पड जाण विश्वकर्मा कोई नवी इमारत ऊभाऊभ त्यार करी हुव। गिरज र पगोथिया माथ मुखमल री पट्टया बिछायोडी। पगोथिया र दोना कानी गमला रो पगत अर पत्ता रा नक्ली झाड बणायोडा। ज्यू ई अनी पगोथिय माथ पग धर्‌यो क दोनू बदूकधार्‌या एकै सागै धमाको बोलायो। लारलै लोगा मे खळबळी मचगी, अर केई तेतीसा मनायग्या पण आग हा जिका देख्यो क फिलिप अनी अर ईनक न आदर-सत्कार सू माय लेयग्यो। गिरज नै माय सू इसो सिणगार्‌यो जाणै अमरावती उतरन धरती माथ आयगी हुव! गिरज मे बड जिक र ई गळ म पुस्बा रो हार पराय देव। इण सू च्यारू मेर पुस्बा री मैक फूटगी अर सगळा लोग इया मैसूस करण लागग्या जाण सुरग र बगीच मे उतरग्या हुव।

पादरी साब आया। ईसामसीह र काम आग सगळा अेक सुर सू प्राथना करी। फेर अनी अर ईनक आपस मे वफादारी अर साच प्रेम रा वाचा दिया लिया। दोना आप आप री वीट्यां खोली अर आपस मे अदला बदळी करी। गिरजै री घटया बाजी, अर व हरखे कोडे परणीजग्या।

सगळा लोग पत्थर रा हुयोडा रयग्या। केया रो ख्याल हो क अबै फिलिप बीच मे कूदसी। ख्याल साचो निसर्‌यो, पण सौळ आना साचो नई। फिलिप कूद्‌यो तो सरी, पण अनी न बधाई देवण खातर अर हीरा रो हार भेंट करण खातर। अनी री छाती गदगद हुयगी—"तू कित्ता चोखो है फिलिप ?" क्यर बीं फिलिप रा दियोडो हार आपर गळ मे पर लियो।

फिलिप सू और तो की बोलीज्यो कोनी, बो इत्तो ई कयो—'अनी, थारो सुख ह जिको म्हारा सुख है।'

सुख रा सात वरस

अनी न पाया ईनक घणो व्हाल हुयो क ईनक नै पाया अनी घणी व्हाल हुई, ओ अन्दाजो लगावणो कठण काम है। हा इत्तो ठा है क दोना न अणमाप आनन्द हुयो अर व सुखी घरबारया दई आपरो जीवण वितावण लागग्या।

ईनक लगन सूं आपर काम माथ जाव। दिन भर समन्दर री छौळा माथ राजस कर। कदेई वामूं झगड, कदेई वामूं हंज कर, हरख सूं गीत गाव, पण मन म अनी रा ध्यान रव—सिंझ्या पड्या घर जासूं। अनी अडीकती हुवती।

अर साचेई सिंझ्या हुया सूं पली ई अनी ईनक र मारग माथ आपरी पलका रा बिछावणा कर देवती। जद अळग सूं ई ईनक रो भळको पडतो, तो वा भागर सामन जावती, अर आपस म हाथा री आगळया गूंथ्योडा व दोनूं जणा बाता करता घरे आवता। ईनक आपरी दिन भर री मैनत मजूरी री बाता सुणावता अर अनी आपरी जवानी डायरी रा पाना सुणावती।

ईनक अदीतवार न आपर काम री छुट्टी राख। दोनूं जणा न्हा धोय, साफ सुथरा गाभा पैरन गिरज जाव अर भगवान र ध्यान मे लवलीण हुव। सायद व आपरी कृतग्यता भी जाहिर कर क भगवान बाळपण म बिछड्योड दो हिरदा न पाछा आपस म भेळा हुवण रो अवसर दियो। दूसरा सगळा लोग प्रार्थना सूं उठ जावता, अर अनी ईनक रो जोडो ध्यान मगन सूं दे बठो है। वारो आपसी सनेव देखन गाव रा मोकळा धनपती रळी करण लागग्या क म्हारो हेज भी ईनक अनी जिसो निस्वार्थ अर निस्छळ हुवतो।

पण केई लोग बात करता- अनी? अरे आ चलती रकम है। ईनक भोळो है। आ पली ईनक रो सफायो कर्यो चाव। ईनक रो माल चाटर फेर फिलिप वाली टूकसी। दीमै तो इसी सूधी है जाण मूंड म जीभ ई कोनी, पण हकीकत मे ओफ! भगवान ई सूं बचाव इसी छाकटी सूं। अेक साग दो दो घोडा री असवारी कर। जबरी है आ छोरी।

अदीतवार न दोनूं जणा जोड सूं बजार मे सौदो खरीदण न जाव, अर कदेई खाली हाथ पाछा नई आव। घणोसीक सामान अनी खातर ई आय—कदेई

नवी चाल रा सण्डल, कदेई रेसमी मोजा, कदई फल्ट कप, कदेई फराक रा टुकडा, कदई घर री सजावट खातर तस्वीरा, कदेई ऊन, कदेई सळाया। ईनक कोड सू पीसा खरचतो अर उरानै इतो आनन्द हुवतो जित्तो साच करमकाण्डी न होम कर्‌या हुव।

इरा तर ईनक दटर मनत करतो, अर दोनू जरा मज मे रवता।

ग्रेक दिन जद बै बजार म सौदो खरीदता हा, अर ईनक ग्रेक मुखमली फराक मोलावरा लाग्यो तो अनी रोक दिया—"ईनक, आपा बौत खरचाळू हा। तू लावै जिका माय सू ग्रेक पाई भी बचावा कोनी। आपा रा पाटोमी आपा सू ग्राधो कमाव, परा फर भी व पीसा भेळा कर। सगळा पीसा लाव ज्यू ई उडाव कोनी।"

"परा थारै आज काई जचगी, अनी?" इनक आपर जीवरा हाथ रो थेलो डाव म झालर जीवरा सू अनी री नरम हथाळी अर आगळ्या पोलीसीक ममळना बोल्यो।

अनी बोली—"ईनक, थार हाथ सू म्हार काळज म गुदगुदी पदा हुवै, अर बजार म कोई देखसी तो आपा काम्भा को लागा नी?"

"परा तू म्हारी वात क्यू टाळ अनी? आपानै परणीज्या न छव वरसा सू ऊपर हुयग्या, परा त खरच वरच रो कदई नाव ई लियो कोनी, आज तन आ कजूसी किया सूझी?"

'कजूसी री बात कोनी। वडेरा कयग्या है—सीरख देखर पग पसाररा। ग्रोडी वगत खातर भी तो दो पीसा सचरा चाईज।' कयर अनी ईनक र मगरा म हाथ लगावती बोली—अब आपान घर चालरो चाईज।

दोनू घर कानी टुरग्या। अधारो सरू हुयग्यो, अर ईनक अ गो र छेडखानी कररा लागग्यो। अनी बोली—'है तू हाल टाबरपरां आळो सागी ईनक। पाच सात मिट म आपा घर पूग जासा, जित्तै थार सू खटाव राखीज कोनी?'

ईनक कया—"अनी, मिनख चाव कित्तोई सच्चरित्र क्यू नी हुवो, आपरी लुगाई आग जे वो मिनग है तौ बीन निरलज हुवराो ई पट। अर आ ई बात लुगाई री है। चाव वा किसी ई मती क्यू नी हुव आपर धराी आग तो बीन निरलज हुवराो ई पड।'

अनी आख्या घुळावती बोली—"ईनक तू ग्रेक लुगाई री वात कर हैक सगळी लुगाया री?'

ईनक कयो— ज्यू मुट्ठी धान री वानगी सू बोरी र धान री ठा पड जाय, इगी भात सगळी लुगाया र वाबत जागरा खातर ग्रेक लुगाई मोकळी है।

अनी कयो—"हू थारी आ वात मानू कोनी। अेक लुगाई जे करकसा है, तो तू सगळी लुगाया न करकसा गिरण लेसी? अेक लुगाई जे कचळ हिरद री ह, तो काई हरेक लुगाई बिसी हुवणी जरूरी है?"

ईनक कयो—'अनी तू समझ कोनी। म्हारी वाता गभीर ग्यान माथ टिकयोडी है। काची बात म्हार मूडं सू कुदरतन ई निकळ कोनी। हाटा सू वार आया पछे म्हारा सबद नप-तुलर आव।"

अनी लापरवाई सू बोली—'आव नप तुलर। त किस कालेज म पढाई करी किसी पोथ्यां वाची। तू तो मडफाऊ घेसळा चेप है।"

आपरी अशिक्षा कारण ईनक र मूड रो रग तो घडीपळ खातर भाव बदळग्यो, पण अनी न बिना ठा पाले ईनक बोल्यो—"अनी सगळो ग्यान पाथ्या म भर्योडो थोडो ई है। असली ग्यान तो तद हासल हुव जद मिनख आपर ग्यान मर री जिनसा न आख्या खोलर सावळ दख। खाली पोथा पढ पढर पिडत हुया काई को हुवनी। पोथा तो थाथा है।"

ईनक री बात काटती अनी बोली—"पोथा न थोथा किया कव? पोथ्या म तो मिनखा री पीढया रो ग्यान भेळा कर्योडा हुव। ज पोथा थोथा है, तो फर तू बाइबिल न काई कसी?"

'तू हाल समझ कोनी।' ईनक बोल्यो। 'बाइबिल न तू पाथी गिरण? आ थारी अणसमझी री सनाणी है। बाइबिल म तो भगवान रो सनसो लिख्योडो है। ससार रै उपकार सारू भगवान आपरो सनेसो भेज्यो, जिको बाइबिल म लिख्योडो है।" कयर ईनक अनी रो मूडो सावळ देखर उणरा भाव लखण सारू पावडो खायो उठायर अेक गज आग बधग्यो। अनी साचेई प्रभावित हुई। वा बोली—"पण ईनक, त इत्ती बाता कठ सीखली? हू तो तन हाल, गळती सू, साकडी गुफा री, जोरा मर्दी बीन बणनियो इनक समझती ही।'

ईनक हसण लागग्यो। बो अनी रो हाथ प्यार सू दबायो अर चूम लियो। होठ भी नडा करण री चस्टा करी, पण अनी अळगी सिरकगी।

ईनक कयो—"अनी, म्हारै करमा मे विद्या रो जोग तो नई हो कारण अगत रा ई म्हारा माईत मरग्या पण कोई भी चीज सीखण कानी म्हारी रुचि ठेठ सू ई रइ है। तन ठा है हू म्हारी नाव न चमचमाट करती राखू इण कारण म्हारी नाव मिनता थका आछा लोग दूजी नाव कबूल कर कोनी, अर आछ लोगा रो घडी पलक रो सत्सग ई लाख रुपिया सू बेसी है। म्हारो ग्यान म्हार विद्वान सला या र सत्सग र परभाव सू ई है नातर हू तो पढ्यो लिख्यो कोनी आ वात थारी अेकदम साची है।

घर नडो आयग्यो । अनी कू ची भलाई । ईनक ताळो खोल्यो । अनी घर म जायर पिलग माथ बठर सुसतावण लागगी ।

"अंनी थकगी ?" ईनक पूछ्यो ।

'नई तो ।" अनी झट बोली । पण बा हाफ्योडी सास सावती ही इण सू साफ ठा पडती कै उणनं थाकेलो आयग्यो हो ।

ईनक क्यो—"अनी, तू म्हार सू तीन बरस छोटी है पण बूढापो तन म्हार बिच्चै बगो आसी, इसी ठा पड ।"

अंनी मुळकी, अर जवानी र कारण उणरो रातो मू डो कस्मीरी सेव जिसो रातो हुयग्यो ।

ईनक क्यो—"अनी, म्हारी हरेक बात न तू मुळकर उडाय देवै । सायद तू मन मूरख समझ । जद इसी बात ही, तो तै जाणती बूझनी अेक मूरख सू पाना क्यू घाल्यो ? देखती आन्ध्या कूव म क्यू पडी ?"

ईनक री बाता सू अनी री मुळक जोरदार हस मे बदळगी, अर बा निरी ताळ तई हसती रई । ईनक र जचगी कै अनी बीन साचेई मूरख समझ । अर इणी वगत अनी कय दिया—"ईनक, तू मूरख है । तू समझै तो कोनी, अर मन मे सोच क थार जिसो जाणकार कोई है ई कोनी ।"

ईनक रो मू डो फूलग्यो । बो आपरा जूता अर गाभा उतारन गळी कानी टागा लटकायर, अनी कानी पूठ देयर, बारी मे बठग्यो ।

अनी हेलो कर्‌यो—"ईनक, ईनक !"

पण ईनक अणबोल ।

अनी आपरा कपडा ढीला करती करती ईनक रै लारै जायर ऊभगी । साथा माय हाथ मेलती—"अरे ईनक, बारी म बठग्यो । सगळी हवा रोकली । मन भी तो थोडी हवा लेवण दे ।"

ईनक चुप ।

"तो तू काई रीसाणो हुयग्यो ?"

ईनक चुप ।

"साचेई रीसाणो हुयग्यो ! ईनक, तू थारी लाडली अनी सू अपूठो हुयर बठग्यो । रूठग्यो ?'

ईनक हाल चुप !

अनी ईनक र माथ सू आपरो गाल अडायर साथा माय झुक्योडी बोली—'ईनक, भगवान ईसू री सौगन मन आज ठा पडी है कै तन रीसाणो हुवणो आव ।'

ईनक ग्रनी रा हाथ ग्रापर गाधा सू ग्रळगा करतो बान्यो— क्यू भूठ बोल ? ग्राज ठा पडी है ? ग्रर फर भगवान री सौगन खाव ? फिलिप माथ तू रीसा बळती जद तू किसी ग्राग्या मीच्योडी राखती ही ?"

ग्रनी ग्रापरा हाथ पाछा ग्रधरसीक ईनक र गाधा माथ टेकती बोली— फिलिप सू तू लडाई करतो जिकी तो म्हार मातर करती, पण ग्राज ग्रब म्हार सू लडाई की र खातर कर है ?"

ईनक ग्राधी नस सामन मोडर बोल्यो—' साच माच बताऊ ?"

ग्रा ई कोई पूछण री बात है ? मिनख लुगाई म भी फर काई कूड रा पडदो बिचाळ रया कर ? म्हार ख्याल सू तो रव कोनी। दो न्यारा न्यारा सरीर ग्रेक ग्रात्मा हुयर रैव, ग्रर बार इणी भात रवण म जीवण री सायकता है।"

ग्रनी तो ग्राग बात चालू राखी चावती, पण इनक बात काटता बोल्यो— 'पूछण री बात तो कोनी, पण पूछण री बात है भी।"

ग्रनी ग्रापरी छाती रो भार ईनक र मगरा ऊपर राखती लुळगी, ग्रर ईनक थाडो ग्राग सिरक्यो।

ग्रनी बोली— ग्राग कठ सिरक है ? जे तिगज्यो तो हू कठ हाथ घालसू ? ग्रापा बाळपण रा साथी रयोडा हा, इण कारण थार सू बात करता हू सकू कोनी। ज म्हारी केई बात सू तन ठेस पूगी हुव, तो हू सात बार माफी मागू, दस बार मागू, सौ बार माफी मागू। कव तो जमी माथ नाक रगडलू।"

इनक कयो— ग्रनी, त म्हारो कोई कसूर तो कर्‌या है कोनी, फर माफी काई बात री माग ? जिका रा मन ग्रापस म नई रळ, व भेळप रो दखापो करण खातर माफी रो ढाग रच्या कर। थारी 'माफी सू भी मन हिरद रो ग्रळगाव भळकतो लाग।"

ग्रनी काठी लिपटगी— ग्ररे ईनक, तू इसी बात कव, मन, थारी ग्रनी न, थारी, ग्रर फकत थारी ग्रनी न ?'

"पण ग्रनी इण बात सू सुखी कोनी क बा म्हारी बणगी ग्रक मूरख री लुगाई बणगी।' बीर जिसी लुगाई न ता ग्रेक समभदार री बऊ बणनो चाईजतो ही। पण ' "

ईनक ग्राग भी की कवणो चावता, पण ग्रनी वीर मूड ग्राडो हाथ देय दियो — ईनक, म्हारो काळजो इत्तो करडो कोनी क इसा बज्जर जडा बाला री मार बरदास कर सक। मन इण बात रो इचरज हुव क तू ग्राज निरदयी हुयन इण तर री मार किया मारण लागग्यो।

"नई अनी, थारो म्हारो ब्याव तो अेक सजोग हो, नातर हिरऽ सू तो तू फिलिप न चावती अर उणसू ई ब्याव करणो चावती ही ।"

अनी ईनक रो हाथ झालर बारी सू मायल कानी लियो अर उणरी बगल म हाथ घालन पिलग माथ बठाण्यो । अनी कनै बैठगी तो ईनक अळगो सिरकतो बोल्यो—"अनी आज थारो परस मन सुगावै कोनी । तू म्हार सू बात भलेई कर, पण अड मत । म्हारो माथो अबार ठीक कोनी ।"

अनी बोली—'ईनक, तू कव तो हू पिलग सू हेट बठ जाऊ, तू कव तो कमर सू बार ऊभ जाऊ । परमात्मा म्हार सू इसो कोई काम नई करावै जिण सू तू नाराज हुव । तू मन खाली इत्ती बात बतायदे कै आज म्हारी किसी चूक हुई जिण कारण तू रीसाणो हुयग्यो ।" इया कयर अनी पिलग सू हेट, ईनक र पगा म बठगी ।

ईनक पिलग सू हट उतरन उणरी बगल मे दोनू हाथ घालर ऊ'चो बठाणी, अर आप बराबरी म बठग्यो ।

अनी आपरो माथो ईनक री छाती मे घाल दियो । बीर निरमळ कपोळा माथ आसुवा री धारा चिलकण लागगी । ईनक आपरा करडा हाथ गररसीक अनी र गाला माथ फरन आसू पूछया, अर कयो —' अनी, थारा आसू मन निस्कपट लाग अर हू सोचू क म्हैं तन म्हारी मूरखता र कारण ई दुख दियो । त ठीक कयो । हू साचेई मूरख हू ।'

अब अनी न याद आयो क उण र 'मूरख' सबद माथ ईनक रीसाणो हुयो हो । बा बोली—"ईनक, तू रीस ना करे । जे तू मूरख नई, तो भोळो पक्कायत है—गळी-गवाड री सगळी छोरया अर जुवत्या म्हार अणमाप जोवन अर अजोड रूप रो ईसको कर, अर तू मन बूढी बतावण लागग्यो ! आ भोळप री बात तो है ई । है तो मूरखाई री, पण मूरखाई कया तू रीस कर लेव, इण कारण हू कऊ क भोळप री बात है ।"

ईनक कयो—"देख अनी, फेर तू इसी बात करै जिणसू मालम पडै क तू मनै नई, फिलिप न चाव । त मन अबार फेर गुडलपेटी बाता म मूरख री पदवी देय दी है । आ बात ठीक है क थार डील माथ जोवन अर रूप दीस पण थारी सगती घटती हुव ज्यू लखाव, नई तो बजार तई घूमर आया सू थाकेनो थोडो ई आवै ।'

अनी हसी । जोर सू हसी । ईनक गूगो हुव ज्यू बीर सामो जोवतो रैयो ।

ईनक कयो—"केई आदमी री बात माथ हसण रो मतलब है बीन मूरख गिणनो ।"

अनी सरम सू आख्या हेटी करली । ईनक बीरी ठोडी झालर आपर सामन मूडो करतो बोल्यो—"क्यू ठीक है म्हारी बात ?"

अनी बोली—'जे कोई दूसरो आदमी हुवतो तो अबार तई आपेई समझ जावतो, पण तन तो हू खुद कमू जद ई तू लारो छोडसी । आपा "

ईनक री आख्या म इचरज भरीजग्यो । बी कयो—"आपा, काई अनी ?"

अनी सरम सू माथो नीचो करती बोली—'आपा दो सू तीन ।"

"हैं अनी, साचेई ? अनी साच बता ।" कयर अनी न आपरी जूठी भुजावा म घालर उणरा होट चूम लिया ।

'हा, अब ठा पडी । ता अनी, तू 'मा' हुवण आळी है !" कयर ईनक ग्रेनी रा गुदगुदा खाघा आपर हाथा सू दाब्या ।

ईनक री बात सुणर अनी आख्या हेटी करली । ईनक फेर बोल्यो—"साची बात म सरम काई बात री ?'

अनी आख्या जमी सू उठायर ईनक र सामी करी, पण लाज र कारण बा की बोल नई सकी । जद ईनक अनी रो मूडो आपरी हथाळया मे झालर बीन उथळो देवण खातर मजबूर करी तो वा बोली—'अर तू बाप हुवणआळो कोनी काई ?'

ज्यू ज्यू दिन नडा आव, अनी रो पग भारी पडतो जाव । जिण काम न बा फूक सू कर लेवती अब उण मे भी सेचळ री जरूरत लखावण लागगी । और तो और उठण-बठण म भी जमी माथ हाथ टेकण री जरूरत पडण लागगी । ईनक भात भात री जिनसा अर रसाल अनी खातर लाव, पण जीव दोरो अर उलटी हुवण र डर सू बा भूख हुवत थका भी थोडी भूखी इ रव ।

ग्रेक दिन अनी कयो—'ईनक तू तो रात पडया घरे आव, इत्त तई हू घर म ग्रेकली रऊ म्हारो सरीर नरम है (कयर आख्या नीची करली) तन ठा है । म्हारी मा री देखरेख तो है ई, पण थार बिना मन अजकाल आवड कोनी । तू जे दिन आथण्या पल पल बावड जाव तो कोई हरज तो कोनी !"

दूज दिन भार मे जद ईनक कमरे म बडण लाग्यो, ता उणरी सासू बारण र कन ई रोक लियो । माय न दाई गयोडी ही । पन्द्र बीस मिंट मे छोट टाबरिय री च्याय म्याय सुणीजी । ईनक रो काळजो उछळतो हो । उणरी सासू बार आई अर समाचार सुणाया— छोरी हुई है । "

छोरी री चीचाड जाण ईनक खातर ग्रेक सनेसो लाई । बी मन म सोच्यो ईनक, तू गरीब रो जायो हैं, पण थारा खरचा इत्ता वधग्या क गाव रा रईस आदमी

भी थार सामा भाकण लागग्या। ठीक है, ब्याव रो जोस हुया कर। अेक बार जोस मे होस गायब हुया ई कर है, पण अबै गाडी न सागी रस्तै लावणी पडसी। मनै कमाई माय सू थाडी बचत भी करणी चाईज। आज आ छोरी जलमी है, काल बडी हुसी, ई न पढावणी है, परणावणी है अर ई रा सगळा अेढा काढणा है। इणी तर, जद टावरा री लीक सरू हुई है, तो परवार बधता ई लेखो। दो पीसा बचायोडा हुसी तो टावरा रो पाळण पोसण मिनखाचार रो करीज सकसी, नई तो हू अर अनी रया, ज्यू ई अ रय जासी। पण नई, म्हार खरच म हू कित्ती ई कटोती करद्दू, म्हे भलेई कित्तो ई कसालो भुगतला, टावरा न अणघड भाट ज्यू तो राखू कोनी।

ईनक थोडी ताळ विचारा मे गम्योडो रया। फेर उण री सासू आयर कयो—'अब अनी सू मिलीज सक है।"

ईनक कोड स अनी र कमरै मे गयो, पण अनी पलका हेटी करली। ईनक पूछयो "तबियत तो ठीक है, अनी ?"

"हू।' अनी नाक सू अवाज करी।

○○

करता। इण कारण ईनक वठ पञ्चायत पूगतो, अर व ईनक र छव माय सू आपरी रची माफक छाट छाटर मछल्या लेवण री कोसीस करता, पण ईनक रो माल इत्तो सिरकार हुवतो कै उणर छब्र म पाछी लेजावण खातर अेक भी मछली नई रवती।

इण तर दिन रात खोरस म जुट्योडो रयन ईनक पीसा भेळा करण मे लाग्योडो रवता। पण छोरी र हूवण उपरायत भी अनी रा सूनापणो मिट्यो कोनी। जद छोरी दो बरसा री हुई, तो घर मे अेक और टावर आयो–धेनड। जाण ईनक रो मू डो तोडर चेप्यो हुव। पण टावर रो काचो डील हूवण कारण नानडियै रा गाल ईनक दई तावडै सू बळयाडा नई गुलाबी हा, अर अबै ईनक री गरहाजरी म इण छोर री मौजूदगी जाण ईनक रो छाटो सरूप बणर अनी न धावस देवण जोग वणगी। अनी र माथ म जिका ऊ धा ऊ धा गोट उठ्या करता हा बारी मात्रा कम पडगी।

इण नानडिय र जलम पछ ईनक आपर घघ म पैली बिच्चै भी वेसी व्यस्त रवण लागग्या। ज्यू रात री वगत म धू तारो समदर म चालती डूगी नै मारग देखाळ, उणी तर टावरा रो सावळ, मिनखाचार रो पाळण पोसण ईनक रा अेकमात्र उद्देस्य हुयाडो हा।

ईनक न जद मालम पडी क उणरै साकडै बदरगाह सू आठ दस मील र आतरै अेक बडो बदरगाह खुल्यो है, तो वा वठ काम करणिया म सगळा सू आगली पगत म ऊभग्या। जळ थळ दोनू मारगा सू वो वठ जावतो और आपर बौपार न फलावण मे पूरो सचेस्ट रवता। उण वदरगाह सू अळगी अळगी जगावा तई मछल्या पूगावण रो ईनक ठको लेय लियो अर भरोसो हो क अब उण रा आछा दिन घणा आघा को रया नी।

पण उथळ-पुथळ कुदरत रो नम है। सगळी जिनसा म फर बदळ आव उणी तर इनक र जीवण माथ भी असर पडया। अेक वार वो पाल रा रस्सो सावळ वाघण खातर जद मस्तूल माथ चढतो हो तो अकाअेक उणरो पग फिसळग्यो अर हाथ ढीलो पडग्या। उणी वगत वो आयन हूट पडयो अर वेहोस हुयग्यो। जद लागा साम्या अर उठायो, ता ठा पडी क पग रो हाड वडकग्या। पाटापोळी करया अर ईनक न केई दिना तई खाट माथ रवणो पडयो।

जद ईनक इण तर नाकामल हुयोडो पडयो हो, तो अनी र अेक टावर और हुयो—अेक छोरो पण वो सतमासियो होव ठा नई उण र सरीर मे जलम सू ई चिणपिण रवती अर इणी कारण उण र जलम सू माईता न हरख री जगा सोच फिकर ई हुया।

ईनक मन मे सोचतो क हू वगो सावळ हुवू, वगो हाड सध तो पाछो वगो घव मे लागू, कारण ग्रेक ग्रेक दिन मे मुट्ठी मुट्ठी रुपिया रो घर मे घाटो पडतो हो। इण दरम्यान ग्रेक बीजैं ग्रादमी ईनक रो ठेको बिचाळ पडन हथिया लियो, ग्रर ईनक रा सत सिरसा मीठा सपना जाण तू ब रैं रस मे डुबोईजग्या।

उणी वगत ईनक ग्रेक जागतो सुपनो देरयो—"उणरी ग्रनी, लाडली ग्रनी, जिण खातर वो ग्रापरी भुजावा रो तकिया दिया करतो, जिकी ग्रापर घर मे रईस लोगा ज्यू रवती, टावरा नैं पाळती, उणरो धणी मरग्यो ग्रर इण तर कमाई रो साधन वद हुयग्यो। वजार रा पीसा माथ हुयग्या ग्रर ग्राखर ग्रनी न घर खाली करण खातर लाचार हुवणो पड यो। छोटा छोटा टाबरिया न भाल भाल बावळिया ग्रर घर सू बार बठाण दिया। ग्रब ग्रनी दर दर री ठोकरा खावण लागगी। छोरी ग्रागळी झाल्या चाल है। ग्रेक छोरो खधोल चढ योडा है, ग्रेक वगल म लटक है। मौसम ठडा है, मा टावर सरदी सू काप है ग्रर भीख मागता फिर है। कोई भीख घाल, कोई दुतकार, कोई फाटयोड गाभा माय कर ऊभो ऊभो ग्रैनी र डील न निरख है, पण देवण न रामजी रो नाव। ग्रनी न घरा री लुगाया कन जर बुभायोड तीरा सिरसा तीखा बोल भी सुणना पडैं, पण बा जाण फटकार प्रूफ हुयोडी है, उणर चैंर माथ निरासा या रीस रो लवलेस ई दरस कोनी।' ईनक रो हाथ छाती सू हट ग्रायो, ग्रर ग्रेकाग्रेक उणरो ध्यान पळटयो।

जदपी इनक न सरब सगतीवान भगवान मे पूरण बिस्वास हो क सगळा काम उणरी मरजी सू हुव उणरी मनस्या बिना पीपळ रो पान ई हिल कोनी सगळा सुख दुख उण री इछ या रैं ग्रधीन है, पण जद ईनक इण तर नाकामल पट यो रयो ग्रर उणर हाथ रो धधो, रोटी रो साधन, खुसग्यो, तो ईनक री भगवान मायली द्रिढ ग्रास्था डगमगावण लागगी। ईनक न लखायो जाण उण रा माडा दिन नडा ग्रायग्या, ग्रर बी ग्रापर टावरा र ऊजळ भविस्य रा जिका सोनलिया सपना दख्या हा, ब सगळा निरासा रूपी मगरमछणी गिटगी। ग्रर ईनक सोच्यो— 'म्हारा तो इण तर खाट माथ सिडता सिडता सरीर छूट जासी। ग्रनी ग्रर टाबरा री सुध-बुध लेवणियो कोई है नई। ग्रनाथा रा टावर पळ ज्यू म्हारा टावर पळसी। ग्रसहाय विधवा ज्यू ग्रनी न ग्राखी जूण पूरी करणी पडसी। ह भगवान! तू तो गरीबा रो भाई है। दीना माथ थारो काळजो पसीज है, फेर त म्हारी ग्रा हालत क्यू करी? हे नाथ! हे म्हारा मालक! तू म्हार माथ भले ई ग्राफता रो पाड पटक द मन मौन र सागर म न्हाग दे हू डर कोनी, मू ड सू 'उफ' तक काढू कोनी पण ह दयाल हे क्रिपासागर तू म्हारी इत्ती प्राथना कबूल कर क ग्रनी ग्रर उणर टावरा रो र ई खाडो नः हुवै।

अ अनी अर ईनक सातर माडा दिन हा। ईनक रो रुजगार यद, छोटकियो टाबर ताबलो, उणरी टाव टेव ! आफत र इण सागर म अनी अर ईनक भकभोरीजग्या, पण रम पिता ताई बा आपरी सरधा गमणदी कोनी।

निरासा री डूबती जाज न आसा रो पोत मिलग्यो। जिण वौपारी रै अठ ईनक सरू मे माभी रो हुन्नर हासल कर्‌यो हो, बो ईनक री ईमानदारी सू साचीडो प्रभावित हो। उणरो अेक जाज चीण जावण आळो हो, अर अेक विस्वासी मिनख री जरूरत ही। बी ईनक न याद कर्‌या, अर क्वायो क जे तू चाल, तो थार सातर नोकरी त्यार है।

ज्यू तोफान पछ समदर री लरा हसण लाग जावै, भतूळिय पछ लोग सागी चाक आपर घध म जुट जाव, बादळ र छेड हुया आभ म माण पळपळाटा करण लाग जावै, उणी तर इण नू त सू ईनक री अधारी रान रो जाण अ त आयग्यो अर उणर जीवण रा सोनलिया परभात जाण अडीक है।

ईनक हकारो भर लियो, कारण जाज र मालक आ भी क्वाइ क हाल जाज टुरण म जेज है मइनो, दो मइना लाग सक है। ईनक न भरोसो हो क इत्तं तई बीर पग री हड्डी पक्कायत सध जासी।

भगवान माथ ईनक री आस्था पैली बिच्च बधगी—"परमात्मा म्हारी प्राथना सुणली अर क्बूल करली, नई तो इसी आछी अर ऊची नोकरी घर बठा आवण न कठ पडी ही ? म्हारै मन री कमजारी कारण ई म्हैं अनी अर टावरा बाबत ऊधी तवडली ही। अेक वार चीण जाऊ परो तो ई माली हालत मे मोकळो फरक पड जासी। जे तीन च्यार चक्कर काढलू , फेर तो कवणो ई काई ?' धीर धीर हू आप अक जाज रो मालक बण जाऊ अर इण छोटै घर री जगा अेक आलीस्यान बगलो चिणवाऊ, टावरा सार ऊची जगा मे पढण रा परबध कर दू, घर मे नोकर चाकर रास दू। अनी खाली दख रेख कर लेव अर बासण भाड, पूस बुआरी भाट भडवाव रो काम अनी न नई करणो पड। पण जे हू गयो परो तो लारै सू अनी री सायता कुण करसी ? टावरा री निग कुण राखसी ? आन कीर भरोस छोडर जाऊ ? मुसाफरी करन आया पछ तो सुख रा साज-बाज जुटण लाग जासी, पण अबार बान अेकलपा छोडण माळो ई तो अेक सासो है।"

इनक जावण सातर योजनावा बणावण लाग्यो—"म्हारी नाव रो काई हुसी ? फालतू पडी रख अर टूट भाग, उण सू तो बेचणी ई ठीक है। पण वचू किया ? म्हारी नाव, हू तन बेचू किया ? सागर री उफणती खू सार छोळा माथ थार पाण ई हू राजस करतो रयो। थारै परताप ई कदेई घबरायो कोनी, कारण

मनै ठा ही क थार म ग्रसवार हुया पछै मन सतरो कोनी। म्हारी नाव, ज्यू ग्रेक घुड़सवार ग्रापर घुडल न जाण पिछाण, रास ढीलो दिया घोडो किण चाल चाल, रास सारया किसी चाल पकड, लगाम काठी करया काई फरक पड ग्रर ग्रेड लगाया किसा कमाल हुव, उणी तर म्हारी नाव, म्हैं तन मात भात सू जाणी, ग्रर थार कारण ई माइया म ग्रर ग्रेटल छेडल गावा ग्रर कनार माथ म्हारी चतराई ग्रर बादरी रो डको पीटीज्यो है। पण ग्रनी ग्रर टाबरा रा लार गू ग्राघो किया धिक्सी ? म्हारी नाव तन वचण र बिचार सू ई म्हारी छाती फाट, पण म्हारी गरीबी ग्रर ग्रमीरी री रळी, टाबरा री खुसाली री लालस्या मन थार सू ग्रळगो हुवण न मजबूर कर है।

फर ईनक सोच्यो—नाव वचर ग्रनी खातर चाईजतो समान मोलाय लसू ग्रर ग्रनी ग्रर टाबर ग्रापरो कामडो चलावता रसी।

ईनक रो पग जद साबळ हुयग्यो, ग्रर वो घरे ग्राया, तो ग्रनी मागती सामी ग्राई— ग्रर ईनक, वद घर छोड्यो हो हैं, पग र काई हुयग्यो ? निरी लागी दीसती ही ग्रव तो पीड काना ?' फेर ग्रनी मा नानडिय न ईनक रै सामो कर दियो। बी हाथ पसारया ग्रर बट रो वजन कू तर बीरा होळ होळ बुक्का लिया। बीर हाथा पगा ग्रर डील री बणावट निरखी, ग्रर बाप लडाव ज्यू बीन लडायो।

फर इनक ग्रापरो पग टूट्यो उणरी सगळी कथा सुणाइ। ग्रनी री ग्रारया ग्राग तिरवाळा ग्रावण लागग्या। बी दो-तीन वार ईनक र जख्मी हुया हो जिक पग न पपाळ यो ग्रर ईनक न ग्रापर काळज र चिपायो। इत्ता दिना सू ग्राया, पण ग्राखर ईनक ग्राय तो गयो, ग्रा सोचर ग्रनी सतोस रो सास लियो।

ईनक न चीण ता जावणो है पण ग्रनी जद इत्ता दिना उण न नीठ निरावळ पायर याल हुई ही तो उणर ग्राग ग्रेकाग्रेक चीण री जात्रा री बात छेडण री ईनक म होमत नई ही। रात भर किणी तर ईनक ग्रापर मनसोब न मसासर राख्यो, पण ग्रब दरसाया बिना पार किया पडती।

दिन उग्या पण ग्रा ग्रनी न ईनक र चरै माथ ग्रदीठ भाव दीसता हा। वा काम काज सार घर म फिर ग्रर घडी घडी वार मुड मुड न ईनक र मू ड सामी जोव पण काइ पूछण री होमत नई पड।

छेवट इनक कयो— ग्रनी, ग्रठ ग्रा म्हार कन बठ।'

ग्रनी लखगी क ग्रब कोठ ग्राळी होट ग्रावण ग्राळी है। वा डरू फरू हिरणी ज्यू ग्रायर ईनक र कन बठगी।

ईनक कयो—'ग्रनी ग्रेक बौत बन्यिा वात कऊ फायद रो वात सुख री बात, ग्राराम री बात।'

श्रेनी बोली—"इत्ती जिनसा श्रेक सागै कठ सू श्रायगी ? ईनक, तू जलदी कयदे म्हारो काळजो कणकलो थार चैर रै हावभावा मू उथळ पुथळ हुय रयो है।"

ईनक कयो—"श्रनी थारो सभाव बौत डरोक है। तन सावळ म ई कावळ सूझ। तू टावरा री मा हुयगी पण है हाल तू टाबर री टावर।" ईनक श्रा वात श्रनी न हसावण खातर कई ही, पण वा मुळकी तक कोनी।

ईनक श्रनी रै सामन गोडा सू गाडा श्रडायर वठग्यो। श्रनी माथो हेटो कर लियो। ईनक श्रापरी हथाळया मे श्रनी रो मूडो झालर ऊचो कर्या, पण श्रनी रा नण तो झुकयोडा ई रैया।

ईनक कयो—"श्रच्छ्या श्रनी, जे तू म्हारी वात सुणनी ई चाव कोनी तो फेर हू की खातर कसू ? मनै बात कवणी ई कोनी।"

थाडी ताळ तई दोनू चुप रया। छोटा टावरिया गूगा हुव ज्यू मा बाप सामो जोवता रया। फेर श्रनी कयो—"ईनक, तू बोल, थारी मन री वात सुणा, राक ना।

"हा, श्रनी, म्हारी वात डरावणी कोनी, हरसावणी ह साचेई श्रनी।" कयर ईनक श्रनी रै चर पासी भाक्यो।

श्रना थोडसीक श्राख उघाडी, पण ईनक री निजर सू निजर मिलता ई, भट श्राख पाछी हेटी करली।

ईनक श्रापरी चीण जात्रा श्रर वठ सू धन लावण री श्रर दा तीन फेरा म जाज रो मालक हुयन परवार री माली हालत सुधरण री सोनलिया तसवीर श्रनी र श्राग माडी।

ब्याव री वीटी पर्या पछ श्रनी श्राज तई कदेई ईनक सू लडी कोनी। लडी छोड, कदई श्रकरी ई वोली कानी। पण श्राज जद लाव विजोग री वात सुणी, तो घवराहट सू उण रा काळजियो कापग्यो। श्राज श्रनी पलडी वार ईनक सू लडी। पण श्रनी री लडाई मे नाराजी, करडाई, तीखाई जिसी कोई चीज कठ ही ? वा वोली—"इनक, म्हारा जीवण धन ईनक, म्हारो श्रर टावरा रो जीवण थारी टेक माथ टिक्योडो है। थारो विजोग म्हार सू श्रेक पळ छिन खातर ई सईज कोनी। जे भाग म लिख्योडो है, ता घरे वठा ई धन मिल जासी नई तो भलेई चित्ता ई तडफा तोडो करमा मे श्राधी रोटी लिख्योडी है, तो सापती दवण सिमरथ कोई कोनी। श्रापान तो भगवान दाळ रोटी श्राछी तर देव। पणा लोभ काई काम रो ? सतोस म सार है। लाभ मिनख रो गळा वटाव। परदस सू सापती कमायर लाव, उण सू घरे कमायोडी श्राधी लाग श्राछी।'

"पण अनी, अ टाबर'

अनी बात काटर क्यो— 'ईनक, टाबरा र भाग मे जे आधी लिखी है, तो आनै सापती कुण देसी ? ईनक, हू थार पगा पडू, थारी दासी हू, थारी चाकर हू, थारी चरणसेविका हू, मन थार चरणा मे रवण दे, थारा चरण म्हारै सू अळगा ना कर।'

आस्या अर नाक पूछता पूछता अनी रो रुमाल तर हुयग्यो। बा आपरी फराक सू आस्या पूछती बोली—"ईनक, सायद म्हारो कोई कसूर हुयग्यो इणी कारण मन सजा देवण न तू विदेस जाव है। हू म्हार कसूर खातर थार सू अेक वार नई, सौ बार, लाख बार, माफी मागू, तू कव तो जमी सू नाक रगडलू, पण म्हारा प्राण-बल्लभ ईनक, म्हार जीव रा जीव, हिरदै रा हिरदा, तू मन अर टाबरा न छोडर जा ना। म्हारी आत्मा कव—थारी इण जात्रा रो फळ आछो को नीसर नी। ईनक म्हारी बात मान। म्हारी दसा रा विचार कर, टाबरा पासी ध्यान दे, निरमोई ना बण।'

ईनक क्यो—'अनी, थारी बाता अकवारी तो कोनी, थार अेक अेक सबद मे सार है पण म्हार चीण जावण री पक्की जाच्योडी है, तू मन पाल ना, हू तो जासू तो सरी।'

ईनक आपरी नाव बेच दी। पीसा बट्या, वासू अनी खातर दुकानदारी रो समान लायो फेर कमर र अेक खूण मे लकडी री पाटकड्या खसोलर खण बणाया अर सगळो समान ठसाठस जचायर इया धर दियो ज्यू मटर री फळी म मटर हुव अथवा ज्यू बीज रै माय कुदरत र हाथ सू पौधो, पेड फळ फूल सगळा भरयोडा हुव।

इण तर वसोली सू हयोडी सू, ईनक दिन भर खटाखट खटाखट करी जद सगळो समान सावळ जचाईजियो। पण ईनक री आ खटाखट अनी र माथ मे वटीड उपाडती ही। बीन इया लखायो जाण ईनक अनी खातर फासी रो चबूतरो चिण है। अनी न वा खटाखट इसी लागी जाण अनी मरगी, अर बीर लार सोग म कोई वाजो वज है।

अनी की दुकानदारी जचावण र विचार सू ईनक आधी रात सू परबार भी काम करतो रयो। छेवट काम पूरो हुयो, अर ईनक न धापर थाकेलो आयग्यो। बिछावणा म गुडग्यो अर झट आख लागगी, जिकी फेर दिन ऊग्या सू ई खुली।

कमावरा खातर

आज ईनक री विदाई रो दिन आयग्यो। अनी रात भर मन मे माळा फेरी क ईनक री जातरा टळ जावै, पण ईनक धुन रो पक्को, हिमताळू आदमी। आपर खातर उण र मन मे रत्ती भर भी डर नई हो, हा जद अनी रा ध्यान आवतो क लारै सू ई मे फोडा नई पडै, तो फेर विचार मे पड जावता। पण वो तो परवार रो दाळद दूर करण माथै तुल्योडो हो। मन मे अनी री हालत रो विचार आवता इ वी भगवान न याद कर्यो—'हे भगवान ! तू मिनखा म है अर थार मे मानखो है। जद तू केई री सायता कर, तो केई न केई मे प्रवेश करन ई कर है, केई-न केई मिनख र घट म ई वडै है। थारी आस, थारै भरोस माथै ई हू अनी अर टाबरा न अठ छोडर जाऊ हू। इण तर प्रायना करतो ईनक भगवान र ध्यान मे डडोत करतो रयो। हे भगवान, म्हार माथ भलेई तू वज्जर पटक द तो ई हू घबराऊ कोनी, पण म्हारी अनी, म्हारा टाबर, आरी भोळावण तन है। तू सगळी दुनिया रो मालक है, सगळै ससार रो बाप है।"

ईनक कयो—'अनी, भगवान री किरपा सू आ जातरा आपा रा सोयोडा भाग जगाणसी, तगदीर खोलसी। अर देख, तू म्हार सामा भाव, आख्या गळगळी ना कर, म्हारी बात ध्यान सू सुण। म्हार खातर चूल सू राख हटायोडी राखे अर बास्ते जगायोडो राखे। अरे, तू निस्कारो क्यू हाल ? हू आसू, पक्कायत आसू। अरे गली, तन ठा पडमी जिक भू पली ई आय जासू। वा अे अनी, थार सू तो अ टाबर ई चोखा जिका रोव तो कोनी। तू स्याणी समभणी हुयर इया नणा री जोत घटाव ! तू थारा नण सावळ राखे। हू पाछो आयर फेर थारा नण कवळ जिया विगस्योडा देखणा चासू। आ नई हुवै क तू रो रोयर आरो नास कर लेवै।"

अनी जद बोलती तो हवामडळ मे वीण राज जिसा मीठा सुर विखरता। पण आज अनी री वीण रा तार ढीला हुयोडा, ढीला ढबळ, कै भकभोर्या सू सणखणाट भी नई नीसर।

फेर ईनक पालण न होळ सीक हीडो दियो जिण मे निमळो नानडियो सोयाडो हो। ईनक रयो—'अनी, जित्तो ई ओ छोटो अर दूबळा है, इत्तो ई मन

घणो वालो लाग । हू जातरा सू पाछो आसू जित्त ओ भी वडो हुजासी । म्हार सामो भागर आसी, हू उठायर गोदी लेसू बुक्का लेसू, फेर म्हारी साथळ माथ बठाणर विदेसा री बाता करसू । बान सुण सुणर ओ इचरज करसी अर राजी हुसी । क्यू, हुसीक नी अ नी ? '

पण अ नी र मू ड म आज जीभ को ही नी ।

ईनक कयो—' अ नी, हू जावण सू पली थार सू अ क चीज चाऊ हू—तू अ क वार, खाली अ क वार ई, म्हार सामन मुळक द ।"

जद इण तर आसावा सू भरपूर सोनलिया सपना लेवता अ नी ईनक न देख्या तो बीन आपन विस्वास बधण लागग्यो, अर ईनक री वाता साची लखावण लागगी । पण बात करता करता जद ईनक मल्लावा दई समदर री अर भगवान माथ भरोस री वाता करण लागग्यो, तो अ नी चकरायोडी सीक ईनक र सामो भाकण लागगी । बीन आ ठा नइ पडी क वा काई कव अर काई नई, ठीक उणी तर जिया गाव री अ क छोरी भरण मू पाणी भरण न आई । घडियो तो भरीजग्या पण वा सदेई घडियो भरण आळ प्र मी वावत सोच, जिको आज आयो कोनी । धडियो भरीजर पाणी बार बवण लागग्यो, इण री बीन ठा नई ।

छेवट विछुडण री वेळा नडी आई देखर अ नी हीमत करी, सरधा बटोरी अर बोली—"ईनक, हू जाणू हू तू स्याणो है, सगळा तन समभदार बताए पण तो ई म्हारी अन्तरात्मा कव, म्हारा ईनक, आ नणा न थारी इण सोवणी सूरत रा दरसण आज बिछुडिया पछ फेर हुवण रा कोनी ! "

ईनक कयो—"अ नी जे तन भरोसो नई है, तो आ बात न्यारी है, म्हारी तो आत्मा कव क हू थारो मू डो पक्कायत देखसू ।"

"देख अ नी' ईनक कयो, म्हारो जाज अठीन सू मगळवार न गुजरसी । तू पाडोस माय सू अ क दुरवणी मागर लिआजे, जिको तू मन देख सक । मन राजी राजी, हरखील न जावता देखर तू थारो सोच फिकर त्याग देसी इसो मन भरोसो है । '

पण जद वा छेक्डी घड या माय सू भी छेकडली घडी आई, तो ईनक अ नी न टावरा री भोळावण दी—' अ नी, आन सोरा राखे । दुकान रो ध्यान राखे । दो पीसा कमावण री चेस्टा करे जिक सू घर रो आघो धिकतो रव । ल देख म्हारी सौगन अब तो मुळक राजी रईजे भलो । म्हारो फिकर ना करे । अर जे मन मे टर ब्याप भी जाव, तो बीा भगवान र हवाल कर देईजे । ओर सगळा पळट जाव, पण भगवान तो आफ्त माय सू उबारन बार काढ़ । अर देख, हू जाऊ हू, तो

वठ किसा भगवान कोनी ? अठ है, जिको वठ ई है। जे हू अठ सू जाऊ हू, ता भगवान सू थोडो ई गया परो। अर श्री समदर भी ता भगवान रो है। भगवान रो है समदर। भगवान ई उण रो सिरजणहार है।"

अनी अणबोल, पण उण र नणा सू चोसरा भर। मूडो रोय रोयर रातो अर आख्या जळजळी करली। ईनक ऊभो हुयो। खिलखती अनी न आपरी लावी अर जोरावर भुजावा र घेर म बावली। इचरज सू चमगूगा हुयोडा टावरा रा बुक्का लिया। सगळा सू छोटकियो रातभर ताव म दडादोट पड्यो हो। अनी बीन चचेडर जगाणन लागी, पण ईनक बीन पाल दी—'अनी, ई न ना जगाण। इत्त छोटै टावर नै काई याद रसी ?"

ईनक बीर पालण र नडो गयो। अधर सोव बुक्को लियो। होटा री अवाज भी नई करी बीर जागण र डर सू। पण अनी माय सू अेक कतियो लाई अर छोटोडै छोर र लिलाड कनै सू केसा री अेक लट कतरनै ईनक न सनाणी खातर देयदी। ईनक क्यो—'हू पाछो आमू, जद ई न कमू देख, हू विदेस गयो जद तू अणसमझ हो, छोटो हो। हू थार केसा री लट लेयग्यो, आ देख। अर आपरी लट देखर पछ ओ कित्तो राजी हुसी, अनी ?"

इत्ती वात कई अर ईनक आपरी मुसाफरी र समान री पाट उठाई, हाथ हिलायो अर आपर मारग टुरग्यो, जाणै घरमसाळा नै छोडर बटाऊ निरमोई ज्यू टुर जाया करै।

अनी पाडोस माय सू अेक दुरबैणी मागर लाई, अर ईनक बतायो जिक दिन अनी ईनक न देखण री कोसीस करी। कीन ठा बीन दुरबणी सावळ जचावणी नई आवती ही, अथवा दुरबणी धणी तज नई ही अथवा रोवण र कारण अनी री आख्या कमजोर पडगी ही, अथवा बीरो हाथ धूजग्या हा। चाव काई हुवो ईनक जिको दिन अर जिकी वेळा बताई उण माफक बीरो जाज वठ सू गुजरग्यो। ईनक घणो ई हाथ हिलायो, पण अनी, लायण अनी, बीन देख नई सकी।

ईनक र गायब हुवत जाज री आखरी डुबकी तई अनी कोसीस करती रई पण ईनक दीस्यो कोनी, अर वा रावती कळाती घरे आयगी, जाण ईनक न दफणाय आई हुव।

पण अब घरे आयर जे मूडो लेयन पड जावै, तो किया पार पडै। लार सू काम चलावण खातर ईनक दुकानदारी रो परब ध करन गयो हो। पण बोपार रा काम अनो जिसी सीधी सादी लुगाई सू कद पार पडता ? जद काई ग्रायक समान मालावण न आवतो तो अनी सागी दाम बतावती। ग्रायक आपरी आदत र कारण दर मोलायी करता, अर सागी दाम सू घणाथोडी कीमत माथ बेच्या सू अनी न

पोसावतो कोनी, कारण वा पली घणा, अर पछ थोडा दाम नई वतावती। इण कारण ग्रायक अनी मन सू माल नीठ निरावळ खरीदता अथवा जद कोई दूजी दुकान खुल्ली नई लाधती, तो अनी र ढूकता। इण रो फळ ओ हुयो क थोडा दिना मे बिक्री वटटा वद हुयग्या। आखर किणी तर घर रो काम चलावण खातर अनी दुकान रो समान घाटो खाय खाय न वेचणो सरू कर दियो। मन मे घणी ई विचार आया क ईनक आयोडो ओळभो दसी, दुकान न केई तरै चालू राखू, पण अना री मैनत पार पडी कोनी।

घर खरचा चलावण खातर पीसा चाईज, पण धन आवण रा वारणा जडीजग्या आमदनी रो रस्तो रुक्यो। अनी टावरा रो दूध वद कर दियो। खाली छोटकिय न दूध पावती कारण बो मादो तातो हा अर हाल अन खाव जित्तो हुयो भी कोनी। आप दो टम री जागा अेक टम सू काम चला लेवती। कदेई कदेई तो निराहार ई टम टाळ देवती। पण मन म आसा रो दिवलो सजायोडो हो–ईनक आसी अर उण र दरसण सू ई म्हारा सगळा कस्ट कट जासी।

अनी चावती क ईनक आव जित्त वा आपरै तीनू टावरा नै जीवता राख लेव, पण मादोड टावर री हालत दिनोदिन विगडती गई। बीरा हीडा चाकरी करण मे अनी पाछ का राखी नी। मा न टावर रो हीडो जिण तर करणो चाईज, उण सू किणी भात कम घ्यान अनी नई दियो, पण फेर भी दुकानदारी र कारण बीनै कई वार टावर न छोडर बिच मे उठर ग्रायक न सौदो देवणो पडतो। आ भी हूसक क बीन दखाळण खातर चोख डाक्टर न फीसा देवण जित्ता पीस रो बीर कन टोटो हो अथवा रागी खातर जिकी जिकी दवाया री जरूरत पड, व खरीदण म वा असमथ ही। कारण काई हूया, आ ता भगवान न ठा है, पण पूरो घ्यान देवना थका भी लावी मादगी पछ अेक दिन जद अनी न ठा ई नइ पडी इण छाट टावर री निरदोस आत्मा निरळगी वय् पीजर माय सू पछी उड जाया कर।

००

अनासुरती मौकाण

आराम सू रैवण आळी अनी अब मगता जिसी जूण पूरी करण लागगी, आ बात फिलिप सू किमी छानी ही ? पण लोक लाज र कारण वो मन न मसासर रय जावतो। केई बार सोचतो–अबार अनी नै थोडी बगत है बीन सायता री जरूरत है, जे हू बीरी सायता करू तो काई आट है ? इसा विचार फिलिप र मन मे उठता, पण फेर सायता देवण रा परणाम काइ-काई निकळ सकै, आ सोचर वो पग पाछा मल देवतो। छेवट बी मन नै पक्को कर्‌यो—अरे फिलिप। तू मिनख नाव धरावै अर अनी रो हेतूला, अर अनी इत्ता रोभा देखै ! अेक पीसो बीर खातर मोर जित्ती कीमत राख। आज जे तू ई वीर आडो नई आसी तो थारो पीसो फेर कद काम आसी ?—इण तर आपरा विचार थिर करन फिलिप अनी र घर कानी टुरयो।

फिलिप घर मे गयो। बडत ई कमरा खाली पड यो हो। उण माय सू मायलै कमर मे गयो, अर अेक छिन खातर बारण कनै थम्यो। बारण कन ऊभो रयो। बारणो खडकायो, पण पाछो उथळा नई। थोडी ताळ अडीक्यो, पण कोई जवाब नई। तीसर और कडी खडकाइ, पण बारणो खालण न कोई को आयो नी।

जद मोकळी ताळ तई अडीकण र उपरायत भी कोइ बारणो खोलणन नई आयो, तो फिलिप अधर सीक आपई बारणा खोल्यो, पण बीरा पग बठ ई रुपग्या। लूगा बेस, कागसिया फेर्‌या नैं हफतो भर हुयग्यो हुसी। गामलिया मैला कुचेला अर भर भर कथा हुयोडा। नाड नीची अनी बठी ही, दुन म तळतळीज्योडी अबार खोटाइ छोर न दफणायर पाधरी आई ही। दोन बडोडा टाबर कन बठा बठा रोव। आपर दुख मे या इत्ती डूब्योडी क अबार चाव कोई आय जावो, या बीर सामो तक नई भाकती। जद बीन बम पड या कै काई आयो है, तो बी आपरो मूडा भीत कानी कर लियो, अर वा बमका फाट फाटर रोवण लागगी।

अनी न इण हालत म दखर फिलिप रै जीव म वाद वाकी नई रयो। बो बोल्यो—"अन, अनी, हू थ्रे अेक बात।"

अनी इण तर बठी रई जाण बी फिलिप री बात सुणी ई कोनी।

बो फेर बोल्यो-"अनी, हू फिलिप हू, तू म्हारी बात सुण कोनी ?"

अनी बोली कोनी, पण बी आपरी नस थोडी सीक घुमायी, जदपी फिलिप र सामन नई ।

फिलिप दो पावडा आग सिरक्यो, अर गळगळ सुर मे कयो—"अनी, अनी, आ आज हू था आर कन मगतो ब णर आ आयो हू। थारी कि किरपा रो भिख्यारी बणर।"

अनी बोली-"आव फिलिप, घणा दिना सू आयो । तै म्हारी किरपा री कोई बात करी ? मन भगवान किरपा करण जोगी राखी ई कोनी । हू इसी गरीबणी, अनायणी, तू सिमरथ, म्हारी काई खिमता क हू थार ऊपर किरपा करू ?"

अनी रा वेदना भर्‌या सबद सुणर फिलिप लजखाणो पडग्यो, अेकाअेक पाछो काई उथळो भी अकळ्यो कोनी, पण तो ई अनी सू थोडी ताळबात करण र ख्याल सू, बो बिना अनी र क्या ई, अनी र पसवाडै बठग्यो। थोडी ताळ चुपचाप बठो रयो। भटपट बात सरू करणी भी चावतो, कारण चुपचाप कन बठ जावणो भी अेक अरारणी बात है ।

फिलिप पूछ्यो-"अनी, अठ सू गया पछ ईनक रा कोई समाचार आया ? कद तई आसी ? मज मे तो हुवलो ? समाचार जरूर भेज्या हुसी ?"

अनी कैयो—'नई ।'

फिलिप– गया पछ अेकर इ को आया नी ? आ काई बात हुई ?'

अनी— 'हू काई बताऊ फिलिप ! परमात्मा जाण ।'

फिलिप-' पण वा इत्तो निरमोई किया हुयग्यो ? परमात्मा बीन राजी राख, बो इसी भूल करण आळो तो कोनी ।'

अनी— ईनक मन अर टाबरा न अकप ळ खातर ई बिसराव कोनी । जठ भी है, बो म्हान पक्कायत याद करतो हुसी । बा निरमोई कोनी फिलिप ईनक निरमोई कोनी । ईनक घणा आछो आदमी है, बौत खरो मिनख है ।"

'अनी" फिलिप क्या—"थारी बात सोळ आना ठीक है । म्हा दोना न आछी तर परखनै कर तै साच समभर दोना माय सू जिको इक्कीस हो, बीन छाट लियो । हू कबूल करू, ईनक म्हार सू लूठो पडतो हो अर जिको चीज बीर मन भाय जावती बीन पावण खातर वो धरती आकास अेक कर नाखतो अर जित्त बीरी रळी नई पूरीजती बो आराम सू सास नई लवता ।"

"हा, फिलिप, तू ईनक र गुणा सू वाकब है।" कयर ग्रैनी थोडी सीक ग्रापरी नस ग्रोर घूमायो। हाल भी बीरो मूडो फिलिप र सामनै तो को हुयो ना, पण ग्रब फिलिप न मूड रो पसवाडो दीसण लागग्यो। वो बोल्यो—"ग्रनी, विदेस-जातरा कोई मामूली बात थोडी ई है, ग्रर ग्राडो ग्रादमी तो विदेस जातरा र नाव सू ई घमक जाव। पण ईनक री छाती देख कै वो टुरग्यो, ग्रर हाल पाछो ग्रायो कोनी।"

"हा, फिलिप।" कयर ग्रनी ग्रापरी ग्रास्या पूछी जिकी घडी घडी यार ग्राली हुवती ही।

"पण ग्रनी," फिलिप कयो—"ग्रेक बात सोचण री है, ध्यान दवण री है। ईनक तन छोडर गयो है, नाना टाबरा न छोडर गयो है, थे बीन खारा तो लागता को हा नी। थे प्यारा लागता, इत्ता प्यारा, क थासू बेसी प्यारो, ग्रथवा थार बराबर प्यारो उणरै खातर इण धरती माथ ग्रोर कोई कोनी। पण फेर भी बो छोडर गयो परो। म्हार ख्याल सू बीन कोई वूबी तो ग्राई कोनी, ग्रेकाग्रेक सईड तो उपड्यो कोनी। ग्राखर गयो तो सोच समझर, धार विचारन है।"

"हा फिलिप।" कयर ग्रनी पाछो थोडो मूडो भीत कानी घुमायो ग्रर ग्रापरी ग्राली ग्रास्या पूछी।

फिलिप कैयो-'ग्रनी, ग्रा भी हू जाणू क लोग सल सपाटा खातर भी विदेसा जाया कर, पण लुगाई-टाबरा न लार छोडर सैल सपाटा करण ग्राळो ग्रादमी ईनक कोनी।"

"हा, फिलिप।" कयर ग्रैनी रोवण लागगी।

"ग्ररे ग्रनी, इया काई रोवण लागगी ?"

"फिलिप, ग्रबार म्हारो जीव उठ्योडो है। म्हारो छोटो छोरो गुजरग्यो, बीन दफणायर हू थार ग्राग-ग्राग ग्राई हू। म्हारी ग्रास्या ग्राग बीरो प्यारो प्यारो मूडो चक्कर काट। फिलिप, वो इत्तो मादो रैयो, पण कदेई रोवण रो काम कोनी।'

'ग्रनी, मनै माफ करे, हू तो ग्रनासुरती ई घर मे ग्रायग्यो। जे नानडियै री मन ठा हुवती, तो हू बतळावण कर्या बिना थोडो ई रवतो। थारा टावर जिसा ई म्हारा टावर। टावर तो सगळा न ग्राछा लागै।"

"फिलिप, जद इनक गयो, तो मन नानडियै री भोळावण देयर गयो। हू नाकामल मा सिद्ध हुई कै बीन जीवतो को राख सकी नी। जद ईनक ग्रासी, तो हू बीन काई कसू।'

फिलिप कयो—"ग्रनी, दुख री घडी म धीरज धारण कर्या ई पार पड। जे ग्रादमी दुख सू घबरायर रोवणो सरू कर देव, तो रोज रो कोई छेडो ई कोनी,

वधाव जित्तो ई बध जाव । गयोडी चीज पाछी ग्राव कोनी, ग्रा सोचर समभणा लोग मन न पाछो जमाव ।"

ग्रनी वोली– फिलिप, जीव न घणो ई जमाऊं पण जमै कोनी । थोडी सीक तपत सू ज्यू बरफ गळण लाग जाव, इणी तर नानडिय री थोडी सीक याद ग्रावते ई कोसीसा सू जमायोडो मन पाछो उखड जाव ।"

ग्रनी री ग्राख्या म फेर पाणी ग्रायग्यो, ग्रर बी छान सीक पू छ लियो ।

फिलिप ग्रनी र दोनू टाबरा रा मू डा थपथपाया, ग्रर फर ग्रनी सू छुट्टी लेयर बो फेर ग्रावण रो वण करतो–करतो उठग्यो ग्रर गयो परो ।

००

अरज

अेक दिन आडो घालर फिलिप फेर अनी र घरे आयो। अवकाळ बिना सर्कै वो मायल कमर मे गयो परो। अनी वीन देखर आपरा गाभा भडकाया अर थोडी सावळ वठती बोली–"आव फिलिप। वी दिन तू आयो, पण हू म्हार दुख सू इत्ती मारेल हुयोडी ही क थारी बात तो सुणनी बाकी रयगी, अर हू म्हारा ई रोवणा रोवती रैई। हा, आज बता, तू काई काम आयो हो वी दिन ?"

फिलिप कैयो–"अनी, हू थारी किरपा रो वरदान लेवणनै आयो हू। बस और म्हारी कोई चायना कोनी।"

"पण फिलिप, तै वी दिन आळी सागण बात आज फेर दुसराय दी। म्हारी, अभागण री किरपा चीज काई है ? बीरो मोल काई है ? बीसू काई बण विगड है ? तू चाव काई है, म्हारी समझ म आ को आई नी।" कयर अनी आपरी खुरसी माथलो गीदो फिलिप री खुरसी माथ बिछावण न हाथ बधायो। फिलिप 'नई नई" कयर अनी रो झलायोडो गीदो आपरै हेट बिछाय लियो।

फिलिप पूछ यो– 'अनी आज भी ईनक रा समाचार तो नई आया हुवैला ?"

नाड हेटी करती अनी बोली—"नई फिलिप।"

"अनी" फिलिप कयो, "म्हारै विचार सू ईनक टाबरा रो अर थारो घणो सोच करतो।"

'पण फिलिप, सोच करण री तो ईनक री आदत ई कोनी। बो तो मन मा सोच करण देवतो कोनी।" कयर अनी आज निरा बरसा सू फिलिप र सामन आख सू आख मिलायर भाकी।

"तू कव जिको बात तो ठीक है अनी, क वा सोच फिकर री बाता नई करतो, पण आखर बी री जातरा रो उद्देस्य काई हो ? ओ ई नी, कै टाबरा न सावळ पढा लिखायर मिनखाचारै बणावणा जिण सू कै व बीर विचव अर थार विच्च आछो अर सोरा जीवण विताय सकै। क्यू, म्हारी बात कूडी है ? जे कठई फरक लागतो हुव, तो तू चुप ना रये।" कयर फिलिप अनी र सामन भाकयो।

अनी सामन भाळ्या विना ई बोली—"फिलिप, थारी बात अेकदम ठीक है। वो सदेई टावरा नै पढावण री बात क्या करतो।'

फिलिप पूछ्यो— टावर पढ़ण जाव अनी ?" अनी बोली कोनी।

"म्हार ख्याल सू जावता को हुसी नी। अर फेर जे जाव है, तो घणी आछी बात। क्यू जाव काई अनी ?

अनी फर चुप।

थारी चुप्पी सू मन ठा पड क टावर हाल पढ़णा सरू हुया कोनी। अनी, जिको बाप आपर टावरा न आछा अर ऊचा बणावण र विचार सू परेसा मे राख छाणन न गयो है वो जे पाछा आयर देखसी क बीरा टावर सफा ठोठ रयग्या, अर जगळ म बछेड़ा कुन्डका मारता फिर ज्यू टप्पा खाव, तो सौ बरस पुग्या पछ कब्बर म भी बीरी आतमा कळपती रैसी।'

' फिलिप थारी बात बराबर है।" अनी बोली।

फिलिप क्यो— अनी, बाळपणो मिनखाजूण री सगळा सू घणमोली औस्था है। टावर रो माथो गीली सिरमट र लोध ज्यू है। जित्त तई सिरमट गीली हुव चत्तर कळाकार उण सू मू ड बोल जडो मूरत बणायर कळा रो नमूनो पेस कर सक। आडा कारीगर कू डी—ढक्कणा बणायर ई सतोस कर लेव। पण जे वो लोधो पड यो पड यो सूक जाव, तो बीरी कारीगरी अर कळा ग्रहण करण री सगती जावती रव। फेर ज बीन पाछो कूटर सिरमट बणाय लव, तो ई बी मे लोच तो आव ई नई सगती ता सवर ई नई।"

अनी विच मे ई पूछ लियो— इण सू थारो प्रयोजन ?"

फिलिप उथळो दियो— 'टाबरपण म दिमाग री पकड सवळी हुव। अेकर सावळ याद कर योडी बात फेर सजा-ई विसरीज कोनी। दिमाग म लचक भी हुव जिण सू करन भात भात री बाता रो भडार बडा या छोगा समावण री उण म खिमता हुव। ज्यू ज्यू ऊमर चम्नी अर फेर ढळनी जाव, दिमाग री आ सगती घटती जाव अर अेक वगत इसी आव, क आदमी न खुद आप र दिमाग माथ जू भळ आवण लाग जाव दूजा न आव जिक म तो इचरज ई काई ! अनी, जद औ बाळपण रो गुलाबी भोर बीत जाव फर मलेई कित्ती ई आख्या फाडो वा परमात वेळा तो हाथ आव ई कोनी।

पण फिलिप, तू कवणो काई चाव है ? अनी अमूझर पूछयो।

अनी , मू डो उतारया फिलिप क्यो 'भगवान तन दो टावर दिया है दोनू हुसियार लाग। पण जे अबार आर दिमाग सू काम नई लेईज्यो तो ब साद कागद ज्यू कोरा-रा-कोरा रय जासी। जद ईनक आसी, अर आन जगळी

जानवरा ज्यू डील मे पागर्योडा, पण अणभण्या दलसी, तो थीरी लाख कोसीसा रै उपरायत भी अै टावर की सीख नई सकला। इण खातर, अनी, म्हारी अेक अरज है, जिकी हू थारै आग करण न आया हू।"

'फिलिप, तू मन लजगाणी ना घाल। हू काई जोगा हू जिको तू मन अरज करै। म्हारो नादारी री हालत म तू म्हार सू वात कर है,'आ ई अेक थारी मरवानी है, नई तो दुख री वळा म नडा ई कुण अड ?" कयर अनी जमी कुचरण लागगी।

"अनी, देख आपा टाबरपण मे साग रम्योडा हा, अर अेक बीज न ठेट सू ई सावळ जाणता आया हा। हू तन अेक वात कऊ। देख अनी, तू नटे ना। जे नटगी तो तनै ईनक र प्यार री सौगन है। हू चाऊ क दोनू टाबरा नै इस्कूल म भरती करवाय दू। अनी, आ इत्ती सीक भीख अर आ ई मरवानी है जिकी हू थार सू चाऊ हू। कैयर फिलिप अनी र सामा भाक्यो।

अनी चुप।

'देख अनी, आ इसी गर सोच म पड जिसी तो कोई वात ई कोनी। टाबरा री पढाई सू ईनक नराज तो पक्कायत को हुव नी। उलटो वो तो मोकळो राजी हुसी। अनी, अेक बात तो आ है क म्हारै पीस टक्कै री कमी कोनी जिकी तनै ठा है। थार टाबरा खातर जे हू दो पीसा लगाय दू, तो म्हार की फरक पडै कोनी। इण र उपरायत ई जे थारै मन मे की विचार आवतो हुव, तो ईनक र आया सू भले ई तू मन, थार जच तो पीसा पाछा देय दिए। पण अनी, तू मन अब टाबरा नै भरती करावण दे।" कयर फिलिप अनी र वेट वाल्टर माथ हाथ फरण लाग्यो। वाल्टर री बैन मेरी भी फिलिप रै कन आयर अूभगी, अर वी लाड सू मेरी न आपर खाळै म बठाणी।

अनी हाल उथळो नई दियो।

फिलिप क्यो—"अनी, देख, अ किसाक सोवणा टाबर है! हा, तो बोल, तू अब मन काई कव ?"

अनी आपरा नैण भीत कानी करया बोली— हू आज म्हारी गरीबी अर साकड भीड र कारण इसी सूगली अर फूमड लागू हू क थार सामो मू डो करण री म्हारी छाती को पडै नी। ईनक र विजोग, अर ऊपर सू नादारी म्हारी कमर भाग नाखी। जद तू घर मे आयो, तो म्हार दुख रो दरियाव उमड्यो अर वी म्हारी सरधा तोड दी। फिलिप, अब थारी वात सुण्या सू म्हारै सरीर रो रयो सयो सत ई नीसरग्यो। पण फिलिप, म्हो मन पक्को भरोसो है कै ईनर जीव है। जद वा पाछा आसी, ता तू थार गरच रा विल ईार न भनाय ल्यै। ईना

केइ रो श्रौसाप मार्थ रासरा श्राळो कानी। वो थारी पाई-पाई उतार देसी। धन रो करजो पाछो उतारीज सक, पण फिलिप जिकी दया, जिकी उदारता तै देखाळी है बा उतरण री कोनी। जे हू म्हारी चाम री थार पगरख्या बणवाय दू, तो भी इणरो बदळो नई उतरै।"

फिलिप कयो—"ता अनी, हू श्रा समझलू क त म्हारी अरज कबूल करली, अर हू टाबरा न मदरस घाल दू ?'

अनी अब श्रापरो मू डो भीत कानी सू घूमायर फिलिप कानी कर्‌यो। नणा सू नीर झरतो हो जिण सू अनी रा गोरा गोरा गाल चिपचिपा हुयग्या हा। दीठी सावळ जमती नई ही, पण तो ई अनी फिलिप रै सामी झाकी, ऊभी हुई अर बोली—"फिलिप, म्हारी श्रोडी बगत मे तै म्हार टाबरा री बाव झाली है श्रान डूबता न उबार्‌या है, तो तन भगवान बधासी ठाकुरजी तन सुखी राखसी।' फर अनी फिलिप रै नैडी श्राई, अर फिलिप रो हाथ श्रापर हाथ मे झाल्यो अर श्रापरी क्रितग्यता जतावण खातर दोना हाथा सू फिलिप र हाथ न प्यार सू मसळयो। अेकाअेक अनी री श्राख्या मीचीजगी, सास ऊचो चढग्यो अर बा फिलिप रो हाथ छोडर लारल कानी, छाट सीक बगेच म गई परी।

अनी र स्पश स फिलिप र सरीर मे हळको-सीक बीजळी रो करट दोडग्यो हुव ज्यू लखायो। बी सोच्यो क हू सफळ हुयग्यो, अर म्हारो मनोरथ पूरण हुयग्यो। बीर डील मे चोगणी फुरती श्रायगी, अर बो अकास मे उडतो हुव ज्यू श्रापर घर कानी टुरग्यो।

००

स्याणा टाबर

दूजे दिन अंनी र घर आगे सू निकळती बगत टाबरा न फिलिप हेलो करयो। भट वाल्टर बारै आयो। फिलिप कागद मे लपटयोडो कपडा रो अेक बडळ झलावती बोल्यो—'थार अर मेरी सातर है। अनी माय सू आई, उणसू पैली तो फिलिप गळी ई लाघग्यो। अनी लार भाकी, पण फिलिप मुडर देखण री चेस्टा करी कोनी। कपडा लेवती अनी सवी जरूर, पण टाबरा न अनार्था रा हुव ज्यू कित्ताक दिन राखती ? नवा गाभा पर्‌या सू टावरा रै चरा माय गम्योडो नर पाछो बावडग्यो, अर दोनू रत्ती आळा टावर दीसण लागग्या।

वाल्टर पूछ्‌यो—"मा फिलिप म्हारै काइ लागै ?"

मेरी भी बोली—"मा, फिलिप म्हार काई लाग ?"

दोना र मूडा सू सागी सवाल सुणर अनी पली तो सरमीजगी फेर मुळकी, अर बोली—"फिलिप साब कित्ता चोखा आदमो है।"

'हा, मा, चोखा तो है, पण म्हारै काई लाग ?" वाल्टर फेर पूछयो।

मेरी बोली—"हू बताऊ काई लागै। आपारै लाग फिलिप चाचाजी।'

वाल्टर कयो—"लाग चाचाजी, ठा घणी, हा मा, तू बता। आ मेरी तो भट बिचाळ बोलण लाग जावै।"

अनी कैयो—"बैन री बात ठीक है बेटा ! अ थार चाचाजी लाग।"

वाल्टर नई तो कबूल कर लेवतो पण पली मेरी बताय दियो, इण सू वाल्टर र कबूलण री कम जची। बी कयो—"मा, तू तो हरेक बात मे मेरी री हां मे हा रळाय देव। मनै साच बताव, फिलिप साब म्हार काई लाग।"

"अच्छया, जोजफ साब थार काई लाग ?" अनी वाल्टर कन सू ई न्याव करावण खातर पूछ यो।

"जोजफ साब ? ब तो चाचाजी लाग।' वाल्टर कयो।

तो फिलिप साब भी चाचाजी लाग।" मेरी बोलगी।

'अरे तू ना बोल म्हारी बडी बन। थार जित्ती अक्कल ता म्हार म ई है।

थार सू वसी भले ई हुवो धाटू कोनी।' क्यर वाल्टर मेरी र सामन ग्रापर नवा गाभा म ग्रक्डर ग्रूमग्यो।

ग्रनी पूछयो— 'जोजफ साव थार काका काई हिसाव सू लाग ?"

'क्यू मा, तन किसी ठा कोनी ? जोजफ साव ता बापू रा भायला है। वाल्टर मेरी र सामन भाक्यो क मई इसा इसा सवाला रो उथळा तो मन ई देवरणा ग्राव है।

मेरी वोली—"म्हार सामा भयू ग्रकड है, वाह मई वाह, तू ग्राछो माई हुयो। बन र ग्राग कोई भाई इया ग्रापरी सान दखाळया कर ?"

ग्रनी क्यो—'ग्राछ्या बन भाई ग्रापस मे जिद कर कोनी, भगड कोनी। थे तो दोनू स्याणा हो फर ग्रा काई वात ?'

वाल्टर की बोलरण ग्राळो हो, परण ग्रनी बिचाळ बोलर क्यो—'ज्यू जोजफ साब थार बापू रा भायला है नी, बिया ई फिलिप साब थार बापू रा मायला है। ग्रब बताव,फिलिप साव थार काई लाग्या। थारी ग्रक्कल री पारख कर, बोल देखाण।

फिलिप साव चाचजी लाग्या, ग्रौर काई लाग्या। क्यर फर वाल्टर गरव सू मेरी सामो भाक्यो।

इत्त म मेरी बोली— चुप, फिलिप काकाजी ग्राव है। वाल्टर सामन भाक्यो, ग्रनी ग्रापरा कपडा भडकाया, जित्त फिलिप माय ग्रायग्यो।

वाल्टर क्यो—'काकाजी थे देयग्या जिका कपडा इत्ता चोखा है इत्ता चोखा क काई बताऊ ?'

फिलिप वाल्टर न गादी मे उठायर बीरा लाड करण लागग्यो।

वाल्टर रा लाड हुवता देखर ग्रेकर-सीक ग्रनी र गाला माथ थाडो सोक सतोस भळक्यो, परण सतोस री रेखावा इत्ती खीरण ही क फिलिप न वारो पतो पड्या पली ई ब विलाइजगी।

फिलिप पिलग माथ बठग्यो। ग्रेड-छेड मेरी ग्रर वाल्टर बठग्या। सामल मूढ माथ ग्रनी पसवाडो देयर बठगी।

फिलिप खुज माय मू दो विस्कुट काढर'पूछ्यो "वोलो, बिस्कुट कुरण लेसी ?'

फिलिप रो सवाल पूरो हुया पळी ई वाल्टर बिस्कुट भपटर लेय लियो ग्रर गटकावरण लागग्यो। मेरी ना तो बोली ग्रर ना बीन वाल्टर री मगताई ग्राछी लागी। वा फिलिप सू निजर बचायर वाल्टर सामी करडी करडी भाकी परण वाल्टर बीरी परवा करया बिना बिस्कुट खावतो रयो।

फिलिप मेरी सामो बिस्कुट कर्‌यो। बी ग्राख्या हेटी करली। वाल्टर कँयो—"चाचाजी, ग्रा नई लेवँ, तो मनँ देय दो। नई लेव जिक रा नोरा नई करणा।"

फिलिप हसरण लागग्यो ग्रर बी खु ज माय सू दूजो बिस्कुट काढर वाल्टर न फेर दियो। फेर मेरी नँ कँयो 'लेयलँ बेटी।' मेरी दबो ग्राख्या मा सामी भाकी, ग्रर बठीनँ सू जद हकारँ री सन मिलगी, तो मेरी बिस्कुट लेयर ग्रापर हाथ मे राख लियो। फिलिप कँयो—"खा ले बेटी, हाथ मे बिस्कुट खराब हुजासी।" मेरी बात मानली, ग्रर थोडो थोडो बिस्कुट तोडरण लागगी।

ग्रनी माय गई, पाणी री गिलास लाई, फिलिप न धामो ग्रर बो पूणी गिलास पीयग्यो। गिलास नँ धोयर ग्रनी ठोड ठिकाणँ मेलर पाछी ग्रापरी जगा ग्रायर बठगी।

"थे ग्रा बतावो कँ था दोना माय सू घणो स्याणा कुण है?" फिलिप पूछ यो जिक सू पली वाल्टर उथळो देय दियो—"हू।"

इत्तँ मे तो बारी माय सू केई टाबर दीस्या जिका बस्ता लेयर पढणनँ जावता हा। फिलिप कयो—"स्याणा तो ग्र टाबर है।"

वाल्टर पूछ यो, "क्यिा चाचाजी?"

"ग्ररे भई, ग्र पढणनँ इस्कूल जावँ।" कँयर फिलिप वाल्टर रा हाट चूम लिया।

"इस्कूल जावँ जिका स्याणा हुव? ता मा मनँ ई इस्कूल भेज, हू ई पढण न जासू, स्याणो बणसू।" फेर वाल्टर मेरी न कयो—"मेरी, जे स्याणी हुवणी चाव, तो तनँ भी इस्कूल जावणो पडसी।"

"हा, मा," मेरी कयो—"हू ग्राप इस्कूल जासू।"

●●

फिलिप बापू

दोनू टाबरा न मदरस घाल दिया, अर मास्टरा न चोखी तर मोळावण देय दी कै हाल नवा-नवा है जित्त थोडी हिंयाळी सू पढाव। पढण्न जावण सू पलीं टाबर अेक्र फिलिप री चक्की आव। हसी-तमासा करन फेर मदरस जाव। दोपार री छुट्टी मे फेर फिलिप री चक्की आव। मन भावतो दोपारो करन फेर पाछा इस्कूल जाव। जद घर री छुट्टी हुव तो फेर पाछा कळचक्की मांयकर आव। फिलिप काम मे लाग्योडो हुव अर अनी री राजी खुसी रा समाचार पूछ।

अनी सू मिलण खातर फिलिप रो मन छपपटावतो, पण अनी न लोग हळकी नई क्वण लाग जाव इण डर सू बो अनी र घरे नई जावतो, अर टाबरा सू समाचार जाणर ई जीव नै थावस देय लेवतो। कित्ती ई वार वीनै अनी सु वाता करण री, बीर कन बठण री, रळी आवती, पण लोक-लाज र कारण बो मन माथ कबजो राखतो अर घर म बडणो तो अळगो रयो, अनी री गळी मे ई पग मेलतो कोनी।

पण अनी खातर बीरो जीव अडतो रवतो। अनी री सायता करणी चावतो, पण कर नई सक्तो। कठई अनी आ नई सोच क फिलिप मन गरीब जाणर म्हारी सायता कर—इण बात रो वडो ध्यान राखतो। बींनै ठा ही कै अनी रै घर मे रोटी री जुगाड कोनी पण फेर भी खुल्ल रूप मे बो सायता करणी चावतो कोनी। जद टाबर घरे जावता तो वार साग दो दो तीन-तीन सेर आट री पोटळी बाध देवतो। मेरी न कवता—"तू अनी नै क्य दिए क नवी फसल रा गऊ आया है, आरी रोटी घणी सवाद हुव इण कारण फिलिप चाचाजी आटो भेज्यो है।' इणी तर घर री गाय रा कयर माखण भेज दिया करतो। 'बौत फाइन" कयर कपडो भेज दिया करतो। कदेई गुलाब रा पुसब भेजतो—इण बसत रा अ पलडा पुसब है। कदेई कवतो—अ जावतो बसत रा पुसव है। केई बार सुसिया भेजतो—इण जात रा सुसिया कठ-सीकई लाध।

टाळता थका भी कदेई सीक तो फिलिफ अनी सू मिलण नै पूग ई जावतो। फिलिप न भरोसो हो क अनी अव बीसू घुळ मिलर बाता करसी, हससी, बोलसी पण आ बात नई हुई। फिलिप र उपकार अर सनेव रै बोझ सू अनी रो हिरदो

इत्तो गदगद अर दब्योडो हो क जद फिलिप मिलण न आवतो, तो अना उण सू पूरी बात ई नई कर सकती। वो जद कोई बात पूछतो, तो 'हां' अथवा 'ना' मे उथळो देय देवती अथवा जे सरतो हुवतो तो टिचकारी अथवा नस सू ई काम काढ लवती।

अनो चाव फिलिप सू बात करो या ना करो, अनी रै टाबरा खातर इण धरती माथ फिलिप सू बालो दूजो कोई सकस नई-हो। जद व आपर घर मे हुवता, तो फिलिप कनै जावण न तोडावण लाग जावता। जद फिलिप कन जावता, तो जोर सू हाका करता, दडबड दडबड अडोदडी चीर माय पड जावता अर आपरी मीठी बाणी सू फिलिप र घर न आणद सू भरपूर कर देवता। फिलिप रै घर म च करता ज्यू हुवतो, बारी इछया रै खिलाफ अेक पत्ता ई नई हिलतो। घर-धणी जाण टाबर ई हा, फिलिप तो बारो मुनीम हो। फिलिप र किरपाळू बरताव टाबरां र हिरदा न इण भात जीत लिया क बानै फिलिप बिना पळ-छिन खातर आवडनो दोरो हुयग्यो, अर आप र भरपूर प्रेम र कारण, काई ठा कद सू, बा 'फिलिप काकाजी' कवणो छोड दियो अर 'फिलिप बापजी अर 'बापजी तथा 'बापू' कवणो सरू कर दियो। फिलिप भी इण बात रो पूरो ध्यान राखतो कै उण रै बाप-पण मे किणी भात री कसर अथवा कमी नई रव। टाबरा री छोटी-सू-छोटी सिकायत माय भी वो कान ढेर देवतो, अर बीन अळगी करण री कोसीस करतो। वो टाबरां साग टाबर बण जावतो। वासू कूडेई-कूडेई रीसाणो हुवतो, फर पाछो राजी हुवतो, अर जोर-जार सू हसतो तथा हसावतो।

अब ईनक न गयै नै दस, पूरा दस बरस गुजरग्या, पण कोई पुरजोक समाचार पावण रो काम कोनी। टाबरां अब मा न पूछणो छोड दियो क कद आसी, अर बै धा ई समझण लागग्या कै फिलिप ई बा रो बाप है।

टावरा री रली

सरदी री रुत । ढळतो दिन । टाबर हेजल र जगळ म फळ तोडण नै जाव । टावरां न जावता देख, मेरी अर वाल्टर भी जावण रो मनसोबो बांधर मा कन गया । वाल्टर कयो-' मा आज तो सगळा टाबर फळ तोडण सातर हेजल क मा र जगळा म जाव ।"

तौलिय री निवार खांचती-खांचती अनी कयो-' हू । मेरी कयो— 'आपा ई चाला मा ।

अनी फेर कयो— हू ।"

' तो कपड़ा परन त्यार हु जावा ? ' वाल्टर पूछ्यो ।

अब अनी रो ध्यान पळट्यो । वा सामन भांकर बोली—'काई बात है ?"

वाल्टर कयो—"हैजल वन हालां ।

अनी—' नई बेटा ।"

मेरी—"सगळा जाव, मा ।"

अनी—' सगळा न जावण दे । आपा र सगळां री होड थोडी ई है ।"

वाल्टर— पण मा, चाल तो काई हुव ? आपां तो कदेई चालां ई कोनी । दूजा टाबर तो ई मौसम मे छुट्टी आळ हरेक दिन जाव ।'

मरी-"मा म्हे तो हाल हेजल-वन देख्यो कोनी । इस्कूल म म्हारी सहेल्या कवती क व तो सुपार्‌यां रा भोळ भर भरन लाव ।'

अनी बोली कोनी अर ढोलियो विचाळ छोडर बा अर्धविच्य ढोलियै माथ गुडगी ।

वयू चालसी नी मा ?" वाल्टर पूछ यो ।

अनी चुप ।

मेरी वाल्टर न मन करी— हा, हा हालसी, हालो कपडा परा ।

दोनू जणा कपडा पर-परायर अनी र ढोलिय कन आयर ऊभग्या ।

मेरी- 'म्हे त्यार हुयग्या । तू थारा गाभा बदळ ल ।'

टाबरां रो इत्तो मन देखर अनी सू नटीज्या कोनी। बा कपडा परण लागगी।

जद कपडा परन त्यार हुयगी तो वाल्टर कैयो–"बापू न साथ ले लेवां ?'

"क्यू, फिलिप काई करसी ?" अनी पूछयो।

वाल्टर कैयो – "मा, फिलिप बापू म्हानै चोखा घणा लागै। म्हांसू तमासा कर। बै साथै हुसी तो घणा मजा आसी।"

अनी बोली कोनी।

मेरी कयो–"म्हे बुलायर लावां।"

अनी पाल्या कोनी, अर ब दोनू सैंपूर घान सू हाफता-हांफता फिलिप री चक्की पूग्या जठै आट सू धोळो धप्प हुयोडो सतमाखी ज्यू फिलिप आपर काम म जुटयोडो हो।

आप र कपडा रै आट री खे लागण री परवा करया बिना ई वाल्टर फिलिप र मगरां र बारकर आपरा हाथ पूग्या जित्तो घेरी घाल दियो।

'अरे अबार कपडा-लत्ता परन कियां आया ? कठैई जावण री त्यारी है काई ?' कयर फिलिप आपरा हाथ झडकाया, अर वाल्टर र गाभा माथ लाग्योड आटै न उतारयो।

वाल्टर फर फिलिप र चिपग्यो, अर कैयो– 'हा, चालणा है, झट काम छोडो, कपडा परा।'

फिलिप वाल्टर रा गाल हाथां मे दबायर, थोडो मुळकर फर चक्की रै काम मे लागग्यो।

मेरी क्यो– 'बापू फुरती करो, आपां नै हेजल बन म हालणो है।"

क्यू –आज काई है हेजल-बन म ? फेर कदेई हालसा।' फिलिप कयो।

"नई, बापू, आज हालणो पडसी।" मेरी सामनै ऊभर बोली।

"पण आज म्हार काम घणो है। लोगा रो पीसणो आयोडो है। टैम माथ आटो नई दीरीजसी तो ओळमो आसी।" कयर फिलिप आटो तीलण मे लागग्यो।

वाल्टर क्यो–"हा, बापू, हू जाणू। थान हालणो नई हुव जद थे काम घणा, रो मिस कर लिया करो हो।"

फिलिप हसर वाल्टर र मगरां मे अेक देखावटी, कस्योडो, पण चोट करण मे पोला-सोक मुक्को लगायो। वाल्टर हसर मगरां मे खाडो कर लिया।

मेरी कया–' बापू, काम तो थोमस कर है, थे हालो परा तो काई हुव ?'

मरी अब बडी हुवण लागगी। फिलिप नै बिचार आयो क नकारो करयां ई री क्वळी भावनावां न ठेस पूगसी। इण करण मेरी न समझायर कैयो–"देख बेटी,

मा दिना काम की बेसी है, अर अेकलै आदमी सू आटो पीसणो, रुक्का काटणो आटो तोलणो, अ सगळ काम सावळ ताव आव कोनी। अर देख बेटी, जद नोकरा र भरोस काम छोड देऊ तो लार सू ओळमो ई आव। नोकर आख्या आगै तो फेर ई आख्या री सरम सू, आपरो काम करता रव, अर ज्यू ई बात पोल लाध, ब गडबड गोटाळा कर ई देव।

बापू, नीठ तो म्हा मा न हालण खातर त्यार करी, अर जद म। हुकारो भर लियो, तो अब थे अडग्या।' कयर मेरी आपरी परेसानी देखाळी।

अनी रो नाव सुणता ई फिलिप र हाथ मायली कुडछी आट र ढोल म ई छूटगी। "तो अनी भी हालसी ?' बी इचरज अर कोड सू पूछयो।

"हा हालसी बापू थे फुरती करो। वाल्टर ताकीद करी।

हण म्हारो हालणो ठीक को रव नी। सायद अनी र म्हारी जच नई जच। थे दोनू ई अनी र साथ जावो परा।" कयर पाछ उथळ खातर दोनू टाबरा सामो भावयो।

'अरे बापू मा न पूछर तो म्हे अठ आया ई हा। था तो कपडा परयोडी थान अडीक अर थे टाळमटोळ करो। बापू, थ चोखा आदमी कोनी। कयर वाल्टर फेर फिलिप सू लिपटम्यो।

फिलिप आपरो डील झडकायो। दूजा कपडा परया। नोकर न भोळावण दी— हू अबार आऊ। पीसणो बराबर करतो रये। घट्टी खाली नई रगडीज इण रो घ्यान राखे। पीसा टक्का गिणर गल्ल म घाल दिये।"

मेरी अर वाल्टर दोना फिलिप रो अेक-अेक हाथ झाल लियो अर करण लाग्या—"हालो बापू हालो हालो बापू, हालो।'

◆◆

फेर हेजल-वन में

आज कित्ता ई वरसा पछ अनो नवा गाभा परया हा, इस कारण वीनै आपन अपरोगा सा लाग्या । वा काच र सामन ऊभी, तो हाल वीर चर सू जवानी रो नूर ढुळतो दीसतो हो, पण ईनक री गैरहाजरी मे सजधजर निकळण म वीनै सरम लखाई । जद वाल्टर भागतो भागतो आयर बोल्यो -- 'मा ताळो ढक, बापू आयग्या', तो अनी कयो — थे तीनू आग चालो, हू आऊ हू ।"

फळ ताडण खातर थेला अर गडा लेयर टाबर फिलिप साग टुरग्या । व चाळीस पचास पावडा गया जित्त अनी ताळो ढकर हेजल बन कानी रवाना हुयगी ।

फिलिप लार भाक्यो । वाल्टर कयो--' वा देखो बा आवै मा, मुखमली फराक अर लाल मोजा परयोडी । बापू मा आज कित्ती फूटरी लाग । म्हे तो इना कपडा मे कदेई मा नै देखी ई कोनी । आ तो वादा पुराणा गाभा रावै ।'

फिलिप चाल थोडी मधरी करदी । अनी तो पग खाथा धरती ई ही । बा बान पूगगी ।

वाल्टर कयो— 'देख मेरी हू म्हारै फळां माय सू तन अेक ई नई देऊलो । तू थार यारा तोडे, अर भेळा करे ।

मेरी बोली--' भाई तू भले ई मन न दिए पण हू तोडसू जिका मांय सू तूं थार जचै जित्ता ले लिये । तू म्हारो भाई है नी ।'

वाल्टर कयो--"बन हू तो तमासा करतो हो, आपा दोनू रळर ई तोडसा अर साग ई भेळा करसा अर खासा ।"

फिलिप वाल्टर रो हाथ झाल लियो—' देख बेटा पग रपट जावलो गोडा भाग जावला, म्हारी आंगळी झाल ल ।"

वाल्टर अेक बार तो आगळी झाल ली, पण फेर पाछी झट दैणी छोडदी अर आपरी मरजी सू भाग मागर पाड माथ चढणो सरू कर दियो । अनी लार सू हेला कर--"वाल्टर, धीरै चाल ।" वाल्टर लार झाकर मुळक दियो --' भई मा, अब हू बडो हुयग्यो तू डरै जिसी कोई बात कोनी ।'

जद पाछ रो आधीटा आयो, तो अनी हांफगी अर पूरी कोसीस रै उपरायत भी वींरा पग उठणा बंद हुयग्या । बा बोली– फिलिप, म्हार डील मांयकर अेकाअेक सण्णाटो नीसरग्यो अर म्हारा सरधा टूटगी । हू अठ ई थमी थाऊ ।'

"हां, हां, कोई आट कोनी । जगा चाखी है, आराम कर थनी !' कयर फिलिप अनी र साग बठई ठरग्या । छोटा टावर बठ सू ढाळ म उतरग्या ।

वाल्टर कयो–' मरी, मेग, अो भाड कित्तो सडालूम हुयोडा है । पण म्हारो तो हाथ इत्तो ऊचो पूग कोनी, तू तोड तोडर म्हार पल्ल म घालबो कर ।

मरी बोली—' ला सू , मन गडो द । फळ तोडण खातर तो आपां गडो लाया ई हा । हू आ डाळी गेड मे अडायर धधूणी देऊ फर सू देस अजा ।'

मरी धधूणी लगाई अर धडाधड फळां रा बिरखा हुवणो लगाई । वाल्टर अर मरी खूब फळ भाव अर थलां म भर । अेक पेड गूत लेव, तो दूजोड माथ ढूक, दूजोडो साफ कर लेव तो तीजोड माथ पूग ।

वाल्टर अर मेरी जियां और भी घणा ई टाबर फळ तोडण खातर अर भेळा करण मे जुटयोडा हा । व आपस मे बातां कर अेक दूसर न हैला कर, औड झगडो भी कर इण तर टाबरां री बोली सू सगळा हेजल-वन गू जण लागग्यो ।

अनी न याद आया क आज सू केई बरसां पली, हेजल-वन र पाड री इणी जगा, बा ईनक र साथ अठ आराम अर आणद म बठी ही । ईनक रै साथै सुख सू काट्योडा व पळ याद आवण र कारण ई अनी रा पग आग उठणा बंद हुयग्या हा ।

फिलिप अनी र कन तो बठग्यो, पण बो आ बात बीसरग्यो क बारै कन अनी बठी है । वीन वो दिन याद आयो जद, आज सू केई बरसां पली माद बाप री चाकरी र कारण, हेजल वन म मोडा पूग्यो, अर आग आयर देख तो उण री प्रेयसी अनी ईनक र साथ गळबाखडी घाल्या इणी जगां बठी है अर ईनक रो मूडो अनी रा लालचुट्ट होठ चूमण खातर झुकयोडो है । फिलिप न याद आयो क उणर काळज मैं कित्ती करडी चोट पूगी ही, अर उण चोट रो वार छाती में लियां लियां बो चोर ज्यू किण तर चुप चाप बठ सू सिरक्यो हो । उणी बगत सू ईनक आग आयग्यो अर बो ईनक सू लार रयग्यो हो ।

अनी आपर बिचारा में डूब्योडी रई अर फिलिप आपरी उण काळी घडी में ।

फर फिलिप मायो उठायर बोल्यो 'देख, ग्रनी, व किसा रमै खेल है। प्रवाज सुणीज है नी बा री। प्रो देख, वाल्टर बोल । ग्रा देख, मेरी री प्रवाज प्राई।'

ग्रँनी बोली कोनी, सायद बी सू बोलीज्यो ई कोनी।

'इत्ती थक्गी ग्रनी ?" फिलिप पूछ्यो।

ग्रँनी ग्रबोल।

"हा थक्गी ग्रनी।' फिलिप क्यो।

ग्रँनी बोली कोनी बी ग्रापरो मूडो हेठो कर लियो ग्रर हथाळयां मे घाल लियो।

फिलिप क्या— 'ठोक हैं ग्रनी, थार जच ज्यू कर। तू थारी मरजी री मालकण है पण ईत्ती म्हारी कयोडी ध्यान म राखल क तू ग्रो काम ग्राछो को करँनी। ग्रा बात मानू कै थारो ईनक नई ग्रथाग सनेव हो, ग्रर ईनक भी तन भरपूर सुख दियो ग्रर ग्रौर सवायो सुख देवण खातर ई लाई बिदेसां गयो, पण हाण लाभ किसा मिनगा र काबू म थोडा ई रव। जे ईनक रो सरीर कायम हुवतो, तो बो ग्रबार तई ग्रठै ग्राया बिना, थारै सू ग्रर थार टाबरा सू मिल्या बिना कोई भाव को रखतो नी। पण जद बो ग्रायो कोनी इण रा ग्ररथ ग्रापेई समझ म ग्राय जावणो चाईज।'

"मन टाबरा सू भी मालम पडी है क तू हरदम ईनक न याद करती रव ग्रर उण री याद मे केई बार कास ई बठ कोनी। कित्ती ई बार तू जाज देखण खातर समदर र कनारै जाव। पण ग्रनी, काई तो ग्रक्कल सू काम लै। परमात्मा कीं तो तनै ग्रक्कल दी हुवैली का थारी खोपडी सफा खाली है? 'जाज, जाज! कठ है जाज? दस बरस गुजरग्या! जाज तो डूबग्यो! हू कैऊ ग्रनी क जाज डूबग्यो। जे ईनक रो जाज नई डूबतो, तो बो ग्रठ ग्राया बिना किणी हालत नई मानतो।'

'ग्रँनी, ग्रँ टाबर दीस तो मन तगदीरधारी है पण काई न कांई पुयाई माडी भी लाग। ऊगता ई तो बापडा बाप सू बिछडर ग्रनाथ हुयग्या, ग्रर तैं जे ईनक र बिजोग म झुरझुर नै सरीर छोड दियो, तो ग्र जायक ग्रनाथ हुजासी। ग्रँनी, इत्ती निरदयी ना बण, थार जायोडा माथ तो दया राख। साच तो सरी जे तैं ग्राख मींचली तो फेर ग्रांरो धणी धोरी कुण है।"

ग्रँनी बोली— 'ग्रबार मन ईनक रो ध्यान को ग्रायो नी पण टाबरा री ग्रवाज म्हार काना मे पडता ई हू बिचार मे पडगी— ग्रेक बगत तो वा ही जद

थारो बाप ग्रान रुपिय क्वा करावता । इत्त मे मी बीन सतोस नई हुयो, जद वा विदेसा कमावरण न गयो, मन म ग्र सपना नेयर क पाछो मालोमाल हुयर ग्रासू ग्रर म्हार टाबरा न मिनख बरणासू । फिलिप वित्ता निरथक ग्रर कूडा हुव मिनख रा सपना । ईनक रा लाडला ग्राज पारका री दया माथ पळ ।—मन मे इरण बिचार र सागै ई म्हार मन म भूनवाड लखावरण लागगी ।"

ग्र नी री वात सुरणर फिलिप ग्र नी र नडो सिरकग्यो ग्रर बोल्यो—"ग्र नी, हू तो ग्रेक बात क्वरणी चाऊ । म्हार दिमाग मे ग्रा क्द सु है, ग्रा भी मनै ठा कोनी । हू निरी वार सोचू क तो कऊ, पण म्हार सू कैईजे कोनी । ग्राज म्हार जचै है क म्हारै मन री बात वार निकळी चाव । ग्र नी, जे तू ठ डै दिमाग सू सोचसी, तो थारी समभ मे ग्रापेई ग्राय जासी क जिको सक्स दस वरसा पली गयो, ग्रर गया पछ जिक रो कोई सनेसो या समाचार ई ग्रावरण रो काम कोनी, बा जीवतो हू सक ? की भाव ई हूसव कोनी । हा तो ग्र नी हू म्हार मन री बात क वरणी चाऊ । ग्रब तू मन कैवरण दे—

"ग्र नी म्हार कनै रुपिया है, पीसा है, नोकर है चाकर है । ग्राछ सू ग्राछा गामा परगान ग्रर ग्राछ सू ग्राछो भोजन मनै जीमरण नै मिल । इसी कोई मी जिनस कोनी जिकी ग्रेक ग्राछ ईमानदार मिनख कन हुव ग्रर म्हार कन नई हुवै । ग्रठीनै तू थार कानी देख । ना मिनखाचार री रोटी, ना गाभा । ईनक गया पछ तू जूरण सीक पूरी करै । सगळा लोग घूमरण फिररणन, सल सपाटै मे जावै, पण थार खातर जाणं ग्रै चीजा मना है । थारी इसी हालत मन बरदास को हुव नी, पण दुनिया रो डर मी लागै । मन म हुवता थका भी हू थारी सायता, करणी चाऊ ज्यू कर को सकू नी । हू थार सू मिलरणो चाऊ, थारो म डो देखरणो चाऊ, थार सू बात करणी चाऊ, पण थार घरे ग्रा सकू कोनी । लोग क्वै, लुगाया हुसि यार हुवै, ग्रर मिनख र मन रा भाव लख जावै । हू सोचू, तू ताडगी हुवैली क हू काई कवरणो चाऊ । ग्रा ई बात, क ग्र काम हुव कोनी जित्त तई ग्रापा ब्याव नई कर लेवा ।

"ग्रर ग्र नी, देख—वाल्टर ग्रर मेरी मन बापू ग्रर बापजी क्व । पण जित्तै तई ग्रापा म ग्रळगाव रवै, ग्रर ग्रापा ब्याव र डोर म बंधर ग्रेक नई हू जावा वारो मन बापू क्वरणो ग्रर म्हारो बान बटा-बेटा क्वरणो सरासर फालतू ग्रर निर थक है । हू जारणू हू ग्रर समभू हू क बै मन बाप न कर ज्यू ई प्यार कर, ग्रर ग्रर हू भी बान इसा ई समभू जारण ब म्हारा ग्राप रा हुव । ग्राज तई म्हार मन में क्दे ई इसो भेद को ग्रायो नी क ग्र म्हारा नई, पारका है ।

'अनी, जुदाई अर अनिस्च रा अ दोरा वरस बीतग्या जिका तो बीतग्या, पण मन पक्को भरोसो है क अबै, इण ऊमर म भी जे तू झटपट म्हार सू परणीज जाव, तो हाल भी आपा जित्ता ई सुखी अर भागमाळी प्राणी बण सका हा जित्ता भगवान आपरी दुनिया मे बणाया है। आपा सू वेसो भागसाळी दूजो कुण हू सक ? जठ मिनख लुगाई न चाव, अर लुगाई मिनख न चाव बठ स्रिस्टी रा सगळा सुख पगा म रुळै।

"तू पूछ सकै है—'किया ?', तो ल सुण। पलडी बात तो आ है क म्हार वन लिछमी री मुकळायत है। केई चीज री ताडो कोनी। मन म उठण आळी इच्छावा न धन रै अभाव मे मारण री जरूरत कोनी। घर म भाव ज्यू खावो, सुवाव जिमा वढिया सू वडिया कपडा परो अर नोकरा माथ हुकम हलावो।

'दूसरी बात आ, क हू पली सू परणीज्योडो कोनी। जे अेक लुगाई पलो सू ई हुव तो धन दौलत हुवता थका भी दूजो लुगाई घर म आया सू राड ई पल्ल पडै। दो लुगाया न राजी राखणो किसो सज काम है ? अर दोना माय सू जे अेक विराजी रव तो घर री सायती भग हू जाव।

"तीसरी बात आ क जे पलडी लुगाई मर जाव, पण लार नाना नाना टावरिया छोड जाव तो वान पाळण पोसण आळा अर वा सू छातीकूटो करण आळो भी वडा भारी सासो है। सौक रै टावरा न पाळणा तरवार री धार म थै चालणो है। तू जाण, म्हारै ना तो लुगाई, अर ना टावर।

'चौथी बात आ क जे अबार धणी बूढो हुवै, तो भी हाड गळ बध जाव, उळटो कमार घालणो पड अर हीडा चाकरा करणा पड। अनी आ बात भी म्हार म कोनी। हू थार सातर मारसरूप कोनी।

"पाचवी बात आ है क मन केई तर री सोच फिकर भी कोनी। जे सोच है तो थारो है, अर थार टावरा रो है—तू सुखी किया बणै, थारा टावर सुखी किया बण आ ई वात रात दिन म्हार माथै म चक्कर काढ।

'आखरी बात आ है क ब्याव सगाई मे लाग घोखा भी खाय जाव। आपस में अेक बीज न जाण कोनी, अर सगपण कर लेव। सगपण करती वगत तो लोग मू ड म मिसरी मेलर बात कर, पण जद काम पक्का हू जाव, तो जर रा तीर छाडण लाग जाव। अनी, आपा तो आपस म अेक बीज न ठेठ सू ई जाणता आया हा। अनी, हू तन आज बताऊ हू कै तन ठा है जिक मू भी पनी म्हू तन प्यार करणो सरू कर दियो हो।

'अब ई जे अनी, तू म्हार सू छाटा लेवै तो आ फेर म्हार माग री बात।" कयर फिलिप अनी रै सामो उथळ खातर भाळ्यो।

अनी र चर माथै दीनता छायगी, अर वा मघरी बाणी म अधर सीक बोली—'फिलिप, थारै गुणा रो बखाण करण म आ लायण जीभ तो किणी भात सिमरथ कोनी। सण र आग सण री बडाई करणी भी नई चाईज, पण कदेई इसा मौका भी आव जद मू डामू ड साची बात कवणी पड। फिलिप, हू तन मिनख नई म्हार घर न उबारण आळो अेक देवदूत समभू हू। थारा उपकार विसरण जोग कोनी। म्हार डूबत घर न तै बार काढ्यो है। थार जिसा दयालू अर कवळ हिरद रा मिनख धरती माथ जोया सू गिणती रा लाध। थारी दया भूलीजण जिसी कोनी। आपर ऊपर कर्योड उपकार न विसरणो पाप है अर हू पाप री भागण वणी चाऊ कोनी। हू आ चाऊ क म्हार मू बण जितो हू थारो पाछो बदळो उतारू।'

'अनी, तै म्हारी वडाइ रा पुळ बाध दिया। हू ता की लायक ई कोनी।" कयर फिलिप आपरी लुळताई देखाळी।

अनी कयो—'फिलिप अेक सिरदार वीन म जिका गुण हुवणा चाईज, व सगळा थार मे है अर थार सू ब्याव करणआळी लुगाई राजस करसी। फिलिप, भगवान थारो भलो कर गर म्हार बिचव घणमोली जिनस तन इनाम म वगस पण हू अेक बात पूछू — 'अेक लुगाई दूसर प्यार कर सक ? तू आ साच क म्है ईनक न प्यार कर्यो, ज्यू ई हू तन प्यार कर सकू ली ? '

फिलिप रो सास ऊचो चढग्यो। वो सास छोडण र बार मे अेक लाबो सास लियो, अर फेर गुमसुम हुयग्या।

अनी कयो—'फिलिप मन जवाब तो दे। आ इसी बात त काई सोचर मू ड मू बार काढी ? थार सू मन इसी आस तो को ही नी। वाह रे फिलिप, भली फूटरी बात करी त।'

फिलिप दो तीन मिट तई गूगो हुव ज्यू अनी र सामो भाकतो रैयो अर वीनै इया लखायो जाण पुरस्योडी थाळी कण ई खोसली हुव। फर धीर धीर वो कयो— अेनी, आ ता मन ठा है क हू ईनक री वरोबरी का कर सकू नी। ईनक आज सू सतर अठार बरसां पली थार सू ब्याव कर्यो जद थारी उमर वाळपणो छोडर जवानी मे नीठ गई हुवली। थारी वा चित चोरणी सूरत हाल भी म्हार हिरद री परता माय मडयोडी है। वो थारा रग, वो रूप वो जोवन, वा चचळाई अर वा

लाज—इसा गुण देवतावा री लुगाया म किसा लाव ! पण ईनक बडभागी हा क थारै जिसी रूप किरण बी र ऊपर निछावर हुयगी । अनी, थार कारण म्है म्हार वापू न भी नाराज करया । व सदेई कवता—'तू ब्याव कर ल, ब्याव कर ल ।' पण म्हार मन मे तन टाळर कोई दूजी सक्ल दाय ई नई आव । वापू मरग्या, अर म्हार ब्याव री ब मन म इ लेयग्या । सस्कार री यात अनी ! पण म्हार खातर तो थारो अबार रो रूप जोबन भी मद र प्याल रो काम कर । ईनक सू इत्ता वरसा पछै भी जे मनै थारा प्यार मिल जासी, तो हू सतोस कर मानसू । मनै वितो प्यार नई, बीसू कम करसी, तो ई काई आट कोनी, हू इण न वित्तो ई कर मानसू ।"

अनी री आख्या डर सू भरीजगी अर बा चिरळायी—"म्हारा प्यारा फिलिप, थमजा । थोडो सोच—जे कदास ईनक आयग्यो, तो फेर ?—पण ईनक आव कोनी, ईनक आव कोनी । म्हारो मन कव क ईनक आव कोनी, पण तो ई फिलिप, अेक बरस ठैर जा । अेक बरस तो कोई घणो कोनी । वगत जावता काई बार लाग, काल अेक साल बीत जासी । अर साल भर मे हू तो की स्याणी हूजासू, अबार जिको अनिस्च म्हार माथै म भर्योडो है, क ईनक आयग्यो तो काई करसू, बो अनिस्च मिट जासी, अर फर कोई तर री रुकावट नई रैसी । फिलिप, इत्तो तू म्हारो कयो मान ल—थोडो ठर, थोड सोक थमजा ।"

फिलिप रो गळो रुकग्यो । नणा म उदासी छायगी, अर आख्या सरम सू झुकण लागगी । बो कयो 'अनी, इया तो ईनक अर हू दोनू ई अेक ई वगत सू थारा चावण आळा अर प्रमी हा, पण थारी किरपा ईनक माथ घणी, अर म्हार माथ थोडी ही, इण कारण तै मन छोडर ईनक सू ब्याव कर्‍यो । उण जर र गुटक न म्ह इमरत कर न पीयो अर हू थार ब्याव मे सरीक भी हुयो । इनक न गय न दस बरस हुयग्या, पण हू इणी आस मे होक कदे न कदे तो अनी म्हार सामो भाकसी । आज थार सू खुलर बात रो मोको बिल्यो जद तै अेक बरस री मौलत घाल दी । अनी, तन ठा है, हू तो ताजि दगी ठरतो ई आयो हू, म्हार खातर ठरणो कोई अनोखी यात कोनी, हू थार खातर थोडो भौर ठर जासू ।"

अनी फर चिरळायी— फिलिप, अब हू वचना म वधगी । मन सिरकण न ठोड कोनी । अनिस्च रो अधारो आधो हुयग्यो । अक साल रो वण कर्‍यो है, उण म फरक नई पड । अेक साल हुया सू हू तन म्हारो वण पूरो करन दसाळसू । फिलिप, अेक बरस जाता तो कोनी ? जादा कायरो है ? मन भी तो अेक साल काढणो है । हू काढसू ज्यू थार सू निकळ कोनी ?"

फिलिप कयो—'अनी अब अेक बरस हुया सू हू फेर थार सू मिलसू ।'

थोडी ताळ तई दोनू ग्रेक-बीज र सामो जोवता रया। फेर जद भाडकियां माय सू सूरज री लारली किरणा भी पगेलागणा करती दीखी, तो फिलिप विचार करयो क रात घालणी ग्रनी र हक मे ठीक कोनी—काल न लोग ऊधी सू धी बाता बणावणी सरू कर देव। इण र सिवाय रात न सरदी भी इत्ती पडण लाग जाव क बा ग्रनी र निमळ डील सू भल कोनी। फिलिप ऊभो हुयो। ग्रनी भी उठगी। 'वाल्टर, वाल्टर, मेरी, ग्रे मेरो" फिलिप हेला करया, ग्रर टाबर ग्रापरा थेला फळा सू लदालद कर्या ऊपर ग्रायग्या।

"बापू देखो" वाल्टर कयो— 'म्हें तो थेलो काठो भर लियो, ग्रर मेरी तो की लाई ई कोनी।"

'वाल्टर बदमासी ना कर" मेरी थेल कानी झपटती बोली—"बापू सगळा फळ तोडया तो म्हैं ई है, वाल्टर तो खाली थेला म घाल्या है। किता बदमास है ग्रो।

'बापू" वाल्टर कया—"म्हारा खु जा तो हाल खाली है जे पाच मिट ग्रोर ठरो, ता हू ग्रबार म्हारा खु जा भर लाऊ।"

ग्रनी बोली—'बस बेटा इत्ता घणा सिझया पड है। रात री सरदी सू बचणो चाईज। चालो, झटपट घरे चालो।"

ता मा, ग्रब फेर ग्रापा ग्रठै पाछा कद ग्रासा ?" वाल्टर मा रा हाथ झालर पूछ या।

मेरी बोली— मा ग्रेकली तो ग्रापान लाव कोनी, कदेई बापू न त्यार कर लेसा ग्रर साथ मा न भी लेय लेसा ग्रर ग्रापा ग्राय जासा।'

हा बन" वाल्टर कयो, 'तो फर ग्रापा ता काल ई ग्रासा।"

ग्रनी वाल्टर रो हाथ झाल लियो, ग्रर ब पाछा पाड सू उतरण लागग्या।

जद ग्रनी रा घर नडो ग्रायो, तो दानू टाबर ताळै री कू ची ग्रनी कन सू लेयर ग्राग गया परा ग्रर माय जायर फळा री पाती करण मे रूधीजग्या।

जद फिलिप ग्रर ग्रनी घर र ग्राग ग्राया, तो बा पग रोक लिया। फिलिप ग्रापरो हाथ ग्राग करयो ग्रर ग्रनी उणसू हाथ मिलायो। फिलिप धीर सीक कयो— 'हेजल वन म जिकी बात म्हार मू ड सू निकळगी ही बा ठीक का ही नी। वा थारी निमळाई री घडी ही ग्ररम्हैं थारी निमळाई रो नाजायज फायदो उठायर तन बचना मे बाधली। ग्रब हू सोचू क ग्रा सरासर म्हारी भूल ही। मन थार साग इसा बरताव नई करणा चाईज हो। पण कोई बात कानी। भूल रो सुधार गी तो

करीज सत्र है। भूल ता कोई ना करसर, पण [illegible] वा [illegible], [illegible] दूर [illegible] सुधार सर। अनी, हूं मिनख हूं, ए बात म्हारी भूल गा सुधार [illegible] पाऊ। [illegible] तो थार प्रेम बंधण में सत-मरण [illegible] [illegible], [illegible] बधाणा कानी। तू पली निरबश हा, [illegible] ई है। मू [illegible], [illegible] बधाणा काना।'

अनी री माम्या मू [illegible] [illegible] [illegible] [illegible]— '[illegible], मू ता मन बधाए मू मुज राग, [illegible] म्हारी [illegible], [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] है। अब हू निरबश कोना। बधाए म पाया [illegible]।

००

अ'क बरस बीतग्यो

अनी घर आयर काम काज म लागगा । टावरा री पढाई चालू ही । फिलिप री तरफ सू टावरा र मिस अथवा दूज मिम कोई न कोई सायता पूगती रवती जिण सू अनी रो काम चलतो रवतो । आपरो दुख विसरण खातर अनी दिन भर बिलम लाग्योडी रवती ।

अेक दिन वाल्टर कयो- मा तू बापू सू यारी क्यू रव । और तो सगळा रा मा बाप अेक घर म भेळा रव, पण तू अर बापू दोनू न्यारा न्यारा रवो ! हू अर मेरी थारै कन भी रैवणो चावा अर बापू कनै भी रवणो चावा पण थ तो दोनू न्यारा न्यारा रवो, जद म्हे अब कीर साग रवा, बापू सागक थार साग ?

अनी कयो- बटा तन पूगी आजादी है, तू थार जच जिक र साग रह, तनै सुवाव जिक र साग रह ।"

"आ ई तो आफत है मा ! मन तू तो इत्ती सुवाव क थार खाळ म सूया पछ मन रोटी जीमणी भी याद को आव नी । पण बापू (फिलिप)? बापू तो म्हान इत्ता चोखा लाग इत्ता चोखा लाग क तन काई बतावा । जे तू रीस नइ कर तो बापू म्हान थार सू ई चोखा लाग । देख, अबक म्हार कपडा किसाक फूटरा सीडाया है !

मरी, जिकी कन ऊभी ऊभी वाल्टर री बाता सुणती ही बोली- मा मन बापू लाग तो घणाइ चोखा घणा ई चोखा है पण सगळा सू बसी चाखी ता तू लाग । थार सू आछा और कोई कोनी ।

टावरा री वाता सू अनी रा मनोरजन हुवतो हा अर जीव खराब भी हुवता हो । बाता सुण्या पछ वा गुमसुम हुयर गरा चित्या म डूबगी । फिलिप रा लबज याद आया- 'हू तन आ'ज बताऊ क तन ठा है जिक सू भी पली म्हैं तन प्यार करणो सरू कर दियो हा ।

अनी मन मे क्यो- फिलिप, ज्यू हू निरभागण हू, अर बिस रा दिन तोडू हू, इणी भात थार ई करमा म बिनो भोगणो ई लिरयोडो दीस । 'अनी गाडा म मायो धाल्या बुर हाला बटी ही ।

/ .

इण तर जद अनी उधेड़-बुण मे ल.ग्योडी ही, उण री मा आयगी । मा बोली— "अनी, तू जे इया गुमसुम रसी तो थारी खोपडी खराब हू जासी अर फर आ टाबर न कुण साभसी ? बूढ बार म्हार गळै बध जासी । म्हारी अब सेवा पावण री अर हाजरी भरण री ऊमर थोडी ई है । अर हू अबै कित्ताक वरसा री ? पाक पान रो काई भरोसो, आज भड अर अबार ई भड जाव ।"

"पण मा हू काई करू ? जद ईनक याद आव बीरा लू ठा मुजदड याद आव, बीरो निस्कपट बाता याद आव, अर बीरा प्रमपूरण बरताव याद आव तो हिरद मे उथळ पुथळ मच जाव । हू जीव न जमावण री कासीम करू, पण ओ चित अडबी घोड दई लगाम तोडावण लाग जाव ।"

मा क्यो— 'हू थारी सगळी बाता मानू । ईनक रा गुण आपा ई नई, सगळो गाव गावै पण मरयोड लार मरीज तो कोनी । जीव जिका न सरीर राखण खातर सगळा ई काम करणा पड ।"

अनी— मा तू सोच है क ईनक कायम कोनी ?'

मा-'बेटी, जद दस बरस बीतग्या अर हाल बीरा की समाचार ई कोनी, फेर तो हार खायर मानणो पड क बीरो सरीर ।"

अनी-"मा, ईनक म्हार खातर विदेस गयो म्हार टाबरा खातर गयो । म्हान सोरा करण खातर गयो नातर कमाद रो तो अठ ई घाटो को हो नी ।"

इया कयर अनी आपरी आख्या पूछण लागगी । मा अनी न आपरी छाती र लगायर धीरज बधावती बोली— देख, फिलिप तन ठेठ सू जाण अर तू फिलिप न जाण । फिलिप हाल ब्याव भी करयो कोनी, कवारो है । म्है सुणी क बो थार खातर कवारो है, अर थार सू ब्याव करणो चाव भी है । क्यू ठीक है आ बात ?'

अनी बोली कोनी ।

'म्हार ख्याल सू तो फिलिप सू ब्याव करण मे ई सार हैं । आखर अडीकण री भी तो अेक हद हुव । आवण आळ रो सनमो ई कोनी अर तू दस बरस बातग्या, हाल बावळी हुयाडी बठी है । आ बात ठीक कोनी । अनी, थोडो समभ सू काम ल । कयर मा बेटी र गाल सू आपरो गाल चिपायो ।

अनी कयो— मा, थारी बात म्हारी समभ म आव, पण तू मन आ बता क जे कदास ईनक रो सरीर कायम हुयो, अर ओ पाछो आयग्यो, अर वो मन आप-घर म नई, केई दूज र घर म देखी, तो बीरी हालत रो तू अन्दाजो लगा सक ? जिक सबस म्हार खातर घर-बार छोड समदर म माथो दियो, बीन हू दगो देऊ, तो आ बात थार जच ? बोल म्हारी मा ।'

"जद कोनी।' मा कयो पण फेर भी अनिश्चित र कारण निश्चित न ठुकरावण म स्याणप कोनी। ईश्वर अनिश्चित है, फिलिप निश्चित है। सम री खाई निश्चित न भी अनिश्चित कर देवै। अर जोर काई करा? वगत रैवर चालणो पड।"

इण तर ईश्वर री बात चालतो रवती, अर फिलिप रा बोल क बो अनी न ठा पडया पली सू ई बीन प्यार करतो आयो है अनी र काना मे बराबर गू जता रवता।

वाल्टर अर मरी इस्कूल जावता वगत फिलिप कन जावता पाछा आवती वळा भी मिलता अर आपस म हसता तथा तमासा करता। वाल्टर केई वार कैवतो- बापूजी थे आजकळ घरे आवो कोनी, मा सू रीसाणा हुयोडा हा?'

फिलिप हसण लाग जावतो अर लाड म वाल्टर रै मगरा म जोरदार मुक्को जमा देवतो पण उण री चोट हळकी हुवती इण कारण वाल्टर जोर जोर सू हसतो।

आज जद अनी आपर टाबरा न पढाई बाबत बाता पूछती ही— क्लास मे कित्ता टाबर है, कित्ता कच्चा है कित्ता हुसियार है रम्स्यान कद हुसी—' उणी वगत फिलिप आयग्यो। अनी फिलिप खातर मूढो सिरकावती बोली— ल बठ फिलिप। फिलिप चुपचाप बठग्यो।

मरी अर वाल्टर न फिलिप पीसा दयर कयो— जावो बजार सू अेक मजबूत थेलो खरीद लावो बडो सारो, आज फेर आपा हेजल बन चालसा, अर बठ सू फळ घालर थेलो भर लामा।

दोनू टाबर बार गया परा।

अनी पूछयो— अठीन कठ गयो फिलिप?'

फिलिप—"थार कन ई आयो।'

अनी— 'कोई खास काम?

फिलिप—"काम बतावणो बाकी रयग्यो?'

अनी— फिलिप, माफ कर, मन याद कोनी।

फिलिप— आ भूलण री बात है अनी।'

अनी—"जद ई तो हू माफी मागू हू।'

फिलिप—' याद कर अनी! आपा री बात याद कर।'

अनी— 'पण आपा रो तो साल भर रो वण हो?'

फिलिप—"तू ठीक कव अनी!'

अनी— 'तो फेर वण माथ कायम रवणो चाईज। ऊतवाळ म बावळो नई वणनो चाईज।'

फिलिप—"ऊतावळ ? किसी ऊतावळ? कुण कर ऊतावळ ?'

अनी—"तो किसो अेक बरस पूरो हुयग्या ?"

फिलिप—"तनै सक लागै अनी ?"

अनी—"मनै तो काल रीसी बात लाग ।"

फिलिप—"लाग है, पण साल तो पूरो हुयग्यो ।"

अनी—"साल हुयग्यो ? बडो भारी इचरज है ।'

फिलिप—"इचरज री बात कोनी । जे सुपारया फेर पकगी है, तो पक्कायत साल हुयग्यो । आव बार आ, म्हार साथ हालर देखलै, जे भरोमो नई हुव तो ।"

अनी बोली—"फिलिप सुपारया रो काई देखू ? घणी ई चीजा देखणी है, किसी देखू ? तू आप समझदार है क फसलो करतो वगत मन कित्तै सोच बिचार री जरूरत है । पण फिलिप, तू डर मत, फसलो तो म्हार पली सू ई कर्योडो है, फेर भी तू मन, फिलिप, तू मन अेक मईन री मोलत और देय द ।"

जद अनी र घरे आयो हो, तो फिलिप रो मूडो आसा री लाली सू पळपळाट करतो हो, पण मौकन मागर अनी बीरी आसावा नै जाणै खाड मे बूर दी । वो कयो—"अनी, जिया तू राजी है, हू तो बिया ई राजी हू । थार जच जित्ती टेम तू लेय ल । तू थारी मरजी री राणी है, मन उजर करण रो कोई हक कोनी । जे मईनै री जगा तू दो मईना कवती तो भी हू तो मजूर कर लेवतो । मजूर करण सिवाय म्हार कन दूजो कोई उपाव भी तो कोनी ।" अै सबद कवती वगत सरावी रै दाई फिलिप री जबान लडखडावण लागगी ।

फिलिप री धूजती अर गळगळाती वाणी मे इसो दरद हो क उण न सुण्या पखाण हिरदो भी पिघळ या बिना नई रव । अनी जद फिलिप रा धीरज भरया बोल सुण्या, तो दया रै कारण बीरा नण जळ सू छलीजग्या, पण बी मूडो फोरन आम्ख्यां पूछली अर फिलिप न ठा नई घाली ।

"कोई बात कोनी, अेक मईनो और सई ।" इया कैयर फिलिप हाथ लटकाया पग घींसतो घीसतो गयो परो ।

अेक मईनो बीतग्यो पण फिलिप पाछो आयो कोनी । अेक और बीतग्यो तद अनी र बारणा आम आयर फेर ऊमग्यो ।

'अेक मईनो हुयग्यो फिलिप ?' अनी इचरज सू पूछयो ।

"अेक नई, दो ।' फिलिप मधर सुर म कया ।

'म्हारी सोगन, फिलिप ?

"तू मवै जिक री, अनी ।'

"देख फिलिप म्हार बैंए मे तो फरक पड कोनी, पण तू म्हारी बात ठेठ सू मानतो आयो है, थोडी-सीक और मानल ।"

"बोल, अनी ।" फिलिप कैयो ।

"फिलिप, थारै घर मे हू पलो बार पग धरसू । हू चासू क हरख कोड सू जाऊ । पण हाल म्हारो मन हरख कोड री हालत मे आयो कोनी । फिलिप, तू मनै अेक मईन री मोलत और दे सक काई ?" कयर अनी सरम सू नैण नीचा कर लिया ।

'थारी जे मरजी आ ई है, तो फर म्हारी इनकारी रो सवाल ई कोनी । पण अेक बात हू कऊ—तू भले ई म्हार घर मे चालती हरखा ना, म्हारै घर री ई ट ई ट, म्हारै बाग रो पत्तो पत्तो थार आवण री अडीक में आल्या बिछाया ऊभा है । बो सोनळियो सूरज कद ऊगसी जद कै तू बारी इ छया पूरसी ?"

"फिलिप तू स्याणो है अेक मईनो । बस अब कदेई मागू कोनी, आखरी माग है—अेक मईनो ।"

"म्हार घणो ई खटाव है । जित्ता बरस काढ्या है अबै तो बित्ता मईना ई कोनी । काल आय जासी अेक मईनो ।"

जद अेक री जगा दो मईना बीतग्या, तो फेर अेक दिन अनी र आगणैं मे फिलिप आयर ऊभग्यो । ज्यू वीर नै दखर करजायत भेळो भेळो हुव अर निजर बचाव, इणी तर अनी फिलिप न देख्यो अदेख्यो करण री कोसीस करी । फिलिप बिना क्या ई तिपाई माथै बठग्यो ।

अनी सामन आई, बोली—' फिलिप, तू अेक कूडी लुगाई नै थारी बऊ बणावणी चाव काई ? हू थार आग कित्ती वार कूडी पडी हू ।"

"कोई बात कोनी ' फिलिप क्यो ' अब तो अळगाव रो समो कटग्यो, अर सुख री बेळा आयगी, आपा न भगवान रा आभारी हुवणा चाईजै ।

"फिलिप, तू म्हारो है, हू थारी हू ।"

"अनी हू तो थारो हू ठेठ सू ई थारो हू, पण तू हाल भी म्हारी कोनी । कयर फिलिप रुमाल सू आपरी आख्या पू छी अर गळ मे खरखराट आयग्यो, इण कारण गळो साफ कर्यो ।'

"नईं, फिलिप, तू आ बात ना कह, थार मू डै सू जद इसी सुणू, तो म्हारै काळज रा टुकडा-टुकडा हुवण लाग जाव । पण तन ठा है—म्हार माथ अब दोलडी जिम्मवारी है—अेक तो आ क हाल हू ईनक रो घर सभाळ या बठी हू, अर दूजी आ क तन म्हार ब्याव करण रो बचन दियोडो है । फिलिप तू म्हारो है, हू थारै आग पल्लो बिछायर भीख मागू क अेक मईन री मोलत तू मन फेर देय दे । अर

जे तू मन म पाया जाय, ता हू मवार ई थारो कयो करण न त्यार हू।' कंवतां कवता धंनी रै मू ड माथ पसीनो मायग्यो।

फिलिप चुप।

"फिलिप", धंनी कयो—"रीस मायगी, म्हार ढीठपणें माथै ?"

'धनी", फिलिप कया—'थारी वात माथै मन माज तई तो कदई रीस माई कोनी, मर हू सोचू क पेर माय भी कोनी।"

"तो फेर म्हारी मरदास, फिलिप ?" धनी पूछयो।

"मेक नई, तू दो मईना स, धंनी, तू सावळ सोच विचार नै कदम राखे। हाल भी थारै मावै कोई वगाण कोनी। तू खुल्ली है।"

••

पाटा गजट

ग्रनी रा टावर फिलिप री कळचक्री जावै । फिलिप बातै इस्कूल भेज बारो खरचा ग्रोढ-ग्र बाता बन्दरगाह रा सगळा मिनख लुगाई जाएन लागग्या । फिलिप ग्रनी र घरे कदमकाळ ई जावतो पण ग्रा खबर भी दान लोगा र काना मे पूग जावती । ब हेजल वन मे गया इण बात री भी सगळै चरचा हुयगी ही । ग्रा भी लोगा न ठा ही क ग्रनी र घर रो खरचो फिलिप चलावतो हो । 'ग्रनी ग्रर 'फिलिप' गाव रै लोगा री चरचा खातर ग्रेक चोखो विसै हाथ ग्रायोडा हा । जद कदेई चौपाळ म च्यार मिनख भेळा हुवता, तो इणी बात री चरचा चालती, ग्रर सगळा जणा ग्राप ग्रापरी ग्रक्कल सारू बिचार परगट करता ।

ग्रेक दिन री बात जद घणासारा लोग भेळा हुयोडा हा, ग्रेक जणै बात छडी—'ईनक लाई किसोक भलो ग्रादमी हो ! ग्रापार गाव रो नाव हो । ग्रळगी ग्रळगी जगावा में ग्रोळखीजतो हो ।'

दूसरो बोल्यो—"ग्ररे भाई, पीसो गळो कटावै । ईनक सोच्या—लखपती बण जाऊ—इणी लोभ मे घर सू निकळग्यो हो, पण घर ग्राळी लुगाई ग्रर टावर ई हाथ माय सू निकळ गया । लागा कबजो कर लिया ।'

तीजा—''इया कबजो कर लियो जिका कोई तमासो है ? लुगाई रो मन हुया बिना मिनख री बापड री ग्रौकात ई काई है ?

चौथो—''थारी बात सफा साची है । जे लुगाई रो मन नई हुव, तो मिनख भल ई कित्तो ई माथो पटकर रय जावो बा बीर जाळ म फस ई कोनी । पण जे लुगाई ग्राप गई-बीती हुव तो फर काई कवण-सुणन री बात कोनी ।'

पलो—"भई, ग्रनी बापडी लुगाई तो चोखी ई है । कदेई नाड ऊची करया चालती देखी कोनी ।'

दूजा—'बस बस रवण दे माया म्हार कन सू क्यू पोथी बचवाव है ?

ती—'हा मायला, थार स काई छानो है ।

दूजो— म्हार सू कोई ग्रा छानी न कोई फिलिप छानो । पण ग्रापा रा काई नियो ? ग्रान ई बापडा न जीव राजी करण दो । ग्रापा रै घर सू काई जाव ?'

तई ईनक नई आमी, फिलिप नैं भासापट्टी मे राखसी, अर जद बा आय जामी, तो फिलिप न घर रो मारग बताय देसी ।"

चौथो —"इत्ता बरस बीतग्या अब ईनक रैं आवण री आस राखणी तो मूरखता है । म्हार ख्यान सू तो दोना री पटडी हाल बठी कोनी, नातर आज तई मे कदेई रो ब्याव हू जावतो ।"

पलो—"अरे भाया, ब्याव मे बो मजो थाडो ई है जिको प्रम करण मे हुव । ब्याव तो म्हारा हुयोडा है, पण देखू य ब्याव काई छातीकूटो मोल लय लियो । टाबरा री मा हुयगी, काढू ता ई कठ काढू ?"

तीजो—"आ ई बात है । फिलिप आप बडो रगबाज आदमी है । बो बागा रो भवरो है, आछा आछा पुसब देखर मन-रळी-पूर । औस्या आयगी, पण अनी रा जोबन हाल ताजो है । जित तई आ लाजगी रैंसी, फिलिप अनी रो लारो छाड कोनी ।"

चौथो—"इत्ता इत्ता वरसा तई कोई फालतू लगवाड रो कायदो थोडो ई हुया कर । म्हार विचार सू तो आन पाच बरसा पली ई ब्याव कर लेवणो चाई-जतो हो पण परमात्मा आन इत्ती अक्कल ई दीवी कोनी ज्यू मालम पड ।"

दूजो—'म्हार ख्याल सू तो आरो ब्याव दस बरसा पली हू जावणो चाईजतो हो, पण हाल ई अैं तो पालपट्टी म ई काम चलाय रया है । अजीब खोपड्या है आरी भी' अजीब काई गली खोपड्या है । घर री अक्कल नई हुव, तो फेर दुजा रा किसा टोटा ?"

पलो-' 'तू मूरख है । दस बरसा पैली कोई हुया करैं ? इया काई ईनक र जावत ई ब्याव कर लेवती काई अनी ?'

तीजो—' मन तो केई वार विचार आवैं क आ बात काइ है । रात री इग्यार बार सोचता सोचता बज जाव, पण अनी फिलिप री आडी रो हल हाल समझ मे आयो कोनी ।"

दूजो — 'फिलिप अनी सू प्रेम तो करैं, पण अनी ता लगण री लाडी है नी । फिलिप न अनी र आचरण मे डबको लाग है । वा पूरी तपास कर्या पछै ब्याव भले ई करा, इया तो अनी रैं चक्कर मे चढण आळो कोनी ।

तीजो -"चक्कर मे तो है ई ।'

इण तर री बाता चौखळ म हुवती ई रवती । केई तो इसा हा कैं फिलिप अथवा अनी या उण र टाबरा न देखर भट चुप हू जावता अथवा दबी जबान म बालता या बात फोर दवता पण केई किरपालू सज्जन इसा भी हा क अनी या फिलिप अथवा टाबरा र देगर बार कान म बात पूचावण री भी चेस्टा करता ।

चौथो —"ऊ चा चढ चढ देखो, घर घर श्रा इ लखो । इ न ता सगळा सरीसा ई लाग । श्र गया थीता है तो दूजा भी कोई भला श्रादमी म्हारै ध्यान म तो श्राव कोनी ।"

दूजो—"तैं तो म्हार मू ड री बात खोस ली ।"

दूजो—"खास ली, थार म है इत्ती उक्त जिको थार मू ड री बात खोस ली । म्हारी पाळटी म वठए जोगो हुवए मे हाल बरस लागसी ।"

पलो —'पए म्हार ख्याल सू फिलिप रो दोस तो नोनी ।"

तीजो—'तो दोस श्र नी रो भी कोनी ।'

दूजो—"ह कऊ दोनू श्रखरै श्रखरै दोसी है ।'

पैलो—"थारी बात ठीक हुवणी चाईजे ।'

चौथो—(पल न) 'तू इया गुडक्ए लोटै दइ किया कर, कए ई श्रठीन, श्रर कएई वठीन ? '

पलो—"श्रबार टेम इसी ई है । जद ईनक हो, ता श्र नी ईनक री हुयोडी रई, बो गयो परो, श्रबै फिलिप नै श्रपएा लियो ।"

चौथो— पए हाल री घडी श्रपणावए में ई की तूए-लक्खए तो कोनी ।

तीजो —"तूए लक्खए किया कोनी ? टाबरा न इस्कूल घाल दिया, श्रर श्र नी श्राप ई ता फिलिप ताए वठी मौज कर है । किसी कमावए न थोडी जाव है श्रथवा ईनक पीसा थोडा ई भेज है ।"

पैलो—'श्रर थे काई समभो, श्रै नी री चाल समभणी थारी बुद्धि सू बार री बात है । सुणो, हू बताऊ —ईनक सू ब्याव ता कर लिया पए वो श्रज्जड मिनख ई र दाय श्रायो कोनी इए कारए वीन तो बिदस र मिस घर सू काढ दियो श्रर श्रब श्रापरै चित रा चाया कर ।"

चौथो—'जे चित रा चाया करती, तो इए तर भ्यारए भिख्यारणी दई को रवती नी ।"

पलो—'श्ररे भाई, श्रा ई तो बात है जिकी थे लोग समभो कोनी, पए हू समभू हू । जे श्रबार फनाफन रवए लाग जाव, लोग श्रागळ्या सू बतावए लाग जाव नई जद इत्ता बरस हुयग्या श्रापरो काम भी बएाय रई है, श्रर कोई टोकए री हीमत करए श्राळो भी कोनी ।'

दूजो—"वात तो थारी ठीक लाग । '

तीजो—'थे भले ई मन रा गोट जच ज्यू उठावो, ईनक खातर तो श्रा श्रेडी सू चाटी तई वफादार है । जादू रो डडो तो फिलिप माथ फर राख्यो है । जित

आ टीका टीपणी सुणर अनी तो नाइ हेठी करयां सडक दणी आग निकळ जावती । फिलिप उदारता सू ह्सर दात काढ देवतो । वाल्टर न लोगा माथ रीस आवती, अर मेरी री तो केई वार आख्या भरीज जावती ।

अँनी अर फिलिप तथा टावर तो इण चरचा सू तग आया ई, पण नित-हमेस सागी दळियो दळता दळता दळारा न आप न अळखत लागण लागगी, अर ब चावता क जे ब्याव बर-कराय लेव, तो रोजीन र गागीरय सू पिंडो छूटै ।

जद फिलिप अँनी र घरे आवतो, तो वाल्टर बीसू घणो राजी रवतो, जीमण खातर फिलिप रा नौरा करतो, आपरै हाथ सू मूडो ढाळतो अथवा पाणा या चाय री गिलास लावतो । जदपी वाल्टर आपरी मा रै सामो कदेई प्रस्ताव तो राख्यो कोनी, पण उण र नणा सू इसी झळक मिलती ही क फिलिप अ ी रो जे ब्याव हू जाव, तो वो राजी है ।

पण मेरी वाल्टर सू दो पावडा आग रई । वा बोली"–मा, बापू म्हारो कित्तो लाड राग । आ तो मन ठा है कै ब म्हार चाचा लाग, पण हू देखू क गळी गुवाड मे दूजै टावरा रो लाड वारा वापू राख, जिकै सू फिलिप चाचाजी म्हारो लाड कित्तो ई बेसी राखै । म्हार विना ब जीम कोनी, म्हार विना वान आवड कोनी । अर सगळा सू असरण री वात तो आ है कै म्हे तो रैवा इस आछ कपडा मे, अर तू रवै इसी कोभी ! म्हारो जीव इण वात सू धापर दोरो है ।" कवती-कवती मेरी रोवण लागगी ।

अँनी उण न छाती र लगाई अर बोली—"तो हू काई करू बेटी, म्हारा भाग इसा ई है । करमा मे जे सुख लिख्योडो हुवतो, तो थारा आपरा बापूजी, म्हार पालता पालता, आपा न छोडर क्यू तो जावता, अर क्यू इण तरै आपा अनाथ बणता ?"

"पण मा, अबै बरस कित्ता बीतग्या ? मन तो याद ई कोनी कै बापू कद गया । मनै वारो चरो ई याद कोनी । अर फिलिप बापजी जिसाक चोखा है । तन चोखा को लाग नी ?" मेरी पूछ्यो ।

'चोखा तो लागै ।" अनी कयो । "फिलिप तो सगळा न आछो लागै । वो गुणा रो घर है ।"

"तो फेर मा, आ काई बात है ?" मेरी पूछ्या ।

'तू काई कवणो चाव बेटी ? तू वडी सारी है, समझणी है । थारै मन री वात नै खुलासा करन कह ।"

'मा', मेरी वोनी, [तू फिलिप यापजी सू ब्याव वो कर सक नी ? करले मा, हू थारै पगा मे पड । 'कयर मरी अनी र पगा मे माथो नाखण लागी । अँनी वेटी नै छाती र चिपायनी अर टळै टळै आसूडा ढळावती रई ।

मेरी थोडी ताळ म उठर गई परी । अनी उठी । आख्या धोई, अर लारल बगीच मे टलण लागगी । टलती टलती र माय माय सू फटकार आई–अनी फिलिप थार खातर आपरो डील गाळ दियो, अर तू वीरा आग सू आग टरवाव है आ बात कठ तई मिनखपण री है ? मन म सोच्या कित्ती वार म्ह वीसू यण कर्यो है अर जद वो आयर ऊभो हुयो, तो हू कूडी पडी हू, व दरगाह री चकचक सू तो म्हार काना रा पडदा फाटग्या । आ निरुमा मिनगा र जाण कोई दूजो काम ई कोनी ! पण आरी भी गळती कोनी । मन दूजा र दोस कानी नई, म्हारै आपर दास कानी देखणो चाईज । अठीन म्हारा आपरा टावर फिलिप न आपर प्राणा सू प्यारो समझ, अर व आ चावै क हू फिलिप सू ब्याव करलू । पण अ सगळा आ को सोच नी क जे कदास ईनक जीवतो आयग्या—हाय ! आवणनै तो रुठ पडयो है, बरसा रा बरस वीतग्या–तो हू काई करमू ।

●●

ईनक कठै रैयग्यो ?

पण ईनक कठ रैयग्यो ? अनी सू सावळ मिलर, टाबरा रा लाड कोड करन "बडभागण" नाव र जळ जाज मे राजी खुसी टुर्यो हो। आ बात तो ठीक है कँ जातरा सरू हुवती वेळा, जद जठ पोत बिस्के री खाडी मे हो, तो जळ देवता मिनख री सगती तोलण खातर आयग्या। आज रा सगळा मुसाफर घबरायग्या, पण जाज चलारा हीमत अर चतराइ सू काम लियो। माथसूणी लैरा सू "बड भागण' मोरचो लेवती रई। पण मिनख री सगती कुदरत र आग काई मोल राख ? पाणी म उफाण माथ उफाण अर हबोळ माथ हबोळो उठण लाग्यो अर सगळा जणा बचण री आस छोड दी, कारण इण हलचल सू जाज कागद री डूगी ज्यू अथिर हालत म पडग्यो अर मुसाफर मिंट सिक्ड गिणता हा क अब जाज डूब्यो, अब जाज डूब्यो। इण तर रै डरावण तोफान मे डूगी लेयर उतरणो ता चलायर मौत र मू ड म जावणो हो, इण कारण सगळा जणा सकट काळ मे भेळा हुयोडा आप आप र इस्टदेव रो सिवरण करण लाग्या।

कुदरत रो कोप हळको हुयो अर जाज र डगमगाट म कमी आयगी। बड भागण' आफत माय सू साबत निकळगी अर मुसाफरा रै जीव मे जीव आयो।

अब जाज ठड उन भाग म आयग्यो जठै मौसम सुवावणो अर समदर सुसीन हा। लारल खतर र कारण समदर री आ सायती मुसाफरा न बड भाग री सैनाणी लखाई।

आग गया सू पली ई पोत चलारा आपरी कमर कसली, कारण आगै 'ताफान डमरूमध्य" मायकर गुजरणो हो। जिसा गुण बिसा नाव। तोफानां री मुकळायत र कारण ई इण डमरूमध्य रो नाव इसो धरपीज्यो हो। आज तो लोग ई न 'आस बधावणो, अथवा 'केप आफ गुड होप' कव है। हा, तो जद "बडभागण' इण डमरूमध्य मायकर निकळण लागी तो अेक बार बीर नाव री पारख करण खातर जळ-देवता फेर कमरकघो कस लियो। लोगा नै "बडभागण" नाव कूडो लागण लाग्यो, अर बा सोच्यो के ब सगळा निरभागी है। पाणी रा फटीड साय मायर 'बडभागण' अधमरी हुयगी। मुसाफरा फेर इस्टदवां रो सिवरण कर्या, पण आज

सिवरण अक्यारथ लगावण लागग्यो, फेर भी हाल तगरीर सिकदर हो, अर समदर सिलामी लेयर मथरो पड़ग्या ।

इण तर कदेई मौसम आछो अर कदई मौसम माडो, पण मुकाबलो करता करता छवट गन मे पुमव बिछग्या, अर 'बडभागण लारल बिल न भूलर, सोनलिया टापुआ र पमवाड कर हसती मुळकती आपरै थान मुकाम पूगगी, अर बठ जायर सुख रो सांस लियो ।

जाज चीण देस र कनार आय लाग्यो, अर ईनक भी आपरो काम जी तोडन करणो सरू करयो । मारग री अवळी वेळा मे जे ईनक जिसा हिमताळू चलार नई हुवता तो जाज ठिकाणै लागणो मुसकल हो । जाज र कपटन इण अरथ रो अेक कागद जाज मालक न लिख भेज्यो, जिण म ईनक री चतराई अर हीमित री मोकळी बडाई करी ही । कप्तान आपरी मरजी सू ई ईनक री तिनखा बधायर पली बिच्च दूणी करदी । इण सू ईनक रो उत्साह बध्या, अर बा आपरो काम और भी साव धानी सू करण रो ध्यान राखतो ।

दिपटी सू फुरमत मिल्या ईनक बजार म जायन भात भात री जिनसा रा भाव ताव भी मालम कर लेवतो । बठ रमतिया रो बजार घणो जोरदार हो । ईनक बठ माल री खरीद फरोख्त भी करण लागग्यो । जद जाज पाछो टुरण लाग्यो, तो बो घणासारा रमतिया मोल लेय लिया । मन मे बिचार करयो—कित्तो फरक है अठ अर बठ र भाव मे । अठै जिको रमतिया अेक पीस म आव, म्हारै अठ उणी रा दो आना लाग तीन आना लाग ! आठ गुणो फरक बार गुणो फरक ! इण तर जे हू दो तीन चक्कर काढ लेमू फेर तो दळदर दूर है । पछ म्हार गाव मे ई दुकान कर लेसू । बौपार बध जासी अर गरीबी माय सू निकळर घर ऊचो उठ जासी। अनी मिनखाचार रखण लाग जासी । टाबरा री सावळ पढाई रो परबध हू जासी । म्हारी तो कोई बात कोनी । हू तो जे अबार रऊ ज्यू ई चलवो कर, तो भी कोई बात कोनी ।

बिकरी-बटट रो ममात टाळर बी सोन र मोळ री अेक मूरत भी टाबरा र रमण खातर माथ लीवी । जद टाबर भागता-भागता 'बापू-बापू' कवता सामन आसी तो हू झट आ मूरत बार आगै कर देमू—ईनक मन मे सोच्यो, अर तद टाबर कित्ता राजी हुसी ।

अब बडभागण' री घर कानली जातरा सरू हुई । रोभा तो पलडी जातरा म थोडा नई देख्या हा पण अबकाळ पली बिच्च ई इधकाई रई । मारग मे समदरी भवर आयग्या अर बार माय जाज फसग्यो पण हुसियार चलारा बीनै मवर सू बारै काढ लियो । जाज र आगल भाग माथ अेक लुगाई री सोन तई री मूरत कोरयोडी

हो। लरा म्राव म्रर इण मूरत सू टकराव म्रर पाछी विलीण हू जाव । मूरत जाग बराबर लरा रो गरब गळतो देख रई है म्रर सामी म्रावती परचड लरा कानी म्रेक-टक निजर सू जोय रई है।

इण तर मोकळी ताळ तई लरा सू सग्राम करया पछै फर 'बडभागण' न सायन्ती सू सास लेवण न मिल्यो। पण इसी ठा पडी क 'बडभागण' रै नसीब मे टिकाऊ सायन्ती लिख्योडी नई ही। भाग जावते ई म्राधी सरू हुयगी—कदेई उतराद सू दिखणाद, तो कदेई दिखणाद सू उतराद। इणी तर उगूण सू म्राथूण, म्रर म्राथूण सू उगूण। पळ पळ छेड म्राधी रा रुख पळट, म्रर चलारा रै नाक मे दम म्रायग्यो। इण र साग-साग लरा भी म्रापरो जग सरू कर दियो म्रर व बडभागण' री छाती म थपडा मारण लागगी। 'बडभागण' काळजो मोटो राख्यो, म्रथाग जतण राखो म्रर म्रापरो छे नई दियो पण भगवान न उण रो छे लेवणो हो। उणी बगत मौत स्यारसो डरावणो रूप धारण करन तोफान फूफायो, म्रर चानणी चटूड रात न घोर म्रमारवी ज्यू बणायदी। चलारा म्रापरी जाण मे की पाछ नई राखी पण म्रब तो हाथ न हाथ सूभणो ई बद हुयग्यो, गेलो दीखणो तो छेड रयो। जाज गेल सू भटकग्यो, पण चलारा न म्रधार र कारण ना तो ठा पडी म्रर ना व तोफान र कारण जाज माय की कबजो राख सक्या। म्रधार मे सगळा हाय-त्रोय करण लागग्या। कप्तान जाज री चाल न म्रेकदम रोकण री कोसीस करी। पण जाज तो तोफान र म्रधीण हो कप्तान रै हाथ री बात नई रई। लरा टकरावण री म्रावाज म्राई। कप्तान सगळा र सावधान हुयता थका भी फेर सावधानी सारू घटी बजवाई। म्रा घटी खतर म्रथवा मौत री ही। देखता देखता जाज जायर चटटान सू टकरायग्या। टक्कर इत्ती लूठी लागी क जाज रा फूतरा-फूतरा बिखरग्या। म्रोय हाय होय, म्रोय हाय री करळाट उठी, म्रर सगळा मुसाफर पाणी र पेट मे गया। पण बा माय सू भी जीवतो रयग्यो ईनक, म्रर दो जणा दूजा। वार हाय कोई टूटा भागा लठ्ठा म्रथवा पाटिया म्रायग्या हा, म्रर ब वार सायेर म्राधीक रात तई बवता रैया। म्रा तीना र सरीरा री सगती तो सोळ म्राना टूटगी ही, पण प्राण वाला लागै, इणी कारण म्र लक्डी र सबळ सू भटक्योडा रया। बीन ढील नई दी। काळी रात री छेडो म्रायो, म्रर तडको हुयो जित्त ब तीनू म्रेक टापू रै कनार लायर न्हाखीजग्या। वा माय सू म्रेक रो नाव हो हटर, जिक री म्रूमर ईनक र लगे टगे ई ही। तीसरोडो तो हाल छोरो सीक ई हो। कद मे तो पूरो बध कर लियो हो, पण हाल होठा माय मूछ ई पूरी फूटी नई ही।

जद दिन री दो बजगी, तो ईनक थोडो हाथ हिलायो, म्रर पसवाडो फोरयो। वठण न खसै तो सगळो डील म्रकडोज्योडो हुवण रै कारण बठयो ई हुयीज कोनी।

छेवट तीन च्यार बार हाथ पग ऊचा-नीचा पटक्र बी कोसीस करी, अर ऊभो हुयग्यो। प्राण वचग्या इण रो हरख तो हो पण अबै कोई जगळी जिनावर भख लेसी, इण डर सू ईनक बिचार म पडग्यो। चालणनै लसै, तो पगा रो सत निसरयोडो। पीडया न थोडी दावी मसळी, अर बीनाली चाल मे आगै गयो। ईनक र हरख रा पार नई रयो, जद बी हटर न तावड मे गरा सास खाचते देखयो। नडा गयो, जायर थचेडियो, छाती अर मगरा र हाथ फेरयो, हाथ-पग चीयया सद हटर आख खोली। ईनक हटर री छाती माय पडर बीसू लिपटग्यो, अर दोना री आख्या मे पाणी आयग्यो। ईनक भट आख्या पूछर कयो—"अर हटर, अक अर अक इग्यारै हुव। डर मत, अब आपान जिकी हालत मे भगवान लायर धर दिया उण रो मुकाबलो करण खातर त्यार हू जावणो चाईज। दोनू जणा उठग्या, अर आग गया। तीजाडा बदनसीब भी आयग्यो। बीरी हालत खराब ही। कोसीस र अपरायत भी बो भटदणो फिरण घिरण जिसो नई हुयो।

इण टापू माथ आ तो आफत ई ही क आ तीना न टाळर चौथै मिनख—जाय रा मूडो बठ देखण न नई मिल। पण खावण पीवण न अठ तोडो नई हो। भात भात रा कवळा-न्वळा मीठा मीठा इत्ता फळ हा क निरखत भार सू लडालूम हुयोडा। तीनू जणा फळा न सकते सकत डरते डरते चाखर देखया। इमरत री जात! ब डरग्या क अठ इसा फळ कई जादूगर या भूत-पलीत री करामात तो नई है पण जद तीन च्यार दिना म भी कोई डर डाकर ध्यान मे नई आयो तो ब निधडक हुयग्या। माग सू अक जळ सोत भी हो जिण रो पाणी जाण मिसरी म घुळर आवता हुव। घर-बार तो छूटग्या आखी दुनिया सू अळगा भी हुयग्या, पण भूख र बिन्न को मर नी, इत्तो तो नेचो हुयग्यो।

अब लार रयो जगळी जिनावरा रो डर। जगळी जिनावर बठ हिंसक जात रा तो कोइ हा ई कोनी। हा जिका सुसिय हिरणिय जिसा क्वळे टिया जिनावर हा। ब इत्ता निधडक विचरयोडा हा क डर सार समझ ई नई। जे कोई बारो सिकार करणा चावै तो ब प्राण बचावण खातर भागणो जाणै ई नई। इसा निरदोस अर भोळा जिनावरा रो सिकार करण री गवाई आतमा नई दी। दो च्यार बार तो ईनक अर हटर बा जिनावरा रो सिकार कर्यो, फर बान आपन गिल्याण आयगी—अरे आ जिनावरा रो तो भी टापू। आर घर म सरणार्थी बणर आया म्ह अर मिजमाना न ई मारा। आ कित्ती बडी क्रितघणता है। बा सिकार करणो बद कर दियो।

ईनक आपर आसर खातर जगा जोयी अर आखर पाड रै हेठली अेक गुफा माथ जिको रो मूडो समन्दर कानी हो ताड रा पत्ता छायर अेक भूपडी त्यार करी जिकी आधी भूपडी अर आधी गुफा रूप ज्यू ही।

इण तरै इण इन्दरलोक र बगीच मे, जठ रसाल सू अधिका काई नई हो तीनू जणा बसग्या । इसी वठै हवा कै मिनख मस्तो सू झूलण लाग जाव । सेंवती-सवती गरमी उठै बारै ई मास रव, पण फर भी व तीनू, इसै देव-दुरळभ वातावरण म भी अमूभ्योडा हा, जेळ मे हा, अर वठ सू छूटको पावण खातर वो बारी आत्मा कळमळावती ही । इण रो अेक कारण हो । छोरो हेनरी तो आया पछ कदेई सावळ रयो कोनी । वो हरदम मू पडी र माय ई पडयो पड यो ओय हाय करतो रवतो । बद-डाक्यर वठ हा कोनी इलाज कराव तो भी कीरो करावै ?

परवार मे जे अेक जणो मादो तातो हुवै, तो नात सारू सगळा री सुख-सुविधा म फरक पड । इणी तर जे अेक जणो अपरोगो अथवा मुतलबियो हुवै, तो वो परवार रूपी इमरत म जर जिसो काम कर, अर सगळै मुख न दुख म बदळ देव । पण तीनू साथी दुस रा मतायोडा आफत रा मार्‌या । माद री देखरेख करणो सगळिया रो फरज है । दोनू जणा हनरी खातर सोत सू पाणी लावता, तोडर बोर मन-भावता फळ लावता, उठायर बीन छया-तावडै सुवाणता । पण इत्ता हीडा र उपरायत भी हेनरी री मादगी म मुधार नइ आया । उलटी बीरी हालत दिनोदिन बिगडती गयी । तीन बरसा तई वो लास रूप मे जीवतो रैयो । अेक दिन तग आयर कयो—"ईनक चाचा, म्हार दुख सू थे दोनू बीधीजग्या । हू सावळ तो हू सकू कोनी । अेक अरज करणी चाऊ जे कबूल करो, तो ।"

ईनक कयो—"हनरी, म्ह सदेई तन म्हारो टाबर समझ्यो है, तो ई तू सक ? बोल तू काई चाव है ?"

हनरी र साव मूक्योड सरीर मे जाण पाणी कठ सू आयो ? बीरी आख्या सू टळ टळ बिरखा बरसण लागगी । ईनक आपर करडर हाथ सू हेनरी रा आसू अर गाल पूछया ।

हनरी कयो—"काका, जिकी जरणा सू था म्हारा सेवा खाया है, बा म्हारै बाप र खातर ई ओग्नी ही । नाबो मादगी सू भला भला रा धीरज अर ग्यान हीडा करत-करत उपपर उत्तर देय देय, पण था कदेई नाक म सळ इ घालयो कोनी । म्हारै कन ओर ता काई कोनी, हू तो उण मोट धणी न आ ई अरदास करू कै बा आपन इण कट माय सू काढ जिण सू आप पाछा घरे जायर आपर बाला रा मूडा देख सका ।

हेनरी र गाला माथ हाथ फरता ईनक कया— 'भगवान थारी अरज कबूल कर । पण म्हारो छूटको हुया सू पहै किसो अठ लारै रसी ?'

"नई, काका ! म्हार सू अबै मादगी री बवना भल कोनी । हू चाऊ, हू थान, काका हू थानै अरज कर, भग्वान खातर थ मन समन्दर मैं न्हाग दो ।'

यात पूरी हुवते-हुवते ईनक हनरी र मूंड माडो हाथ देय दियो—"मर हनरी ! हू तो तन स्याणो गिणतो हो, पण म्राज तो तू सफा डफोळपण री बात करग्यो । भगवान माथ भरोसो राखणो ।"

हेनरी री दसा बिगडती गयी, म्रर पाच बरसा री जीवत मोत मुगतर वी मुगती पायी ।

हेनरी जीयो जित्त ईनक म्रर हटर न बीरा हीडा चाकरी करणा पडता म्रर ब म्राखता भी हुयग्या हा । जदपी बा दरसायो कोनी, पण हेनरी री मौत सू बान ठा पडी क म्रब कित्तो घाटो पडग्यो । हेनरी थका कदेई भू पडी सूनी को रयी नी । ईनक म्रथवा हटर, दोना माय सू जे कोई म्रेकला बार सू म्रावतो तो सुख दुख री बात करण खातर हेनरी म्रस्टपौर हाजर लाधतो । म्रबै जद ईनक बार गयोडो हुव तो हटर म्रेकळापयत म्रनुभव, म्रर हटर गयोडो हुव तो ईनक रो सूनी भू पडी मे जीव म्रमूभ ।

इण हालत म भी ईनक, सरत सातर, मस्त रवण री कोसीस करतो, जदपी हटर केई बार मूडो टेरन बठ जाया करतो । म्रक दिन हटर कया— 'ईनक म्राखी जिंदगाणी इण टापू माथ ई खपावणी हैक म्रठ सू छूटण रा भी कोई मारग काढणो है ?"

ईनक कयो—'बीरा म्हारी म्रक्कल माथ तो परथर पडग्या । मन तो कोई उपाय सूझ कोनी, थारी समझ म जे कोई जुगत म्राव है तो तू बताव ।'

'मन जच', हटर कयो, परसू म्है म्रेक बडो सारो रूख जडामूळ सू गयोडो देखयो । जे म्रापा उण रूख र तण रो मायलो भाग बाळर बीन थोथो कर लेवा, तो फेर बीर सायेर म्रापा म्रठ सू निकळण री चेस्टा कर सका हा ।"

ईनक कयो—"काम तो कठण है पण कोसीस करण म कोई म्राट कोनी ।

हटर तणो बाळण म लागग्यो । इण काम मे बी म्रापर सरीर री भी सुध बुध नई राखी । नकीटो म्रो हुयो क तावड म्रर बास्ते री तपत र कारण बीन दाऊजळो हुयग्यो म्रर बो म्रचाणचक ईनक न निराठ म्रेकलो छोडर बह घर गयो परो ।

म्रापरा दो मिन्तर उठग्या, म्रर बो रयग्यो, इण मे ईनक न भगवान र घर री म्रेक सन लागी । मन बी बचायो है, तो बो मन म्रूबारसी भी सरो । मन घबरावणा नई, पण उण रो भरोसो राखर म्रडीकणो चाईज ।

भगवान कोई चीज नई देव, तो ना देवो, मिनख निरवाळा हुयर बठ जाव—म्रा चीज म्रापा र करमा मे लिखयाडी कोनी । जलम कगाल कदेई पीस खातर माथो पटकर बोक कोनी । पण म्रेकर-सीक काई पदारथ इधकार म म्राय जाव, म्रर फेर

मुग जावै, तद ग्यानी सू ग्यानी लोका रो ग्यान भी धरे नई रव, भर बै भ्रग्यानी समभीजरण भ्राळा जिसो ई ग्राचरण करण लाग जावै ।

ईनक जे सरू मे इण टापू माथै भ्रेकलो ई भ्रायो हुवतो, तो भ्रेकलो भ्रावण रो इत्तो दुख नई हुवतो जित्तो दो जणां रो साथो हुयर फेर छूटण सू हुयो । खावो, पीवो मौज करो पण बोल बतळावण खातर मिनख रो जायो भ्राख देखणनै ई कोनी । किसीक है थारी माया–भ्रा मोचर ईनक चक्राया करतो । टापू रा मीठा फळ भ्रव बीन बाडा लागण लागग्या । टापू र सोतै भ्रर मीठै जळ री धारा रा पाणी खारो लागण लागग्यो । दिन रात मिलायर चौईस घटा रा हुया करै, भ्रर बठै भी इत्ता ई बडा हा पण इनक न पाड जित्ता दिन, भ्रर भ्रथाग काळै सागर जित्ती लाबी चवडी राता लागण लागगी । पाड किया टूट, भ्रर समदर किया खूटै—भ्रा ई निरासा बीग माथ दिन रात छायोडी रवनी ।

इण सुनवाड मे ईनक र कन काम काज तो काई हा कोनी । भूख तिस लागती तो बो फळ खावता पाणी पी लेवतो, नई तो भ्राख दिन भ्रापरी भूपडी रै कन बठयो-बठया कुदरत रै फूटर नजारै न देख देखर इण तरै सिर धुण्या करतो ज्यू बूढो भ्रादमी भ्रापरी जवान मदमातो धण न देख देखर माथ मे तडीड लिया करै ।

ईनक री नजर जठीन जमगी बठीनै जमगी । कदई बो गिगनार जेडा भ्राभो-छूवणा पाडा मामो भाकनो भ्रर ताकतो—तळै सू लेयर चोगै तई कुदरत–भ्रा भ्रापर लाडेसर पाड खातर जाणै सू ग रग रो भगलो पैरायो है ।

इण तर पाड री तळेटी सू चोटी, भ्रर चोटी सू तळेटी देखता-देखता जद निजर थाकेल हूजावती, तो ईनक भ्रापरी रुख हूरे भरे मदाना कानी करतो । जित्ती दूर तई निजर पूग मैदान, मैदान, मैदान ई मैदान ! ईनक भगवान रै न्याव माथै पस्तावो करया करतो–वाह रे भगवान ! इसा सरग-लोक जिसा मैदान, भ्रर मानै भोगण भ्राळा कोई नई । इसा-इसा इमरत फळ भ्रर चाखण भ्राळै रो नाव ई नई ! भ्रजब लीला है थारी !

मैदाना सू ईनक री निजर टढी मढी घाटया कानी जावती जिसकी मैदाना सू टुरनै ठेठ पाडा माथै चढयोडी इया लागती जाण पिरथी सु सरगलोक जावण खातर न्यारा-न्यारा मारग हुव । ईनक मन म कळपता—भ्रब भ्रनी भ्रर म्हारा टाबर जीवता थाडा ई रया हुसी । भूख भ्रर गरीबी र कारण व सरीर छोडर सरग सिधारग्या हुसी । जे भ्रां रस्ता र सायर-सायेर हू सरग पूग जाऊ, तो बठै मन मिल तो जाव । इणी भावना मे प्रवाहित हुय न ईनक कदेई कदेई घाटी र मारग दुर भी जावता, पण फेर जद सचेतन हुवतो, तो भ्रापरी भूपडी मे भ्रायर सूय जावतो ।

कदेई-कदेई ईनक री निजर नारेळ र लाय भर पतळै झाड कानी जावती अर वो सिर माथै जायर पत्ता सू बण्याड पेड रै मुगट न बठयो-बठया देखतो रवतो। मन मे सोचतो-नारेळ रो पेड कित्ता सुखी है हरख सू नाच ! नाचै आपेई। आपर कबील र भेळा है, म्हारै दई अेक्लो थोडो ई है।

जद ईनक निरादम भोम री सुखमा अर गरिमा न निरख निरखर चमगू गो सो हुयोडा बठयो रव, अेकाअेक रग बिरगो कोई पखेरू बीजळी र भबूक ज्यू उण री दीठी रो मारग काट जाव, अर ईनक रो ध्यान टूट जाव—रेसमी चमक, मुखमली क्वळास, किसाक सोवणा, मन मोवणा है अठ रा पखेरू। पण मन री बात किण र आग कवू, आ सोचर ईनक लाँबो सास लेयर बठ ई निढाळ हुयर गुड जावतो।

असवाडल—पसवाडल रूखा कानी निजर जाव तो बठ सू पाछी हटण रो नाव नई लेव। भात भात री बेला रूखा र सायेर ठेठ ऊची चढेडी। मन में करयो, जे अबार वल न रूख सू अळगी कर दव तो काई हवाल हुव ? बापडी वल धरती माथ आयर पड जाव। बिना रूख बेल अभी थोडी ई रय सक। बिना मिनख नारी रो निभाव थोडो ई हुव अर इण र साग बरसावध पली बिछडयोडी अनी रो चित्राम नणाग घूमण लागग्यो। अनी ! त मन पाल्यो घणो ई पाल्यो रोय रोयर पाल्यो, कळप-कळपर पाल्यो, पण हू जिद्दी टूठो, थारी बात मानी कोनी जिक रा फळ हू तो पावू ई हू, पण थारी काई दसा है, इण री कल्पना किया करू ? इण तर बेला लिपटयोडा रूख निजर जाव जित्त तई दीसबो करता, अर ईनक नै इया लागता, जाणै ईनक अनी, अनी ईनक आपस में गळबाखडी घाल्या अभा है। फेर जद ध्यान आवतो कै दोना रै विचाळै अथाग सागर आयोडो है, मेळ कठ, मिलाप कठ, तो ईनक आख्या मीचर बठ जावतो।

अ द्रिस्य ईनक रोजीन देखतो। मिट दो मिट खातर नइ लगोलग अपलक नणा तू केई घटा तई देखतो, पण जिकी चीज न देख्या बीर अतस रा कवळ विगसतो जिण खातर बीरा हियो रात दिन छटपटावतो, बो हो मिनख रो, मानवी रो मूडो। ईनक चावतो—कोई मिनख दीस, हू बीसू बात करू, म्हार जेळखान री काणी बीन सुणाऊ, जे कदास कोई दयाल आत्मा मिल जाव तो सायद म्हारो इण सरग री जातना सू पिंडो छूट जाव। ईनक न रळी आवती क कोई उणन आयर हेलो कर ईनक, ईनक ! पण मानवी रो जायो बठ तो आख दखणन ई कोनी हेनो करै कुण ? जद बठ सायती छायोडी हुवती तो सागर र केई पखेरू री करकस वाणी सुणीजती जिकी काळज न बाण ज्यू बीधर निसर जावती। कदेई-कदई तो अ पखेरू ईनक र माथ ऊपर मडरावण लाग जावता जाण गिरजडा आपरै सिकार

माथ घूम । काना रा पड़दा फाड़ती चरचराट सुणर ईनक काना मे आगळया घाल लेवतो ।

पण आ इसी जगा ही क जठ ओर कोई मीठी धुन री राग रागण्या तो सुणन खातर मिलती कोनी । जे सागर कानी निजर कर, तो कोई दो कोस रै आतरै सू परवतावार छोळा आवती दीस-अेक र लार दूजी, दूजी लारै तीजी, तीजी लारै चौथी, अर इणी तरै । लैरा कनारै आयर नडली चट्टाण सू तळाछ खायर टकराव, तो ईनक न लखाव जाण क कैव—अबै तू पड्यो माथो फोड, काई आणी जाणी कानी । म्हानै देख, माथो फोडता फाडता हजारू बरस बीतग्या, पण कुण सुण ?

कदेई कदेई जद वायरियो बाज तो सू-सू री अवाज निकळ । पत्ता आप सपरी मे रगड खाव । ईनक न इया लखावै क पत्ता आपस म ईनक री मूरखाई री मजाक उडावण खातर जोर जार सू हसै है—किसोक मूरख आदमी है, लखपती हूवण र सपना म आप तो अठ आयर खोड मे पडग्यो, अर लुगाई-टाबरा नै अनाथ कर दिया ।

कदेई वो उण टापू री जळ धार नै भी देख्या करतो जिकी कै भूतावळ सू सागर म रळ जावती । धारा री इण भतावळ न देखर वो अंनी न याद कर्‌या विना नई रैय सकतो । सोचतो—जे हू धरे पूगू, अर अंनी मनै दख, तो वा इण धारा र वग सू म्हार सामी भाजी आव, अर म्हारी भुजावा म लुक जाव । पण जद अंनी सू मिलण री असभवता माथै ध्यान जावतो, तो हिरदै री गुदगुदी ठडी पड जावती अर सगळो डोल ढीलो पड जावतो ।

आपत तो आ ही क अठै कोई काम भी जे करै, तो काई कर, कीरै खातर कर ? ईनक इसो आदमी जिको रात दिन मोरमो करतो भी थापतो अर थकतो कोनी, अब अठ आपरा दिन किया खुटाव ? पणीसीक बार वो आपरी गुफा में ई बठ्यो रया करतो जिणरो मूडो सागर कानी हो । इण गुफा मे वो बरावर किता ई घटा तई बठ्या रवतो । बिना कठीनै निजर जमाए वो सागर कानी मूडो कर्‌या बठ्यो रैवतो । बीरा हाथ पग काई भी हिलता नई, भाठ री मूरत ज्यू ईनक बैठ्यो रवतो । इण कारण बठ रा मोकळा जिनावर ईनक न कोई निरजीव पत्थरय ई गिणता । ओर तो ओर, दूध गिलारी जिसा डरोक जीव-जन्त भी ईनक न निरजीव जाणर नणरै माथ पडण लागग्या । अर ईनक बान भळगा नइ करतो इण कारण जीव जन्त उणर माथ मोकळो ताळ बठ्या रवता ।

इण गुफा म बठ्यो-बठ्यो ईनक समदर कानी ताकतो रवतो, इण श्रडीक में क अब ई काई पाल दीस, अब ई कोई जाज निजर आव । इसतो रयो, आस्यां

फाडतो रयो, नश ऊंची करतो रयो, पण पाल रा दरसण कठै ? तो फेर किन बिंया खूटतो ?

भोर म उगूण दिस सूगत भाण रो किरण-जाळ ताड र पत्ता माय सूं अगणित तीरा ज्यूं ईनक री झूंपडी मे बिखर र बीन सचेतण कर नाखतो। उण री झूंपडी म आया पछ सूरज री किरणा सागर जळ सूं रमण न आवती, अर वानै देखता ई जळ आपरो रात आळो काळो गाढो उतारनै चमचमाट करतो आवरण धारण कर लेवतो। देखता देखता अूगण आळो भाण ठीक सिर माथ चढ जावतो अर उण र तेज र कारण सगळो रोई हरख सूं नाचतो। सूरज माथ ऊपर घणो टिकतो कोनी, ज्यूं जगती थिर नइ रया कर। आथूण कानी सूरज इत्तो बगो पूग जावतो ज्यूं जवानी ढळता भट बूढापो घेरा घालण लाग जाव। बिसूं जन सूरज री किरणा सूं फेर पाणी माथ ललाई भळकती। इयां लगावतो जाण किरणा न बईर करण खातर सागर-जळ मुळकै है।

सूरज आयो, अर गयो परो, पण ईनक हाल बठयो है जाण कोई जोगी समाधी म लवलीण हुव। तद काई इचरज जे पख-पखेरू आयर ईनक र माथ अथवा खधोल बिराजर घडी अधघडी बिसाई लेय लेवता।

किरणा र बिजोग सूं सागर र मन म मंधारो भरीज जावतो अर सगळो टापू रात री गोदी मे सोय जावतो। ज्यूं लुगाई मर जाव, पण बीरो टाबर सनाणी सरूप लारै रय जाया करै, इणी भात सागर न कळभळ करता देखर अेक अेक किरण आपर टाबर रै सरूप मे सागर खातर अेक अेक तारो छोडगी जिण सूं आपरा असख टाबर देखर सागर आपरो जीव जजूबा सक।

अेक अेक धण री अक—अेक औलाद सूं भी सागर न सतोस नई हुवतो, अर वो किरणा र बिजोग म पछाडा खाय खायर ऊंधो पडतो, अर सागर रै पछाडा टाळर और कोई भी अवाज उण टापू माथ नई सुणीजती।

ईनक निरी वार बठयो बठयो रात न तारा गिणतो रवतो, अर इण तरै रात सूं दिन, अर दिन सूं रात रो क्रम चालू हो। फेर उणी तर ताड र पत्ता माय सूं, रात न दगो दयर गयोडी किरणा निरलज्ज हुयन आवती अर सागर सूं रमती। ईनक न सागर बडभागी लागतो अर बीन आप री अनी अर टाबर याद आय जावता। बरसा रा बरस बीतग्या पण कोई नाव निजर म आई कोनी, जिकी को ई आई नी।

इण तरै मूर्तिमान हुयोडो ईनक री निजरा केई बार टापू अर सागर री सीवा डाक जावती, अर कित्ती ई धुंधळी धूंधळी तस्बीरा उण र नणाग झूलण लाग जावती। बै ई चीजा दीसती, जिकी बीरी देख्योडी ही। वाल्टर अर मेरी री चरपराट करती बाणी कदेई काना म गूंजती तो कदेई अनी रा सगीत जेडा सुर भणकार

करता लखावता । कदेई ईनक रै सामनै आपरै छोटे सक घर रो नकसो आवतो—कित्त कोड सू कित्त चाव सू बणायो हो घर ! घर रा कमरा, पिलग, बासण भाडा, सगळा सामन नाचण लाग जावता । आपरी गळी याद आवती, जिकी पाड री चढाई वानी ही । इण र साग फिलिप री चक्की रो भी ध्यान आय जावतो । फेर आपरै गाव री गळ्या रो चित्राम नजाग मड जावतो—दोना कानी आपस म अेक दूज सू गुथीज्योडा रूप किसाक आछा लागता ! फेर वा जगा याद आवती जठ सदा बहार पेड मोर रै आकार म कटयोडो हो । वो अेकायत रो भवन भी याद आवतो जठ वो सुक्रवार न मछल्या नवडावतो ।

जद इण तरै याद करण न बठतो, तो ईनक न आपरा घोडा भी याद आय जावतो जिण माथ समान लाद लादन वो अळगी अळगी जगावा सू बिणज कर्या करतो । घोड सिरसो प्यारी बीन आपरी नाव लाग्या करतो हो, पण आवती वेळा बीन बचदी ही, वा नाव भी ईनक न याद आयगी । नवबर मास रा भोर अर झाझरका भी याद आवता जिका ओस अर कोहर रै कारण धू धळा धू धळा लागता । साथ ई हळकी-हळकी फवार याद आवती, अर सिडतै पत्ता री बास चेतै आवती । गर गभीर सागर री मधरी अवाज याद आवती, सागर रो सीस जिसो रग भी याद आवतो ।

अेक दिन अेकाअेक जाणै बीर काना म गिरजाघर री घटया री मीठो मीठो टणटणाट सुणीज्यो । अवाज इत्ती प्यारी लागी, क हरख सू बीरो हियो उछळण लागग्यो । बीन इया लखायो जाण आ अवाज बीर गाव सू ई आवती ही । अर जद बी इण सोवण सूगल टापू न, जठ वो कैदी ज्यू पड यो हो फेर आख पसारन देख्यो, तो बीरो जीव उचटग्या । अठ री सूनवाड अर अेकायत बीन इत्ती खळी, कै बीर मरण म काई बाको नई रयो । बस आसा री किरण ही तो उणरी आ धारणा क परमात्मा सगळै बिराजमान है, कण-कण म है, हू अेकलो कोनी म्हार कन और भलेई कोई ना हुवो, म्हारो भगवान तो है । बींसू परवार ता काइ चीज कोई जगा है ई कोनी । फर हू सोच क्यू करू ?—इया सोचर ईनक आपर उखड्योड जीव न पाछो जमावण री कोसीस करतो ।

जद मिनख दोघडचित्या मे हुव, तो आछै सू आछा भोग पदारथ भी रुच कोनी । जे देख्यो जाध तो ईनक इण टापू रो राजा ई नई बाज्या हो, पण बादस्याई कर कीर ऊपर ? दिन रात छुटकार र फिकर म धुळ धुळर ईनक र म थ मोस्या सू आगू च रजत जयती मनायली । जिका केस हाल काळा भवर रैवणा चाईजता हा बै किडावरा हुयर चादी ज्यू चमकण लागग्या । पण हाल छूटो

हुवण न यठ हो ? केई ऊनाळा अर सियाळा आया, अर पाछा गया परा, पण ईनर्व हाल निजरबद हो। इत्ता वरस वीतद हुयग्या, पण ईनर र हिवड म अनी अर आपर टाबरा नै दरसण री जिकी रळी ही, वा हाल मिटी कोनी। वा आ भी चावतो क हू म्हार गाव जाऊ अर वठ री गळया म फेर फिरू घूमू । अर अबाअेक वीर भाग जोर मारयो, अर जळमान रा पिवाड टूटग्या ।

००

पाछो घरे

मिनख रै भाग न कुण देख्यो है ? अेक दूजो जाज 'बडभागण' आंधी तोफान र कारण सागी गेल सू रळग्यो, अर पीवण सातर पाणी खूटग्यो । सजोग सू इणी टापू र पसवाड आयर ऊभग्या, पण जाज चालका नै आ ठा नई क ब किण जगा है । तडक री बेळा जाज रो अेक नाक्र टापू र कनारै घूमतो हो, अर वी निरमळ जळ न सळ सळ करते सागर मे रळतो दख्यो । तिस डाढी ही । धारा र नडो गयो । मिंट दो मिंट ऊभो ऊभो देखतो रयो । दो-तीन टोपा पाणी जीभ माथ न्हाख्या । इमरत [1] धोवा धोवा धापर पाणी पियो ।

इण जाज करमी भट आयर जाज रै कपतान न पाणी री इतला करी । कपतान आदमी भेज्या अर कयो— 'बगा जावो अर पाणी रा ठाव भर लावो ।"

ज्यू ई व खाथा-खाथा जावता हा बारा काळजा ऊचा चढग्या । अेक जणा तो भागर रूख माथ टगग्यो । अेक रूख री ओट मे ऊभग्यो । सगळा निहत्था नीसर्‌या हा, अब प्राण किया बचावै—वार सामी अचाणचक अेक इसी सूरत आयगी जिण रा लावा लावा उळभ्योडा केस सिणियो हुव ज्यू लागता हा । डाढी बध्योडी पण सवार्‌योडी नइ, जगळी घास हुव ज्यू । चामडी तावडै मे तप-तपर भूरी हुयाडी । इसी ठा पडी क आ सकस मिनखाजूण मे तो कोनी । व सोच मे पडग्या क ओ डाकी हैक राक्स हैक हाऊ हैक, जमदूत हैक, कुण है ? सगळा आप आपरी कळपना सारू बीरो अनुमान कर हा ज्यू ई, रयग्या । आ लोका मिनख हुवण री कळपना नई करी, कारण उणरो भेस इसो उदबुदो हो क कदई मिनख जात न इसा गाभा पर्‌या देखी कोनी । घास री जेवड्‌या बट बटर खाल रा बडा अर छोटा, रग रगीला टुकडा ऊपरल अर हठलै तिग माथ बाध्योडा हा ।

[1] पढार जाण क ओ उदबुद भेसो आपारो ईनक आरडन ई हो । इत्ता बरसा सू आख्या फाडता फाडता नीठ मिनख रा चरा दीस्या, अर मिनख बीन देखर सतरा-बतरा हुयग्या । पेड माथल ईनक मिनख न देख लिया हा । बो पेडर न डा गयो । आदमी घबरायो अर जोर सू अरडायो । बीरा हाथ पग धूजग्या, अर भळै ऊ चो चढण री कामीस मे वो जरा दणो हठ आय पड्‌या । ईनक बीन दगर हस्या पण आदमी न

बा हसी आपरी मौत जिसी डरावणी लागी । वो भागणो चायो पण पग रुपग्या । डील थर थर धुज । ईनक वीरा भाव लखग्यो अर काई बड़बड़ायो । आदमी र पल्ल फूटो आगर ई पड्यो कोनी । ईनक दो पावडा लार सिरकग्यो, अर हाथ सू अभदान दियो –डर ना । लार सिरक्या सू आदमी रो डर हळवा पड़न लागग्यो । बाकी आदम्या कानी भी ईनक सन करी । वान नडा बुलाया । व आयग्या । वान टूटी-फूटी जबान म कयो—"हू आदमी हू, डरो ना ।" वा भरण रा उदगम पूछयो । ईनक समझ्यो कोनी पण च्यार पाच बार सैन सू पूछयो तो वो समझग्यो, अर बान ठोड ठिकाणा लेयग्यो ।

इनक जाज करम्या न जद आपस म बोलता चालता सुण्या, तो वीरो इत्ता बरसा री सोयाडी बाक-सगती पाछी जागगी अर बा आपरा भाव बोलर थोड़ा थोड़ा समझावण लागग्यो ।

पाणी रा टाज भर लिया, अर व जाज म आयग्या । ईनक न देखर जाज रा सगळा जातरी वीर चारूकर घेरो घालर ऊभग्या । आपरी बावडती वाणी मे ईनक वानै आपर दुरभाग री कथा सुणाई । सरू सरू म लोका वीरो भरोसो नई कर्यो । लोक 'खी खी' हसण लागग्या, पण साच रो सस्तर अमोघ है । सरू म गत-खणा वणिया लोक भी थोडीसीक ताळ म बात सावळ ध्यान देयर सुणन लागग्या अर जठै मरम भेदी थळ आया, वठ सगळा रा हिवडा पसीजग्या । वा ईनक नै पै रण पसारू मिनखाचारै रा गाभा दिया, अर बीन विना भाड जाज म बठाण लियो ।

इत्ता बरसा तई ईनक अणबोल रैयोडो हो, इण कारण आपरी मायडभासा न भी बिसरग्यो हुव ज्यू ठा पडी, जीभ भी जाडी पडगी अर उथळीजती नई हुव ज्यू लखावण लागगी । वो जाज करम्या भेळो बठग्यो । वान आपस म बोलता हसता सुण जद बीन भी मू डो खोलण री रळी आव, पण इत्ता बरसा र अबोल बी म अभरोसो उपजाव दियो हो जिण सू वो सक र मारयो मू डो खोल नई । दो च्यार दिना तई साथी लोक वी न चलाय चलायर बतळायो अोर माडाणी बोलवायो । जद आछी तर बोलण लागग्या फेर तो वो खुद खुलर बोलणा चावतो । छोटो टाबर जद बोलणो सीख, अर अेक बात न दस दस बार कव, उणी तर ईनक तीन च्यार दिनां तई काम-बकाम खूब बोलतो ।

आपर गाव बावत समाचार पूछतो । अनी बावत पूछतो । टावरा बाबत पूछतो, पण वीर इलाक वानलो कोई भी हो नई इण कारण ईनक न कोई जाणकारी नई मिली ।

जिण जाज सू अै लोक जातरा करता हा बो इत्तो जूनो अर अधबळ्यो हुयग्यो हो क साध गरथा मे सागर माथ चालण जोगो ई नई हो । अठीन ईनक रै

उतावळ ही वगो पूगण री दण कारण जाज री धीमी चाल अर जगा-जगा रो ठहराव वीनें असणजोग लागण लागग्यो। इण जाज विच्च तो ईनक आपरी नाव में भी घणो खायो चाल सक्तो हो। हवा माथै भी ईनक न रीस आई। वा तो इसो जोरदार तोफान आया क 'बडभागण' रा माग फोड दिया, अर अबै हवा चालण रो नाव ई लेवै कोनी। जे हवा तज हुवै, तो जाज री चाल वधै अर वो आपर गाव वगो पूग सकै।

जाज र माय रयोडो तो ईनक हो, वीरी कळपना तो जाज रै घेरै मे जकड़ीज्योडी था ही नी। वा इग्लैंड पूगगी, अर ईनक रै बन्दरगाह रै तीर माथै, गांव री गळया म अर बजार मे विचरण लागगी।

अडीकता अडीकता छेकट इगलैंड रो सागर तट नडो आयो। तडक रा वगत, चदरमा मेघां र ओल हो। जिण तर एक प्रेमी आपरी प्रेमगा री धरती माथै पूग अर बीन उण धरती र कण कण म, हवा मे, पाणी म, छैया मे, तावड म आपरी प्रेमण रा प्रेम छळकता, सामो आवतो दीसै, अर वो हरेक चीज रो प्रेम सू उपभोग कर, इणी तर इग्लैंड रो तीर नडो आवता ई ईनक रै मन रो संसार पाछो गर्जित हुयग्यो हुव ज्यू लखायो, अर वो चाग र पाडा सू आयोडी हवा रा सास-उसास भरा सास लिया।

जद मुसाफरा अर दूज नोका र उतरण री वगत आई, तो फर बान ईनक रो घ्यान आयो। वा आपस म चन्दो करनै दत्ता पीसा भेळा कर लिया क ईनक नै वो जाज वीर गाव र बदरगाह लेजायन उतार द।

ईनक रो बदर आयग्यो, अर वो चुपचाप आपरै घर कानी टुरग्यो। फेर मन मे विचार आयो-घर कानी टुरतो ग्यो, पण घर हैक कोनी? फेर भी पग थम्या कोनी, अर वा बराबर घर कानी चालतो रयो। तीज पौर रा वगत हो। सूरज आभ म पळपळाट करता हो, पण मौसम ठडो हो, हवा सीळी ही, अर सरदी मोकळी ही। छेवट समदर सू काहरा उठ्यो अर चट्टानां री तेडा माय कर ठेठ गाव तई पूग्यो अर सगळ गाव म धुध छायगी। इत्तो अधारा छायो क हाथ न हाथ नई सूझ। ईनक र सामन सांवी पवकी सडक ही जिकी जागै जमी म वडगी क्यामै में तरगी-टा ई नई पड बठ गई। आग्या तरगायां सू इत्ती ई टा पड क पटीन डांडी री गार है था रायी है, पठ मेन बायादा है।

ईनक चालतो ग्यो। मन म प्रेम र गर आयो जिग रा डाळा सूकग्या हा, अर पत्ता गिरग्या हा। ग्गा माथ राबिन पछी बैठ्यो वळ्यो बटन बाउजे गावतो ठढा रोवता हुव ज्यू लगातो। ईनक मन मे यीन पूछ्यो—अर थारी जोडीवान कठै गई? ईनक रै आंखां म मनी री तस्वीर घूमणी दीसण लागी। ज्यू-ज्यू

कोह्‌रो धणो हुवतो गयो, ग्रधारो बधतो गयो । इण ग्रधारै म मी ईनक रुक्यो कोनी ग्रर बराबर पग मेलतो गयो । डाफर बाज । दात कडक्ड कर । काळजो धूज, पण मेलो नई सूझ । पण ग्रनी सू मिलण रो चाव किणी तर कम नई पड यो, ग्रर पग गला काटता रया । ग्रागर ग्रेक पळकदार रोसणी दीसी । रोसणी र जीभ तो नई ही पण तो ई जाण बी ईनक न कयो--"ग्ररे ! क्यू थारा भोगना फूट्या है ? *टकरा खावतो क्यू फिरै ?" इनक जाण ग्रा भासा समभग्यो, ग्रर बो उणी बगत* चुपचाप लारो गळी र मारग टुरग्यो । इण तर री ग्रडचणा ईनक न गोट सुगना रा लक्खण लागण लागगी । पण पग, ग्ररे, य तो ग्रथक गन मू चालता रया, जाणै थक्णो ग्रर सुस्तावणो जाणै ई कोनी । ग्रर छेवट बा ईनक नैं उण घर ग्रागै लायर ऊभाण दियो जठ ग्र नी रैया करती ही, ईनक न प्यार करया करती ही, ईनक र टाबरा न हुलराया ग्रर लडाया करती ही, जिका क बार ग्रापमी हेज र सात बरसा मे जलम्या हा ।

ईनक घर र ग्राग ऊभग्यो । उणी घर ग्राग ग्रणजाण्यो हुव ज्यू ऊभग्या जिणन ईनक ग्रापर लोई री कमाई सू, घण हरख कोड मू, ग्रनी ग्रर ग्रनी र टाबरा री सुख सोमती खातर चिणायो हो । बारण-बारया कानी सावळ निजर न्हांखी पण उजास रो काम नई । कान ढेरया, पण माय सू सपसपाट रो नाव नई । किंवाड र नैडो जायर जद खडकावण खातर हाथ बधायो, तो ईनक रा नण फाट्योडा रयग्या । किंवाड माथ ग्रेक कागद चेप्योडो जिण मे लिख्यो हो—बिकरी खातर ।

ग्रब ईनक सू वठ ऊभीज्यो कोनी । इत्ती ताळ ग्रणथक चाल मू ग्रविराम चालणिया पग ग्रब उत्तर देवण लागग्या, पण ईनक वठ फर ठर्‍या कोनी ग्रर गळी री ढाळ कानी ग्रौर ग्रागीन गयो परो । मन मे विचार करतो रयो—तो काई ग्रनी मरगी ? नई तो घर विकण रो काई कारण ! पण म्हारा टाबर तो हुवला । ग्रनी ग्रर टाबर दोनू ई कोनी ?

वठ सू टुरन ईनक जाजा मे माल लादण रै डॉक कानी टुरयो । वठ ग्रेक जूनी सराय ही जिकी न ईनक जुगा सू जाणतो हो । मन मे सोच्यो—वा सराय तो ग्राज सू मोक्ळा बरसा पली भी पड्‌ पड्‌ ही ग्रब तो धूड मे रळगी हुवली । पण तो ई देखू तो सरी । ग्रासरो तो लेवणो पडसी । ग्राभ ह० क्या रात कढसी ? सराय कानी टुरग्यो—कित्ती जूनी सराय ही वा । म्हार दा‍न री टेम सू मी पली री हुवली । *काठ र सिलीपटा र सायेर भीता चिण्योडी हो* । बोदी, सुळयोडी छात जिकी न उदेई खाय खायर थोथी कर न्हाखी ही ग्रर जिण म ऊपर सू धूड बरसण लागगी ही । चिड या भी ग्रापरा ग्राळना वणाय राख्या हा । भीता रा लेवडा उतरग्या हा ग्रर जगा जगा खागळा ग्रर खाडा पडग्या हा । मरामत कन्‍ई हुई कोनी ।

मराय रा मालक तो म्हारा मठ रैवता थकां मी सर्गो'र हुयग्यो हो। जद सराय मे भ्राया तो मालम पडी क इण रो मालक तो मरग्यो पण उणरी बडी मरियम नेन, दिनादिन घटत नफ र बावजूद मी इण नै हाल चालू राखी ह। ईनक न याद भ्रायो क किणी भ्रमान म भ्रा मराय माइशा सू गचागच भर्योडी रवती, पण भ्रब बा चलपल, बा रौनक कठ? सूनी-सूनी पडी है। कोई धर-वायरो हुय जिका भ्रठ भ्रासरा लक। ईनक भ्रठ ठरग्यो। जद मरियम नाव पूछ यो, ता ईनक भ्रोकरसी मरियम र सामो भांकयो, फर बोल्यो—म्हारो नाव, म्हारो नांव है 'नेटिव'।

मरियम 'नेटिव के, भ्रा बेटा, भ्रा सराय थारी है, तन भ्राछो लाग जितै कमरा में ठरजा। भ्रोकली रा तो दिन ई सूट कोनी। ई सराय म कोई कमाई थोडी ई है पण ई र मिस मिनखा रा मूडा तो दीस है। भ्रच्छ या, थबार तू थक्योडो हुसी, भूखो।"

मरियम राटी बणाई। ईनक जीमर सोयग्यो।

●●

सराय में डेरो

मरियम श्राछो श्रर वातेरण लुगाई ही। श्रापरा बस्ती मातर ई वो श्रा सराय हाल चालू राखी ही। जातरया सू वा गपसप लडायर श्रापरी टेम पूरी करती। जद श्राछा दिना री याद श्रावती माईना रो दुलार धणी रा प्यार श्रर श्रापरा जोबन री श्रमोलख घड या याद श्रावती तो बा श्रापरी काणी कवतो रवती श्रर रोवती रवती।

डोकरी बूढी ही, पण बळ रा हो नी चेताचूक नइ ही। गाव म घरणा श्राळी जूनी वाता ता म याद ही पण श्रबार काइ हुय रयो है इण सू भा नावाकब नई ही। मुसाफरा न बा नवी जूनी पूछती रवती, श्रर बार श्राग उथळती रवती जिण सू बाता री याद ताजा बणी रवती।

ईनक इण सराय म श्रावना ई माचो झाल लियो। वो बार घणा फिरता घिरतो कोनी, इण कारण माजी उणर माच कनै बठी वठी नवी-जूनी बाता सुणावती रवती। ईनक रो जीव संसार री मगळी चीजा सू ऊपोडो हो पण फेर भी बा माजी री बात रो हकारा देवतो। हकार सटट डोकरी न वयू बिराजी करू ?—वो सोचतो।

इणी तरै माजी श्रर दिन ईनक रो इतिहास सुणावणो सरू करयो। भोळी डोकरी न काई ठा बापडी न क ईनक बीर श्राग माच माथ सूत्यो हो। बा बापडी कळपना ई नई कर सक्ती ही क ईनक इसो बूढो निमळा भुळम्योडो श्रर कुड योडा हुवलो। इणी कारण ईनक री सगळी काणी—वीर नानडिय री मौत श्रर श्रनी री नाशरी री बात कई। फिलिप टाबरा न मदरस घाल्या बान सभाळया जिको बात भी कई। फिलिप बरसा तई श्रनी सानर तरसतो रयो, श्रर श्रनी टाळती रई श्रा बात भी मरियम श्राछी तर माटर सुणाई।

पछ श्रनी कठ गई ? ईनक पूछयो।

ए मगळी बात सुणाऊ, तू सुण बेटा ! मन श्राखर श्राखर याद है। श्रनी जिसी लुगाई म्हार दखण म दूजी श्राज तई कोई श्राई कोनी।" मरियम कयो—'चौगडद री टीका टीपणी री करामात श्रा हुयी क श्रेक रात श्रनी री नीद हराम

हुयगी। मोवण खातर घणा ई पसवाडा फोरया तडफा तोड्या, अधारो करयो, बारणा ढक लिया, पण नींद तो रूठगी जिकी रूठ ई गयी। अनी आख्या मीचै, पण आख्या मीच्या सू काई हुवै, रूठयोडी नींद तो मनी कोई नी।

खाट माथ पडी पडी तडफण लागगी। भगवान मैं सुरता जोडी—'हे नाथ, आज नींद उचटगी जद तू याद आयो है, नई तो तनै कदेई चितारण रो कोम ई कोनी। हे बावलिया! ईनक खातर म्हारो जीव रात दिन आक्ळ-बाक्ळ रैवै। तू मन परचो तो दे कै म्हार ईनक रो काई हवाल है। बो जीवै हैक थार परमधाम मे पूगग्या।"

मन मे माडी माडी कळपनावा रा गोट उठया, अर काळजा फाटण लागग्यो। बा सेंघ अनी सू भनी कोनी। बा उठी। अधारै में भींता टटोळी। तूळया री पेटी जायी अर झट अेक तूळी भिनगायर दीयो सजोयो। फर भागती भागती बाइबल उठायी, अर पोथी न अचाणचक खाली, अर जिको पानो खुल्यो उण माथ, आख्या मींचर बिना देखे बाच, आगळी मेल दी।

दीवट कन जायर पोथी ध्यान सू देखी। आगळी हठनी लण ही—ताड र रूख हेट? ताड र रूख हेठ काई? बा जिको परचा चावती ही, उण रो तो इण पाठ सू काई सवध भी कोनी। अनी सोच्यो—'खर क्यू फालतू म्हारो माथो खराब करू? रात मोकळी ढळगी, हाल ई जे थाडो आख मे बट पड जाव, तो डील हळको हू जाव।" अनी सायगी अर नींद आयगी।

पण अनी र इजरज रो पार नई रैयो, जद वीं देखयो क ईनक तो साचेई घणी ऊचाई माथ अेक ताड र रूख तळ बठयो है अर उण र माथ सूरज री पळपळाट करती किरणा मुख री बिरखा कर है।—"ईनक इण सैसार म रया कोनी।" अनी सोचयो। ईनक मरग सिधारग्यो, अर अब बठ कित्तो सुखी है। बठयो बठया सुख सू भगवान रो भजन कीतन कर है, अर भगवान री लीला म लवलीण हुय रयो है। बठ ना तो छळ है, ना कपट, सगळा सतवादी है, अर ईनक भी सतवादया री दुनियां म पूगग्यो। कूड-कपट री दुनिया म रोभा देखण नै मन छोडग्यो। अर हा अ तो ब ई ताड रा पेड है जिका र पत्ता न जन्मसळम रै लाका भगवान ईसू र स्वागत में बिछायर धरती न पाटदी ही।"

अर अनी री आख उघडगी—जागू हूक सोऊ हूक अनी चक्कर म पडगी। फेर अेकाअेक विचार आयो—"ईनक गयो गवायो, अर हू इण तर बींर लार सूकू, बापड शिनिय न तडपाऊ, टाबरा न मणमणा राखू, आ किस घर री स्यागप? अब म्हार मे अक्कल आवणी चाईजै।

उठर अनी मेरी र बिछावणै कनै गयी । बा सूती ही । ग्रेक बार तो साधो झालर उठावण लागी, फेर पाछी आपर बिछावण माथ आयगी । थोवाडी ताळ कमर म अठी उठी घूमी, पण हाल अधारो हो । ज्यू ई दिन री उजास लखाया, अनी मरी न चचेडी । मेरी चकरायी—आज तई मा कदई अधारै अधार चचहर जगाणी को ही नी ।

अनी क्यो—'मेरी, म्हू थारी बात मानण री बिचार कर लियो ।"

मेरी री नींद हाल पूरी उडी कोनी, इण कारण बा समझी कोनी क अनी काई क्यो । अनी जद मरी रा कांधा झालर आपरी बात न दुसराई, तो मेरी उछळर ऊभी हुयगी, अर वाल्टर नै भी उठाणयो । अनी कवण लागी जिकै सू पली तो ब फिलिप न बुलावण खातर घर सू भाग निकळ या ।

फिलिप घबरायग्यो, सायद अनी रै माथ मे कोई सनक आयगी हुसी—आ सोचर वो बिना मू डो धोया, अर बिना पट्टा बाया, हो ज्यू ई आयग्यो ।

जद फिलिप अनी र घर मे पग मेलूयो, तो अनी बारण कन सामी आयी, फिलिप सू हाथ मिलाया, बीन आपरी बाथा मे भर लियो अर दोना आपस म ग्रेक बीज रा होठ चूम लिया ।

फेर अनी बोली—"अडीकण रो अ धारो खतम हुयग्यो, अर अब कोई इसो कारण कोनी कै आपा ब्याव नईं करा ।'

दोनू टाबरा न मा र आचरण माथ इचरज अर हरख हुयो । इचरज न बा दाब लियो, अर हरख न चवड दरसायो ।

फिलिप क्यो—"अच्छया, अनी, थार जचगी तो भगवान र खातर, अर आपा दोना खातर अब ढील-ढाल ना कर । सुभ काम मे ढील आछी कोनी ।"

६०

आपरा भी आपरा कोनी

अडीकता–अडीक्ता जुगा रा जुग बदीत हुयग्या, इण कारण फिलिप न अनी साग ब्याव असभव लागण लागग्यो, पण छेवट बो दिन, बा घडी आयी। ब दोनू धूमधाम सू गिरज मे गया। और भी दूजा मोक्ळा लोग गया। टण–टणाटण, टण टणाटण गिरज रा सगळा घण्टा एक साथ आणद रो उदघोस करण लागग्या। घण्टा री टणमणाट आख गाव न सनसो सुणायो, क अनी अर फिलिप आज परणी जग्या है, जिका क इत्ता दिना सू, इत्ता बरसा सू आपस म एक दूसरं न परखता आया हा।

आज अनी इसी सज्योडी अर बणीठणी ही, क आपरी ऊमर सू पन्द्र बरस घाट लागण लागगी। लोक चकराया क ईनक सू ब्याव आळी बगत इणरो जिको मनमोवणो रूप अर कवळो डील हो उण मे, इत्ता बरसा र उपरायत मी तिल मातर रो फरक नई आयो। अनी पक्कायत कई जडी बूटी रो सेवण करती हुवली, नातर जोबन धन तो थिर रैवण आळी चीज कोनी।

पण अनी जद परणीजर फिलिप र साग गयी तो उणर चर माथ हरख नई, उदासी ही। बापडी अनी बचना म बधगी ही।

बा फिलिप र घर म रव पण अणमणी। बात करती करती बिचाळ ई चुप हूजाव, अर दो-तीन बार बतळाया मी पाछो उथळो नई देव। अर जे उथळो देवण री कोसीस कर तो आधो उथळो देव, अर फेर बिचारा री साकळ टूट जाव, अर बा आपरी बात पूरी नई कर सक। रसोई करण नै बठ तो ध्यान और कठान ई जाव परो, दूध ऊफणै तो उफणबो करो, रोटी बळै तो बळबो करो। घडी घडी बार, बा बिना बतळाया ई कय देव–'हैं ?", 'काई' ? बीन इया लखावै जाण कोई हर बगत बींर साग चाल है, अर कान मे कोई बात कव है।

इसी हालत र कारण अनी डरू फरू रवण लागगी। अेकली रो घर म मन नई लागतो इण कारण न तो बा घर मे अेकली बडतो अर ना अेकली रवतो। जद घर रो ताळो खोलर माय बडती तो, हाथ कूट रै माथ ई रुक जावतो। सायद बींन लखावतो क कोई पूछ है–'कठ जाव है अनी ? कीर घर मे जावं है ? तू

तो ईनक री बऊ ही, अबै फिलिप री किया बणगी। अर म्है विचार उठता ई बीरा पग बठ ई रुप जावता अर ना अेक्ली घर म नई बढनी।

सरू सरू मे फिलिप अनी न समभावण री चेस्टा करी—"अनी, तन काई लखाव ? कोई दीस है डराव धमकाव है ? बात काई है, मन जे तू बताव तो हू सावठ परबध करू।

थोडा दिन ओर हुया पछै फिलिप रो सोच मिटग्यो। बीन ठा पडगी क अनी रा पग भारी है अर इसी हालत म लुगाया आम तौर सू इया करण लाग जाया करै।

अनी री उथळ-पुथळ रो कारण तो उणर गरभ नई ईनक हो पण फेर भी फिलिप आपरी बात साची समभण लागग्यो, कारण जद अनी रै जापो हुयग्यो अर जद वा जाप सू उठी तो उणर माथ माथ सू सगळा वम निकळग्या। आपैर छोट टाबर साग जाण अनी रो आपरो नवो जनम हुयग्यो अर वा अेक दम नवी नवेली हुव ज्यू दीसण लागगी।

अनी छोट टावर न रमावण म बिलम्याडी रवनी। ईनक न अबै वा बिसरगी। अर जे बिसरी नई तो भी उणर मारग सू ईनक र ध्यान आळो रोडा अळगो सिरकग्यो। अब अनी फिलिप री सर्वेसर्वा है अर फिलिप अनी रो सर्वेसर्वा ! ईनक बापडो गयो गत्ता सू।

इण काणी सू ईनक र घर माथ क निनाड माथक केईतर रा भाव भी नई भळक्या। काणी सुणन आळ विच्च काणी कवण आळी अलबत परभावित हुयाडी ही। काणी कवता कवता किन्नी ई बार तो बीरी बोली गळगळी हुयगी, छाती भरीजगी, अर दो तीन बार बी आपरी आख्या पूछी, अर फर सरू करण रीं सगती बटोरण खातर थोडी थोडी थमी। हा, जद माजी कयो—'ईनक बापडो गयो गत्ता सू" तो ईनक आपरो किडकाबरो माथो दुख सू हिलावता कयो— "गयो बापडो गत्ता सू।" फेर मन मन मे सपसपाट करयो—'गयो बापडो गत्ता सू।'

ईनक र मन म जची— जद हू अठ आयग्यो, इण गाव अर गळी में जीवता जागतो पूगग्यो, अर म्है समाचार सुण लिया क अनी कठ है अर किण हाल म है तो फर जे अेक बार अनी न सोरी सुखी देख लू तो म्हार मन न सायती मिल जाव। अै विचार ईनक र मन मे उठता बो बार जावण खातर सभतो अर फेर पग पाछा पड जावता—कठ ई आ नई हुव क म्हार देखणन गया सू अनी री फूना भरी बगेची मे पतभड आय जाव। पण जिण अनी रो चरो देखण खातर हू वरसा सू इ छाळ हुय रयो हू, ईनक सोच्यो, बीन देख्या बिना म्हारो मन मान

नी ता कोनी। ग्रनी र ग्रधर' री ग्रेक हळकी सी मुस्कराट मे सगळो दुनिया री सरदा सू सौ गुणो सुख भरयो है। देखसू, देखसू पक्कायत देखसू।"

नवबर रो ग्रेक दिन भाएा बादळा री ग्रोट, दिन म भी उजास रो टोटो फर सञ्या पडता ई तो रात जिसो ग्र धारा छायग्यो। बा चुपचाप सराय सू निकळर पाड कानी जायर बठग्या। बठै बठयो बठ्यो ग्रापरी जीवएा री पोथी रा पाना पळटतो रयो जिएा म सुख दुख री हजारू बाता मड्योडी ही। पएा ग्रब बा माय सू ग्रेक भी कर्ईज नई सकती कारएा इनक रा हिरदो दुख सू काठो छलीजग्यो।

बठै सू फिलिप रो घर भी दीसतो हो, कारएा उएा मे तेज रोसएाी जगती ही, जिकी सू बीरो पिछोकडा ग्रर पसवाडलो पाडोस, सगळा सैचन्नएा हा। ज्यू समदर म तेज रोसएाी बळती देखर पखेरू उएा सू ललचायर नटा जाव ग्रर ग्रापरा मायो टक्कराव ग्रर प्राएा छोड दव इएाी तर फिलिप र घर री रोसएाी ईनक न माडाएाी ग्रापर कानी खाचर लयगी।

फिलिप र रवास रो कमरो तो मटक माथ हो पएा पिछोकडै म जिएारै ग्राग भगड ई भगड पडयो हो, ग्रेक छोटोसोक बगेचो भी लगायोडो हो। बाग समचौरस हो ग्रर च्यारू मेर टाटी खाच्योडी ही। तर तर रा, रग रगीला पुसब ग्राप ग्रापरी ग्रनोखी मन बार्यारय साग खिडावता हा। ग्रठ सदाबहार रा पेड लाग्योडा हा, ग्रर इएा बगच र च्यारू मेर गड्डा रो मारग बएायोडा हो। ग्रेक मारग बीचोबीच भी गयोडो हो। ईनक बीचलो मारग छोड दियो, ग्रर टाटी र सायेर सायर पेड रै लारै लुकग्या ग्रर बठ सू इनक बो निजारो दरया जिको, बा जे नई देखतो तो ई ठीक हा। पएा ईनक रा दुख इत्ता ग्रथाग हा क ग्रब ठीक बठीक रो फरक ई मिटग्यो। इएा दसा सू माडी दसा ग्रोर काई ग्रासी ?

सामली भीत माथ बेल बूटा कढयोडा है। ग्राज री नवी रग्योडी ज्यू दीस। वारनिस कर्योडी लकडी र चौखट माथ प्याला ग्रर चादी रा चिमचा, काटा तथा दूजा बासएा जचायोडा है जिका तेज च्यानएा मे चमचमाट कर। इएाी तर चूलो साफ-सुथरो—सगळा रा सगळा बासएा सोनै चादी ज्यू चमकै। चूल र जीवएा कानी फिलिप, जिको केई जमान मे ग्रएापूछयो प्रेमी हो ग्राज डील म लूठो हो ग्रर बीर डील रा वरएा गुलाबी हा, ग्रर बीरो टाबर बीर गाडा माथै लियोडो हो। ग्रर मेरी जिकी ग्रनी ली सू पछ जलम्योडी ही पएा ग्रनी ली सू लाबी ही, ग्रापर दूज बाप कानो लुळयोडी ही। क्वळा, सोवएा केस, पदमएाी सी पातळी ग्रर कद री पूरी, ईनक री लाडली बेटी, पीथ सू लटकायोडो हाथीदात रो छल्ला (जिको दात सोरा ऊगएा खातर टाबरा न चाबएा सारू देईजतो) लिया फिलिप री छोरी रै ऊपर हाथ पसार्या ऊभी ही। छोरी बी छल्ल न झालएा री कोसीस करती।

छल्नो गुदगुन्‍ हाथ मे भन जावतो, पण फर पाछो छून्‍ जावतो, भन जावतो फेर पाछो छून्‍ जावतो, इण तर रो कम चालतो, अर व सगळा घड़ी घड़ी बार जोर जार सू हसता जिण सू पमवाडलो मैदान भी गू जण लाग जावतो।

ईनक न विचार आयो— 'म्हारी बेटी आपर दूजै बाप रै टाबर रा भी इत्ता लाड कर है, जे म्हारी ई न ठा पड जाव क हू आयग्यो, तो आ कित्ता कोड कर !' आ सोचर बी आग बधावण सारू पग साम्यो, पण उगी बगत फेर दूजो विचार तग्ग उठी—ईनक थारी बेटी न तू एक जुग पनी अबोध मोस्या मे छोडर गयो, तन बा काई जाण, अर किया पिछाण ? जे ई न ठा पड जाव क तू आयग्या, तो ई बीन फिलिप वालो लाग जिमो सू थोडो ई लाग सक। तै इण छोरी खातर करयो काई है ? करगो चाव तो पक्कायत हा, पण भगवान न थारो करयो कबूल का हो नी।'

चूलै र डाव कानी अनी रसोई र काम म लागोडी ही। बा थोडी थोडी ताळ सू आपर टाबरिय कानी जावनी अर जद सगळा जणा हसता तो बा आप मुळकनी। घडी घडी बार फिलिप सू बात करती, फिलिप प्यारी आवाज मे बोलतो।

अनी र कन ई उण री बेटी वाल्टर ऊभो हो जिको मोस्या मे पणो नई हुवता थका भी कद म पूरो बध करयो हो अर डील म सैठो हो। बीं कयो—'बापू, बेबी म्हा सगळा म घणी फूटरी है।' आ सुणर फिलिप मुळक्यो। वाल्टर फेर कयो—'बेबी तू तो बौत हुसियार है भई। बोल, तू पढण खातर लन्दन जासीक आक्सफोड ?" फिलिप फर मुळक्यो। वाल्टर बेबी र गाला न आपर दोना हाथा में पालासाक दबाया। बेबी हसी अर सगळा हसण लागग्या।

जिण अनी खातर जिण मरी अर वाल्टर खातर ईनक घर बार छोडर, थोडो अर नाव वेचर परदेसा गयो बठ इत्ता रोभा देख्या अर मिनख बायर टापू मे रवता रवता मिनख सू छाडो हूजावण पर भी पाछो घर आवण री लालसा बणाया राखी बा बीरी धण आन बीरी धण को रई नी। बीं अनी र छाट टाबरिय नै देख्यो पण बो टाबर जिको आपर बाप र गोडा माथै किलकारया भरतो हो, ईनक रा नई हो। कुटम रा सगळा जणा अेक नई हुवता थका भी बै इत्ता घुल मिळग्या जाण सगळा अेक ई परवार रा हुव, फिलिप सू दूजो बाप हुवण री अथवा टाबरा सू दूज रा टाबर हुवण री गध रो लवलेस तक नई ही।

'किसक सुख सू आण' सू हेत सू अ अगळा रव पण इण मे म्हारो सीर अेक रत्ती मर ई कोनी। म्हारा आपरा टाबर जिका अब जोध जवान दीसण लागग्या, स्याणा समझणा हुयग्या, व खुद म्हारा को रैया नी ! अनी अर टाबरा

सू जिको प्यार अर ग्रादर मन मिलणो चाईजतो हो, उण रो ग्रिधकारी म्हारी जगा ग्राज दूजो ग्रादमी बण बठ्यो है।"

मरियम ग्रनी री सगळी बाता ईनक न मावळ मांडर सुणाय दी ही, पण काना-सुणी ग्रर ग्राख्या देखी म इत्तो फरक हुव क जिकी बाता ईनक मरियम कन चुपचाप चर माय बिना कोई भाव लाया, सुणता रयो, बी ईनक रो मन पीपळ र पान ज्यू डोलण लागग्यो।

सोच्यो—'ग्रनी फिलिप र साग सार सास बधी कोनी। म्हार ग्रावण री ग्रास छूट्या सू ई बी फिलिप रो ग्रासरो लियो है। जे हाल ई ग्रनी न ठा पड़ जाव क हू ग्रायग्यो, तो बा म्हार प्यार न ठुकरासी थोडी ई। जद ग्रनी म्हार साथ ग्रासी तो म्हारा ग्रापरा टाबर दूज बाप साग थोडा ई रमी।'

ईनक हीमत भेळी करी। हळो करयो—'ग्रनी!"

ग्रौर सगळा तो ग्रापरी बाता ग्रर हसा मे लागग्रोडा हा, पण ग्रनी र काना मे बा घणा बरसा पली री सधा हूनो पुगता ई कान ग्मडा हुयग्या। हाथ मायनो बासण छूटग्यो ग्रर बा सूनवाड कानी जोवण लागगी। मन मे कयो—"ईनक जिसी, ठीक ईनक जिसी ग्रावाज इत्ता बरसा सू किया कान म ग्राई ? हू ग्राप ग्रधगैली हू, सिनकण हू, बठी बठी र इया ई सईड उडग्यो। कठ ईनक है, ग्रर कठ ईनक री ग्रवाज है। बी री ग्राख्या ग्राली हुयगी, ग्रर बी ईनक सिवाय ग्रौर केई न ठा घाल्या बिना, बात पूछली।

ईनक र हिरद मे उथळ-पुथळ माचगी। "ग्रनी म्हारी है, टाबर म्हारा है। फिलिप! तू कुण है ? हू ग्रायो जित्त तै ग्रारी परवरिस करी थारो ग्रोसाण है पण ग्रव म्हारा न लायर मन सूप।' ईनक सोच्यो क इण तर जोर सू कऊ पण फर बिचार ग्रायो क जे हू चवड ग्रायग्या, तो इण घर री सायनी ग्रर सुख र लाय लाग जासी। सुख री जगा दुख ग्रापरो ग्रासण बिछासी। म्हारो ग्रठ ग्रेक पळ छिन खातर ई रुकणो ठीक कोनी। जे जीभ कबज म नई रई, तो गजब हूजासी। म्हार मन री रळी ठेठ सू ई ग्रा रई है क ग्रनी मोरो सुखी रैवणी चाईज, टाबरा न सावळ पढाय लिखायर हुसियार करणा चाईजै। ग्र दोनू काम फिलिप ग्राछी तर कर दिया, तो ग्रब हू ई री मनत रा फळ ईनै क्यू नी चाखण दू ?

मूडो खुलणो चाव। जीभ न रळी ग्राव क बा ग्रनी न हेलो करै। ईनक न डर हो क जे ग्रठ ग्रौर ठरग्या तो बो जोर सू चीख पडसी—'ग्रनी, मेरी वाल्टर!'

पगा मे ऊभो रवण री सगती नई रई। बो बठग्यो। सास फूलग्यो। वठ सू गोडाळिया गोडाळिया टुरण लाग्यो, जे ऊभो ऊभो जाव, ग्रर दीस जाव, तो किसीक हुव! पण गोडाळिया चालण मे भी ऊतावळ नई कर सक हेठ गट्टा

बिद्य थोडा है जे कदास ऊनावळ र कारण खडखडाट हूजावै अर घरम्राळा नै बम पड जाव, तो किमीक हुव । इण कारण भीत र सायेरै सायेरै, हाळ होळ ईनक बगेच र फाटक कन श्रायो । श्रधर सीव फाटक खाल्या, श्रर उणी तर पाछो जड न्यो जाण वेमार र श्रमर री श्राडा लाग ढक । अब वा सून बगड म श्रायग्यो ।

श्रठ श्रायर ईनक भगवान री प्रार्थना खातर लुळनो चावता पण गोडा रो सत निकळग्यो हो श्रर बो ऊधं मूड जमी माथ पडग्यो । पड या पड या श्राली जमी श्राग्ळ या सू कुचरतो रयो श्रर भगवान सू प्रार्थना करी— हे सरबसगतीवान म्हारा दुख अब हद सू ऊपर कर नीसरग्या । अब म्हार म सगती कोनी क हू श्रान सण कर सक । भगवान ! म्हारा मालक ! तैं मन उण सून टापू सू काढयो, मन मिनखा भेळो करयो श्रर श्रठ पूगायो श्रा श्रोल्या वेवा दखाळण खातर ई इत्ती किरपा करी ही काइ ? भगवान ! हू जाणू, तैं म्हारी बठै घणी घणी सायता करी । म्हारा तारणहार ! थार घर म दया रो पार कोनी । अबार तई ज्या करतो श्रायो है तो थोडी दया श्रौर कर, श्रौर कर म्हारा धणी ! श्रबार तन टाळर म्हारो श्रौर कोई कानी इण श्रेकलपायत र कारण म्हारा दम घुटै, श्रर इसी कुचमाद सूझ क हू हाथ भालर श्रैनी श्रर म्हार टाबरा न म्हार घर म लिमाऊ । पण नईं तू मन सगती दे, जिण सू म्हारी इण इछा नैं हू कावू म राख सकू,- म्हार जीवता जी श्रनी न ठा नई पड क हू जीवू हू । जे श्रनी न ठा पडगी तो बा घर री रैसी न घाट री ।"

ईनक फेर क्यो— 'भगवान ! तू मन इत्ती सगती श्रौर दे क हू म्हार टाबरा श्रागै भी म्हारो परचा नई देऊ । भगवान ! म्हार टाबर है पण हू बासू बोल ई सकू कोनो ? बान बतळाय ई सकू कोनी ? म्हारा टाबर ता मन श्रोळख कोनी पण जे कदास हू बासू बात करण न गयो परो, तो म्हार सू इया कया बिना क्रिया रईजसी क हू थारो बाप हू । पण नईं हू वासू बात करू कोनी । म्हारै भाग म टाबरा नैं चूमणो भी लिख्योडो कोनी श्रर ना म्हारी बेटी जिकी श्रापरी मा जिसी ई फूटरी है श्रर म्हारा बेटो म्हार उणियार पण म्हार सू ई अधको कदेई श्रापरो बाप समझर मन चूम सक ।'

इत्ती प्रार्थना करया पछ ईनक री जीभ रुकगी, माथो सूनो हुयग्यो श्रर सगळ डील मे सण्णाटो बयग्यो । ईनक न मुरछा श्रायगी श्रर बो थोडी ताळ तई इणी हालत म पड यो रयो । जद पाछो चेतो वापरयो तो श्राख्या मसळर उठयो, गाभा भडकाया श्रर सराय कानी टुरग्यो । श्राख मारग बो श्रा ई सबदा न उथळता रयो— 'श्रैनी न नई बवणो बीन ठा नई घालणी —जाण केई गीत री टेर हुव ।

पण सागर र खार जठ मे भी, उण र तळ सू फूटर निकळणियै मीठ पाणी र सोत रा पाणी ता मीठो ई निकळतो रव, इणी तर इण घोर दुख निरासा अर बेदना री घडी म भगवान मा र अटळ विस्वास ई ईनक रो अेकलो सायेरो हो। इण भरोस र कारण ई बो सोच्या करतो – 'भगवान करै जिकी ठीक कर।"

इण तर सोच बिचार करता करतो बो जद सराय पूग्यो तो रात खासा पडगी ही। सराय मे मरियम टाळ सगळा सोयग्या हा। बा ईनक न दवते ई बोली—'अरे बेटा! तू जुलम करै। इसी ठारी मे बार गयो इसो निमळो थारो डील, तू कोई थारी लुगाई टाबरा सू मिलण न गयो? तन म्हारी सोगन है तू सइया पड या पछ बार पग ना मेल्या कर।'

ईनक माच माथ बठर कामळ ओढली। माजी कन आयर बठगी। फेर पूछ यो – 'तू तो अडीकती अडीकती आखती हुयगी, गयो कठ हो आज?"

'निकळ यो तो घूमण खातर ई हो," ईनक कयो, 'फेर कोई सैंधा लाक मिलग्या बान देवण लागग्यो।'

'देखण लागग्यो?' मरियम कयो, तन हाल सावळ बोलणो ई आव कोनी। देखण लागग्योक बाता करण लागग्यो?"

'तू पढ्याडो कोनी, माजी,' ईनक कयो, 'माभी आदमी तू।

ईनक सोयग्यो अर मरियम आपर माच गई।



फेर मजूरी

दूज दिन ईनक सदेई आळी टेम उठ्यो कोनी । मरियम हेला कर्यो । ईनक कयो— नींद म कोनी, जागू हूं पण रात आळी मरती सू डील करडो हुयोडो है ।'

मरियम झट अेक चिमच म तेल तपायर लाई अर बोली—"ल, थोडो मालस कर ल जिको अकडाव उतर जासी ।

ईनक बठग्यो ।"मरियम कयो—"ल, हूं मसळ दूं । तू तो म्हार बेट जिसो है ।

जद ईनक आपरा पग भेळा कर लिया तो मरियम पसवाडली कुरसी माथ बठगी । बोली—'बटा तू अठ री ठारी जाण कोनी । मार्च-तात न तो माच सू हेठ ई पग नई टेकणो ।'

अबार तो दो तीन दिन हुयग्या, काई नवी बात सुणाई कोनी ।' कयर ईनक आपरी पीडी र तेल मसळण लागग्यो ।

मरियम कयो— बेटा, म्हार कन तो बाता रो अखूट भण्डार है जे वार मईना लगोलग कऊ तो ई खूट कोनी । पण थारी चिणपिण देखू जद म्हारो जीव उचट जाव अर हू अेकली बठी-बठी मन म ऊंधा गोट उठावती रंऊ ।'

ईनक कयो—'माजी अेक दिन था कळचक्की आळै री बऊ री बात भी कई ही नी ?"

हा हा, अनी अर फिलिप री पूछ है नी ?" कयर माजी आपरी कुरसी माच र नडी सिरकाई ।

तो आ काई काणी सुणाई ही क ई नाव रा मिनख-लुगाई साचई काई अठ हा ?' कवतो कवतो ईनक आपरी आख्या हेठी करया मालस करतो रयो ।

मरियम कया— 'तू जाबक सीधो आदमी है । हू कऊ जिकी बात तू सावळ समझ कोनी ज्यू लखाव । अरे बेटा म्है तन इतिहासी अथवा जोड् योडी काणी को सुणाई नी, फिलिप अर अनी दोनू हाल तो जीवता जागता सोरा सुखी बठया है ।'

ता माजी, अनी रो आगलो धणी परदेस कमावण न गयो, अर बीर पाछो आया पली अनी दूजो ब्याव कर लियो, पलड धणी रो काई डर ई को लाग्योनी बीन ? ईनक पूछ्यो ।

'डर ?" माजी कैयो 'डर री तू पूछ ई ना। डर र कारण ई तो बा बरसाबध फिलिप न टाळनी टरकावती रई जे डर नई हुवतो तो बा दस बार बरस गमायर ब्याव क्यू करती, पनी ई कर लेवती। डर र साग बा पलड घणी न प्यार भी करती। बो मालदार नो को हो नी, पण आपस म दोना रा जीव रळ्योडा हा। अनी री जगा जे कोई दूजी लुगाई हुवती, तो बा फिलिप जिस आदमी सू ब्याव करण मे इत्ता घोचा का घालती नी।'

'आ बात है ?' ईनक पूछयो।

'हा," माजी कयो— 'हाल ई जे कोई अनी न कय देव क थारो पैंलडा धणी मरग्यो, म्ह बीन मरयोडे न दख्या, तो बा याल हूजाव कारण पलड धणी आळो सूळो बीर काळज मे रात दिन खुर्मे।"

मरियम री बात सुणर ईनक री आख्या फाटगी अर बो फाट्योडी आख्या सू मरियम सामो झाकतो रयो।

मरियम पूछयो "क्यू उदास क्यू हुयग्यो नेटिव ? इसी ठा पड कै दूजी बाना बिच्च तनै आ बात घणी मुवाई है।'

'सुवाई तो कोनी, पण बरबात्ता माथै विचार करू हू। मिनख काई तेवड, अर भगवान काई री काई करद।' कयर ईनक चुप बठग्यो। मरियम न बारण कन केई दूज मुसाफर री भणक पडी अर बा उठर गई परी। ईनक मन मन मे कयो— "जे अनी म्हारै मरण रा समाचार पाया सोरी हूसी, तो, जद भगवान मन आपर घरे बुलाय लेसी, तो व मी अनी न मिल जासी। हू चाऊ क अनी सुखी रव, बीर काळज रो काटो अबार ई निकळ जाव पण कुमौत किया मरीज। हू भगवान र तेड न उडीकू हू।"

ईनक री हालत सुधार माथ आवणी सरू हुयगी अर वो आछी तर फिरण घिरण लागग्यो। अब पेट भराई रो सवाल सामो आयर ऊभग्यो। 'जे सइया दिनूगै मागण न निकळ जाऊ, तो म्हार पेट पूरती रोटया तो लियासू। ईनक सोच्यो, पण मगतो बणर दुनिया आग हाथ पसारू, दर दर रोटी मागतो फिरू, पग पग ठोकरा खाऊ, जद सिरजणहार मन कमावण सिमरथ बणायो है ? हाथ-पग मनत मजूरी खातर है दीन बणर मागण खातर पारका माथ मार बधावण खातर कोनी। ठीक है, आग आळो पू च गई कोनी, पण म्हारो अेक पेट तो हाल ई भर सकू हू। म्हार पेट खातर कित्तोक धन चाईज कित्तोक धान चाईज। हू मजूरी करसू अर पेट भरसू।"

गाव मे जिका घधा हा, वा मे कोई इसो नइ हा जिण री जाणकारी अर जिण री कुसळता ईनक कन नई हुव। कदेई बा जाज म पाणी भरण आळा ठाव

बणावण र काम म लाग जावतो, कदेई सुथार रो काम करण लाग जावतो कदेई माछ्या खातर माछल्या पकड़ण री जाळ या गूथण र काम म लागतो, तो कदेई जाज रो समान लदावण उतर वण र धध मे लागतो, अर इण तर आपरी जरूरत माफक पीसा कमायर पाछो बावडतो । सराय मे आया सू मरियम सदेई तळपूछा लेवती — आज कित्ता पीसा कमाया ? काई काई काम करयो ? थाकेलो तो को आयो नी ?'

ईनक पाछा इसा उथळ देय देवतो जिण सू मरियम राजी रवती ।

पण ईनक र मन मे उमग कठ ही, उछाह कठ हो ? काम कर पीसा, कमाव तो कीर खातर ? भेळा कर तो कीर खातर ? अ सवाल बीर सामा आवता, पण आ मे कोइ तत नई लागतो । आखर अतम माय सू आवाज आवती —"म्हार कुण है कोई कोनी । धणो खारमो ह कीर खातर करू, कीर खातर जोडू कीर खातर छोडर जावणो है ?

इणी कारण ईनक रा मन केई अेक काम म नई लागता । दस दिन अेक जगा काम करया तो पद्र दिन दूजी जगा । इण तर दिन तोडता तोडता बा सागी दिन आयग्यो जिण दिन ईनक जातरा सू इण गाव म पाछो आयो हो—साल भर बीतग्यो । जीवण रो आकरसण जद मिटग्यो, तो इसो जीवण मौत सू माडो है ।

ईनक रा खाचा ढीला पडग्या । काळज माथ भारी मदमो पूग्यो— साल बीतग्यो, अर हू निरुद्देस्य गोता खाऊ हू, म्हार घर थका घर आळी थका बेट थका, बेटी थका ! हू बात नैय ई सकू कोनी, बा सू भासण ई कर सकू कोनी । भगवान ! थारी गत यारी है ।'

चालता चालता बीरो डील गरम हुय जावतो, हाड भारी लखावण लाग जावता दो दो दिना तई भूख ई नई लागती । मरियम नोरा करती तो दो गास खायर उठ जावतो । दो दिन नाकरी गयो, दस दिन नागा करदी फेर काम माथ जावण री चेस्टा करतो पण ऊमा हुवण री भी आसग नई । मरियम पालती— बेटा तू कठ जाव आराम कर । मन तू म्हार जायोड जिसो लागण लागग्यो । इसी निमळाई म तन खारमो करण न किया जावण दू ।"

पण जित्त तई हलण हालना रया ईनक माच म पड यो रयर मरियम माथ भार बणनो कबूल नई करयो । बो काम माथ जावतो । पाछो आवतो जित्त थक्र चूर हुजावतो, भर घटा आध घटा माच लाथ सुस्तावतो, फेर जीमतो ।

आखर, बार निकळण जिसी हालत रई कोनी अर बो सराय र मांय माय ई रवण लागग्यो । मरियम कया— बेटा तू फिकर ना कर जे म्हारो पेट भरीजसी, तो थारो ई भरीज जासी । मिनख तो फालतू आपरी सोच कर सोच करण आळो तो मोटो धणी है ।'

पण ईनक री हालत बिगाड माथ ई रई, अर अब सराय मे घूमण लायक सरधा भी रई कोनी, अर बो कुरसी माथ बठयो रवतो अर मरियम लेन बीन राजी करण खातर, बीरो जीव लगावण खातर हरख री बाता सुणावती, हसावण री बाता सुणावती, पण ईनक र हसण रा, हरखावण रा दिन तो लार, निरा लार रैयग्या हा। अब कोई भी बात सुणर बीरो जीव सोरो हूवनो कोनी, हरखावणो तो आधा रयो। जे साची पूछी जाव, तो अब सुख दुख दोना सू बा उपराम हुयग्यो हो। धरती सू अळघो गया ज्यू गुरत्वाकरसण खतम हूजाव, इणी तर बो सुख दुख दोना री परिधि सू घणो अळघो पू चग्यो हो।

जद सागर म तोफान अयि जाव, जाज री हालत खतर म पड जाव। वतार अथवा दूज जरियै सू सायता री माग कर। सायता पूग्या पली ई जाज केइ चट्टाण सू टकराय जाव अर टूट जावण कारण उण मे पाणी भरीजणा सरू हूजाव अर बा डूबण लाग जाव। उण बगत सगळा री आस्या सायता सारू आवण आळै जाज कानी लाग्योडी रव--कोई पाल, मस्तूल, जे कदास दीस जाव तो प्राण बच जाव। जित तई दूजो जाज हाथ नई आव डूबण आळ जाज रा जातरी हायतोबा कर। पण ईनक री रगत यारी ई ही। बीर जीवण रो जाज डूबण आळो हो, पण ईनक र माय घबराहट को ही नी। जाज डूबणो बीर खातर आस किरण हो। जाज डूबणो यानी सरीर खतम हूवणो, अथवा मौत आया बीन आपर अथाग दुख सू तो छूटको मिलसी ई, पण अेक बात र कारण घणा सतोस हो कै अनी र मन री दोघडचित्या खतम हूजासी। अबार तई जिण डर री भटटी मे अनी जळती ही बा भटटी बुझ जासी। अबार तई अनी न जिको डर हो क ज ईनक आयग्यो, तो काई करसू ?--बा डर मिट जासी, अर अनी न फिलिप र साग जिको सुख मिलै है, उण रा बा निरम हुयन उपभोग कर सकसी।

खुद आपरा प्राण देयर भी ईनक अनी न सुखी बणावणी चावतो हा आ ई अब बीर जीवण री रळी ही।

ஃ

आखरी सनेसो

रात री वेळा ही । चू चकी जगती छाडर मरियम आपर बिछावणा मे पडी पडी मन सू बाता करती ही । नीद तो घणी आवती कोनी पण तो ई आराम करण खातर माच माथ हाड उरळा ता करणा पडता । जद बा आधी नीद मे अर आधी जागती ही, तो ईनक हेलो करयो । हेलो सुणीजग्यो, पण आधी नींद ही, इण कारण बोली कोनी । "माजी! दूजा हेलो फेर जोर सू करयो । बा चमकर उठी, अर दीय री बाट सावळ करी फेर ईनक र पसवाडली कुरमी बींर माच र नडी सिरकायर बठती बोली— क्यू नटिव अबार हेला किया करयो तबियत तो सावळ है ?"

ईनक कयो— 'माजी, माजी, थान अेक बात कवणी है । गुपताऊ बात कवणी है ।

माजी कान ऊभा कर दिया, आख्या पूरी खोल दी अर नस आगीन करली ।

"क्यू , सुणीजग्यो माजी हू थान अक भेद री बात कवणी चाऊ, पण माजी, थान सौगन खावणी पडसी । कवतो कवतो ईनक माजी कानी फुरग्यो ।

इसी काई बात है बटा ? थारी गुपताऊ बात दूजा न किया बता सकू ? तन म्हारो इत्तो ई भरोसो कोनी ? हू तन म्हारा बेटो समझू हू, तू मन थारी मा को समझ नी ? अर जे समझ है तो फेर म्हारो अभरोसो क्यू कर ? कयर मरियम ईनक र मू ड माथ हाथ फरया ।

ईनक कयो— माजी, थारी किरपा तो हू कदेई बीसरू कोनी, पण थारा समाव काई मोळो है, अर थार पेट म बात खट कोनी कमनी है इण कारण जे थे सौगन खावो तो फेर हू अेक बात कऊ ।

मरियम बोली—'वा रे नटिव ! त मन समझी कोनी । मन अरसी सू ऊपर बरस धाया है जे हू भोळी हूवती तो आज तई म्हारो घर लोक कदेई खाय जावता अर मन घर घर भीख मागणी पडती । तू मन जाजव गली ई समझ है काई ? भाळी कवो चाव गली कवो बात तो अेक री अेक है ।

माजी हू थान स्याणा-समझणा समझू पण म्हारी बात इसी है क सौगन दिरावणी जरूरी है । हू माफी मागू थे रीस मत करज्यो ।

"सौगन खावणी ई पड़सी ?" माजी पूछ्यो ।

"खाली सौगन ई नई, आपा र ग्रन्थ बाइबल री सौगन खावणी पड़सी ।" कयर ईनक सारो हुवण खातर पाछो सागी तर सोयग्यो ।

मरियम न रीस आयगी । वा आपरी कुरसी माथै कापती बोली—"तन सरम को आवै नी इसी बात करतै न ? आज तई बयासी बरसा री ऊमर तई तो मन कण ई बाइबल री सौगन दिराई कोनी, अर तू मन इसी सौगन दिराव ! वा रे नेटिव, तू आछो आदमी है । जबरो बेटो बण्यो तू म्हारो ।"

ईनक कैयो—"मा, त म्हार ऊपर इत्ती किरपा करी है, तो हू वऊ जिकी किरपा और कर दे । कर दे मा ! थारो टाबर हू । तू नई करसी, तो फेर कुण करसी ? और म्हारो है कुण ?"

डोकरी री छाती पसीजगी । वा दीवट हाथ मे लेयर, माय सू बाइबल री पोथी काढर लाई ।

ईनक कैयो, "मा, म्हारै मरया पैली म्हारी बात तीजै कान ई नई पूगणी चाईजै ।"

"हे भगवान !" कैयर मरियम आपरी दोनू आख्या मीचती बोली, 'इया काई काली बाला करण लागग्यो । हारी बेमारी तो सरीर रो धरम है । मिनख हुवै जिका इया कदेई घबराया कर ? काल हू डाक्टर न बुलाऊ । तू देख लिम्रे भलेई, अेक दिन म आराम लखावण लाग जासी ।"

छेवट ईनक र कैया सू मरियम लेन सौगन खायली । पण वा डर सू कांपण लागगी कै अब कुण जाणै ईनक इसी काई गुपत बात कसी जिण खातर बी इत्ती करडी सौगन खवाई ही ।

आपरी सिलेटी आख्या ईनक डोकरी रै मगळै डील माथै घुमाई फेर पूछ्यो—"मा, तू इण गाव रै ईनक आरडन नै जाणती ही काई ?"

डोकरी कुरसी सू ऊभी हुयगी—"अरे बेटा नेटिव, अब हू काई करू, थारो तो माथो खराब हुयग्यो । इसी बकयोडी बाता तो वार मईनां मे त अेक दिन ई करी कोनी । आज थार हुयग्यो काई ? ला, थारो हाथ भला, तन ताव घणो तेज तो को चढ्ग्यो नी ।"

कळाई छूयर बोली—"नई बेटा, डील तो घणो तातो कोनी, फेर आ काई बात ?"

ईनक जीभ रो कवळास घटायर बाल्यो —"म्हारो मायो ठीक है ताव तप रो काई घणो जोर कोनी । हू पूछू जिकी बात रो उथळो द मन ।'

पण त आ काई बात पूछी ? 'ईनक आरडन ? बा तो म्हार सामन जलम्या म्हारी आरया आग बडो हुयो । हाल ई वीरो फाटू म्हारी आम्या आग वो हा जिसा रो जिसो दीस । वीरो लावा कद ऊचो लिलाड, उठयोडो सीनो, गाळ फौलादी बूकिया—असगळा काल देख्या हुव ज्यू लखाव । कोई घणा बरस को आया नी वापड न । आपर मारग आवणो, आपर मारग जावणो । कई सू लडनोक भिडनो किसोक हुव बोजाणतो ई कोनी । आपर काम सू काम राखता । तन काई बताऊ ईसो चोखो छोरो हो क बीर गया सू गाव री छिब मन उडगी हुव ज्यू लखाव । बा बस आपरी धुन मे मस्त रवतो, और केई री परवा ई करतो कोनी । पण सगळा बीरो कायदो राखता । राख आपेई—काम रो करता साचा अर ईमानदार ।

पण अब बीरो माथो नीचो हुयग्यो अर कोई बीरी परवा को कर नी ।" धीर धीर अर दुखभरो बाणी म ईनक बोल्या । आज सू तीज दिन म्हारी मौत है । इण सू बमी हू जीऊ कोनी । माजी, चकरावो ना बो ईनक हू ई हू, ईनक आरडन ।

डाकरी र मूड लू अेकाअेक चीख निकळी जाण कोई मिरगी अथवा लोढ सू पली निकळी हुव । बा अभरोस सू बोली— तू आरडन ? मन तै साव अक्कल बायरी गिण राखी है ? कठ रयो ईनक आरडन, अर कठ रयो नटिव, तू । थारो आपस म मुकावलो ई कोनी । काई तो ओपती बात कवणी ही, थोडी तो जचती बात कवणी ही भलामाणस । तू तो बूनो हुव ज्यू लाग है, ईनक हाल टाबर है वापडो । बो तो थार सू जे घणो नई तो ई, कम-सू कम अेक फुट ऊचो है अक फुट समझ्यो ?'

'मा भगवान री मरजी आग मिनख री अेक ई चाल कोनी । भगवान ई म्हारी आ दसा करी है । बीन आ ई मजूर ही । उणी मन इण तर झुकायर डाकरो हुव ज्यू बणाय दियो । अेक्लपो रवण र कारण म्हारो डील टूटग्यो जोबन गळग्या, अर हू अकाळ म ई इण दसा म आयर पडग्यो । पण मा तू म्हारी बात मान, बा तू क्व जिको ईनक आरडन हू ई हू । दूज माइया साग हू क्देई क्देई थारी सराय म आया करतो । तू म्हारी बोली ओळख कोनी ? म्ह बी लुगाई सू ब्याव करो जिकी दो बार आपरो नाव पळटयो है । तू म्हारी बात समझगी हुवली—कळचढी आळ फिलिप रे सू ब्याव करयो है नो बी अनी सू पलपोत ब्याव म्ह ई करयो हो ।

डोकरी आपरी आंम्यां माय ताण दियो अर ईनक न ओळखण री कोसीस करी।

ईनक कयो—"कुरसी म्हार और नडी खाचल। माच सू अडायल। सुण म्हारी बात।"

ईनक आपरी जातरा री, जाज डूबण री, टापू माय अेकलप जीवण री, बठ सू निकळण री, पाछो गाव पूगण री फेर अनी अर आपरै टाबरा न देखण री सगळी बात मरियम लन न सुणाई। बा बीच-बीच मे आरया मीच मीचर लाबा सास लेवती रई अर बींरी आरया सू बराबर टळ-ळ आसुवां री भडी लाग्याडी रई। पण बीर मन मे इसी आई कै बा भटदणी उठ अर सगळ गाव मे इण बात रो ढढोळो फर दव क अरे जिको ईनक आरडन आज सू कित्ता ई बरसां पली धन कमावण न बिदेस गयो हो, अर जिण न लोक मरयोडो समभण लागग्या, अर जिक री बऊ अनी फिलिप रे साग दूजो ब्याव कर लियो, बो ईनक आरडन मर्यो कोनी। जीवतो बठ्या है जीवतो बैठ्यो है म्हारी सराय म आयर देखलो।

पण डोकरी री हीमत पडी कोनी। पलडी बात तो आ, कै जे आ खबर गाव म फल जाव, तो काई ठा ई रा नकीटा काई-काई निवळ—सायद अनी न पाछी इनक र घर म फिलिप आवण देवक नई आवण देव। फेर ईनक अर फिलिप म सायद भगडा हुव टाबर कठीन रवै? इण तर र भगडा री आसकायां सू डोकरी कापगी। इण र उपरायत बा घरम परायण लुगाई ही। बाइबल री सोगन खाया सू बधाण म बाघोडी ही। बाइबल री सोगन किया तोड? आ सोचर बा बार भाजी कोनी।

डोकरी सोगन तो खायली, पण इण गुपताऊ बात नै हजम करणी बींर बस री बात नई ही। बा सोचण लागी— अब काई करू काई नई करू! इत्ती बात जाणर भी चुप धड्यो रवणो तो ठीक कोनी।'

बा बोली—"नेटिव, अरे नई, ईनक, देख, म्हे थारी बात मानली, तो तू भी म्हारी अेक बात मान। बात मानसी?"

ईनक बोल्यो कोनी, पण बीर चैरै माय कठोरता रा भाव नई हा, इण सू मरियम नै आपरी बात कवण खातर हीमत बधी। बा बोली— अेकर सी तू थारै टाबरां रा मू डा तो देखल। थारै हकारो भरण री ढील है, फेर तो हू अबार लयर आय जाऊ, थारां टोनू बन भाई अठै ई ऊभा हा। बोल, ईनक बोल! पुरती कर।

टाबरां र नांव सू ईनक रो हिवडो ललचायग्यो। सोच्यो— ज अेक बार म्हार टाबरा सू मिल नू बासू बात करलू ना काळज म ठडी नीक पड जावै।

काई टा टाबर भी म्हारी म्रडोक म हुवला । आपर असली बाप न देख्या ब भी घणा घणा राजी हुवला ।—म्रा बाता मे दिमाग थोडा ग्रळूझग्यो इण कारण ईनक पाछो झटक्णो काई उथळो नई दियो ।"

चुप्पी न हकारो समभर मरियम कुरसी माथं सू उछळर ऊभी हुई, ग्रर बईर हुयगी । पाच सात पावडा गई परी । इत्त मे ईनक रो घ्यान पाछो बावड या । बी हेलो करयो— मा ग्रठ ग्रा । कर काई है तू । बुलावण रो कण कैयो तनै ? हू करणो चाऊ ज्यू तू मन करण दे, बीच मे पचायती ना कर । म्हँ थारो भरासा करन म्हार हिरद री बात थार ग्राग काढी है । तन भरोस जोगी समझर म्ह तन म्हारो भेद दियो है ।फेर तैं धरम ग्रन्थ री सौगन भी खाई है तो फर तू इया मन मरजी सू टाबरा न लावण खातर क्यिा टुरगी ?"

मरियम पाछी ग्रायर कुरसी माथ बठगी । बाली—' वेटा ई म कोई हरज तो कोनी । टाबर ग्रावता तो कित्ता राजी हुवता । इत्ता बरसा पछै ग्रापर बा पसू मिलणो कोई कम हरख री बात है ? पण खर थार जे जचो कोनी, ता नई सई हू बुलाऊ कानी । ग्रच्छ या ग्रव बोल तू ग्रौर काई कवणो चाव है ?"

ईनक कयो—' थारी कुरसी म्हार नडी सिरका ग्रर सावळ सोरी वठजा । हू कऊ जिक कानी घ्यान दे ग्रर बीन समझण री कोसीस कर ।"

'म्हारी सरधा दिन दिन खीण हुव है, ग्रर ग्रव-ई मरीर रो कोइ भरोसो कोनी । जित्त तई म्हारै सू बोलीज है, बित्त हू चाऊ क म्हारी बात तन सुणाऊ ग्रर थोडी भोळावण तन देवणी चाऊ ।' कयर ईनक ग्रेक लाबो सास लियो ।

मरियम कया—'थारी इ छा माफक काम हूसी । बोल बटा, तू मन दूजी ना समझ ।

ईनक कयो— 'जद तू ग्रनी न दख तो बीन कईज—ईनक ग्राखरी सास तई थार सू प्यार करतो । तन हिरद सू चावतो, ग्रासीस देवतो ग्रर थार सुख री कामना करतो । फरक इत्तो है क थ दोन ग्रापस मे मिल को सक्या नी । पण ईनक तन ग्रापर ग्रतस सू उणी तर चावतो जिण तर बा तन तद चावतो हो जद क बीर माथ र पसवाड थारो माथो पोढया करतो हो ।

"थारो सनेसो ग्रनी न जरूर पूचासू । मरियम बोली ।"

पण म्हार मरया पछ पली नई इण रा घ्यान राखे ।" ईनक समभायर कयो ।

'तू बेफिकर रह बेटा ।" मरियम भरोसो दिरायो ।

"अर म्हारी बेटी अनी न, जिकी न हू छोटी ही जद सू ई 'मेरी' कयर वतळावतो, आ बात कईज क म्हैं बीन फिलिप रै घर मे सोरी सुखी देखी। बीरो रूप रग, डील डोळ देखर म्हारो घणो जीव सोरो हुयो, अर हू बीन आसीस देवतो-देवतो मरयो हू। भगवान न म्हारी बेटी र सुख खातर हू अत सम तई प्राथना करतो रयो हू।" कयर ईनक थमग्यो।

"ठीक है।" मरियम बोली।

"अर म्हार बेट वाल्टर न भी कईज क आखरी दम तई म्हारी आत्मा बीर सुख, बीरी बढोतरी, बीरी चढोतरी री कामना करती रई है अर भगवान न इणी बात री प्राथना करती रई है। क्यू ठीक है ?" ईनक पूछ्या।

"हा ठीक है बेटा।' मरियम बोली।

ईनक फेर कैयो—"म्हारो जीवता थका रो चरो ता बांन याद कोनी, कारण, जद हू विदेसा गयो, तो ब टाबर अणसमभ हा, अर इत्ता बरस बीत्या पछै मन क्यिा याद राख सक्ता, पण फेर भी हू बारो बाप हू, ब म्हारा टाबर है। जे अबार नई तो आग जायर बार मन म इण बात रो धोखो सदई खातर रय सक क—अर म्हा तो म्हार बाप री सूरत ई देखी कोनी।—आ भी हू जाणू क म्हारी सूरत अब दरसण लायक कोनी, पण आपरो बाप सदेई पूजण–जोग हुव। मन देखर म्हारा टाबर पक्कायत राजी हुसी।"

'हा, ईनक। जद व तन दखण न आसी ता अनी बान थारी जवानी री सगळी बाता बतासी, हू भी बतासू क इण गाव म थारी जोड रा पद्या जवान नीठ निरावळ लाघता। कयर मरियम ईनक माथ बात रा असर दखण सारू बीर कानी भाकी।

ईनक विचाळ ई बात काटतो बोल्यो—"मा, टाबरा साग अनी न ना बुलाये। हू मा चाऊ कोनी क अनी म्हार सब नै देखै, म्हारै इण खीण सरीर री लास अर मू डो देख। जे बा देखसी, तो म्हारो मुडदो चरो सन्ेई बीर नणा सामो घूमतो रसी, अर बा बीं सुखी जीवण में दुख घोळण रो काम करसी। तू जाण हू तो अनी न सोरी-सुखी चाऊ। जे अनी अर म्हारा टाबर दोरा-दुखी हुव, तो कबर म भी म्हारी आत्मा न सायतो मिल कोनी अर वा ठेठ तई तडफती कळपती रवै।'

मरियम री आख्या मे आसू आयग्या। ठीक है बटा, थारी बात ठीक है। तू कव ज्यू ई हू करसू। हू सानू कै अबै थारो सनेसो पूरो हुयग्या हुवलो। थारो डोल निमळो है। बोलण म डील नैं ताण पड।"

इनक सास लेवण खातर थोडा थमग्यो । मरियम बीरी छाती र हाथ फरयो, माथो पपोळयो अर आपरी आख्या जिकी निरी ताळ सू आली ई ही, बीन सावळ पूछी ।

बो बोल्यो— मा तू रो ना । म्हारी छाती काची ना घाल । मिनख रो काळजा करडो हुव, बज्जर हुव पण लुगायां न रोवती, बसका फाटती अर करळावती देखर बज्जर ई मण मण जाव । मा तू रो ना मनै सायती सू मरण दे । पण हां अेक बात तन और कवणी है ।"

मरियम आपरी कुरसी नडी सरकाई अर बा इधरजी आल्यां सू, नवी बात सुणन सारू, ईनक र सामी भाकण लागगी ।

बो बोल्यो— 'म्हार परवार म अब अेक जणा बाकी है, फकत अेक ।"

मरियम चमकी । बी भट ईनक री छाती र हाथ लगायो नाड देखी, चरो देख्यो । बोली— 'ईनक, ईनक, इया थार काई हुयग्यो ? अबार तई तो तू सावळ सावळ बाता करतो हो । ह भगवान !"

ईनक कयो—' मा, तू घबरा ना । हाल तई म्हारो कोई बिगडयो कोनी । म्हारा हास हवास भी ठिकाण सर है । तू बिचाळै बोल ना पली म्हारी बात सुणल ।

मरियम चुप हुयगी, पण बीन ठा पडगी क ईनक रो माथो फैल हुयग्यो । बा बराबर डळकीज्योड नणां सू ईनक सामो जोवती रई ।

ईनक कयो-- म्ह ब्याव करयो लुगाई आई टाबर हुया ह हरखायो । ब सगळा कायम है पण बा मांय सू कोई म्हारै काम को आयो नी । हां, म्हारो अक टाबर और है बीर माथ म्हारी दीठी टक्योडी है बींसू मिलण खातर हिरदो उतावळ करै बींन चूमण खातर म्हारा होठ घडी घडी बार फडक ।"

डोकरी मन म तो जाणती ही क ईनक बक्योडी बाता कर, पण ऊपर सू आ बात बिना दरसाया बोली —

पण बटा ह तो बीन जाणू कोनी ।"

तू जाण मा, ईनक कयो । आछी तर जाण । त मन बींरी सरग जातरा रा समाचार भी सुणाया । बीन जाण है नी ? कयर ईनक अणदीठ मुळक मुळक्यो ।

"अरे बटा, तू आ काई बात कर ?" क्यर मरियम दो तीन उतावळा अर ऊंडा सास लिया ।

ईनक कयो—"पण अमार दुनिया न छोडर जद हू सरग म पूगसू, तो म्हारो लाडलो पूत म्हार सू गळबाथडी घालर भटण सारू अडीकतो त्यार लाधसी।" फर ईनक कागद री अेक पुडिया आपर खुज माय सू काडर कयो— आ अेक इसी चीज है जिण न म्हे इत्ता बरसा तई म्हारै मिनखपण बिच्च ई बमी साभर राखी है। मून टापू मे हू मिनख सू ढाण्डो बणग्यो, पण फेर भी इण पुडिया नै परमात्मा गमण दी कानी।" ईनक पुडिया न खालण खातर बठयो हुवण लाग्या।

मरियम कया—'ला, हू खाल दू, तू खेचळ ना कर।'

ईनक कया— 'मरियम आ हू तन दऊ कोनी। आ म्हैं इत्ता बरसा म मिनख जाय न दी कानी। पण नई अब म्हारा आखरी बगत है, आखर तो मनै इण सू बिछडनो पडसी, अर तन ई री भाळावण देवणी पडसी।"

मरियम बोली—"ईनक, अेक बात हू तन पली पूछलू, पछ सायद हू भूल जाऊ। आजकल म्हारो सुभाव भूलणा हुयग्यो। बात चेत को रव नी। बुढापो खाटो घणो मिनख री सुरला काढल।'

'पूछ ल।' ईनक धीरसीक कयो।

मरियम सकती-सकती बोली—"थारा समाचार हू अनी, फिलिप अर टाबरा न पूगता तो कर देसू, पण ब किया मानसी क तू ईनक है। ब किया मानसी क ईनक इत्ता बरसा तई जीवतो रयो, अर आपरी लुगाई-टाबरा न सनसो भी भेज्यो नई। ब आ भी किया मानसी कै तू अठ आयग्यो, अेक बरस ताणी म्हारी सराय म रयो, जद क थारो आपरो घर अठ है। अनी किया मानसी क ईनक आयो, अर बीसू मिल्यो कोनी। बेटा, मन डर इण बात रो है क मन कूडी नई घाल द।'

ईनक कयो— थारी बात रो उथळो सुण। इण पुडिया म म्हार नानडिय र केसा री एक लट है जिकी अठ सू परदेस खातर बईर हुवती बेळा अनी मन बीर लिलाड माय सू काटर दी ही। जद तू इण लट न अनी र हाथ मे म्हारी सैनाणी सारू देसी, तो बा आपेई समझ जासी क हू ईनक हू।" बो फेर बोल्यो—'पली तो म्हारो बिचार हो क हू इण केसलट न म्हारी कबर मे साग ले जासू, अठ कीर भरोसै छोडू ? पण अब म्हारो मतो पळटग्यो, अर तू ल, साम। सावळ जतन सू राखे, अर म्हार आख्या मीच्या पछ म्हार मर्‌या पछ, तू अनी र हाथ मे झलाय दये। इण सू अनी रो जीव सोरो हुसी।"

मरियम कयो—"तू फिकर ई ना कर। हू आप अनी कन जासू थार टाबरां कन जासू, बान सगळी बाता कसू। बान बुलायर अठ लासू। थारी फलायोडी केसलट भी देसू। अर तू चाव जिका सगळा काम अक दम आछी तर कर देसू। अैनी आप आछी लुगाई है। फिलिप चोखो आदमी है।"

अ बाता सुणर ईनक फेर करडी आंख सू मरियम र सगळ डील न देख्यो। बा डरती डरती बोली—'तू डर ना बटा, म्ह थार आग सोगन खाई है। हू थार आग फेर बण करू क तन जिका वाचा दियोडा है, वा में राई जित्तो फरक ई नई पडलो। आ, हू कऊ जिको, भाठ माथ लीक गिण ल।

••

जाज आयग्यो

'बटो आपरै बाप न कित्तो वालो लाग ! इत्ती उथळ पुथळ म भी ईनक आपर बेट र केस नै साभर रास्यो । वा र भगवान ! बाप रो हिरदो भी तै काई बणायो है । इण केस न साभर राखण री जरूरत काई ही, पण बेट र केस नै, बेट री मनाणी न, बाप किया गमाव, गमायोडी पोसाव कोनी ।" आ विचारा म गम्योडी मरियम लेन विस्या म डूब्योडी, ईनक रै पसवाडली कुरसी माथै आयर बठगी, कारण आज ईनक री तबियत डरावणी ही ।

मूडो हुयग्यो पीळो हळक, आख्या री पलका मोडी भपण लागगी । होठ सूकग्या । हिचकी आवण लागगी । बोलणा बद कर दिया । मरियम चिमच सू पाणी रो गुटको देव अथवा आगळी र सत लगायर माडाणी मूड म आगळी घालर जीभ र लगाव ।

छेवट आख्या टमकारणी बद हुयगी । सास खाथो आवण लागग्यो । डील धाण धुस ज्यू धुवण लागग्या । मरियम केई वार कवळ मधर सुर मे बनळायो, पण मरियम र सामो वो काइया भी घुमाय सक्यो कोनी । लारली घडी जाणर मरियम र मूक नणा मे भी फेर जळ आयग्यो ।

सझ्या री वगत हुई । मरियम न डर लागण लागग्यो—अब काई हुसी । पण डोकरी उमर म घणा ई रोभा देस्या हा । हीमत राखी । भगवान न प्रार्थना करी— हे परमात्मा, अब ओ थार घरे आवण आळो है, तू ई ई रो धणी है ।"

मरियम कन बठी-बठी बराबर ध्यान सू देखै । कदेई कदई डोकरी न भोटो आय जाव, अर वा चमकर पाछी नस ऊची कर । कुरसी सू उठ दो पावडा घूम, अर पाछी आयर बठ जाव ।

ईनक मीट मे पड यो हो ।

अचाणचक समदर सू अेक डरावणी गूज उठी अर उकळत पाणी ज्यू बी म खळभळी मचगी । परवताकार छोळा अळग सू भाग भागर आव अर कनार माथै आयर माथो फोड फोड रोव । इण उथळ-पुथळ अर टकराव सू इसो ऊ ताळो सबद

उठयो क गाव रा सगळा घर हिलग्या । रसोई म पड या बासरा खरणखरण करण लागग्या । वारया ग्रर वारणा रा किंवाड खडखड करण लागग्या । गाव रा सगळा वासी घबरायग्या । इसो डरावरणो द्रिस्य बा ग्राज पली क्देई नई देख्यो हो ।

ग्रचाणचक मौट टूटी, ग्रर बो उठयो, ग्रर चिरळायो, ऊ ताळो चिरळायो— जाज ! जाज !! डू बचग्यो !!! जाण वो डूबतो हुव, ग्रर उबारण खातर कोई जाज ग्राय पूग्यो हुव । ग्रापरी घाघी बोली म ग्रई बीरा पोछडी रा सबद हा ।

मरियम सतरी वतरी हुयर बीन साभण खातर त्यार हुई, जित्तॅ तो ईनक पाछो ग्रापर बिछावण माथै गुडग्यो, ग्रर ग्रबोल हुयग्यो ।

ईनक री सव जातरा इत्ती धूमधाम सू हुई ग्रर उणरी कबर माथै इत्तो धन खर्चीज्यो कै ग्रा वठ री दूजी कबरा सू न्यारी निरवाळी ई लागती ।

००